FAIZAN E MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

शाबान

- बदतरीन शख़्स कौन ? 6
- शबे बराअत में रसूलुल्लाह के मामूलात 23
- एहसान न जताएं 28
- इमामे आज़म और रिवायते ह़दीस 38
- माहे क़ुरआन 47

शबे बराअत के इन्तिहाई अहम नवाफ़िल

शबे बराअत की इ़बादत से मुतअ़ल्लिक़ दौरे अस्लाफ़ से ले कर अब तक सूफ़ियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہ عَلَیۡہِم का येह मामूल चला आ रहा है कि इस रात नमाज़े मग़रिब के बाद 6 रक्अ़तें दो दो कर के अदा की जाएं, हर रक्अ़त में एक मरतबा सूरए फ़ातिह़ा और छे बार सूरए इख़्लास पढ़ी जाए। हर दो रक्आ़त के बाद एक बार सूरए यासीन और दुआ़ए निस्फ़ शाबान पढ़ी जाए। पहली दो के ज़रीए़ अल्लाह पाक से उ़म्र में बरकत, दूसरी दो के ज़रीए़ रिज़्क़ में बरकत और तीसरी दो रक्आ़त के ज़रीए़ अच्छे ख़ातिमे का सुवाल किया जाए। अस्लाफ़े किराम رَحِمَہُمُ اللہ عَلَیۡہِم ने ज़िक्र फ़रमाया है कि जो इस त़रीक़े के मुत़ाबिक़ येह नवाफ़िल अदा करेगा उस की मज़्कूरा ह़ाजतें पूरी की जाएंगी। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह मामूलाते मशाइख़ में से है।[1]

दुआ़ए निस्फ़ शाबानुल मुअ़ज़्ज़म

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْهِ ط يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ ط ظَهْرُ اللَّاجِيْنَ ط وَجَارُ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ط وَاَمَانُ الْخَآئِفِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ شَقِيًّا اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا اَوْ مُقَتَّرًا عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ اللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ وَاقْتِتَارَ رِزْقِيْ ط وَاَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ سَعِيْدًا مَّرْزُوْقًا مُّوَفَّقًا لِّلْخَيْرَاتِ ط فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ ط عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ ط ﴿يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ (٣٩)﴾[2] اِلٰهِيْ بِالتَّجَلِّي الْاَعْظَمِ ط فِيْ لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ ط اَلَّتِيْ يُفْرَقُ فِيْهَا كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ وَّيُبْرَمُ ط اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ وَالْبَلْوَاءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ ط وَاَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ ط اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ ط وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ٥

(1) اتحاف السادۃ المتقین، 3/708 (2) پ13، الرعد:39

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र

सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER

HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING

MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

क़ुरआनो ह़दीस

फ़लाहो कामयाबी के क़ुरआनी उसूल 3
बदतरीन शख़्स कौन ? 6

फ़ैज़ाने सीरत

आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी का मुसीबत व परेशानी में अन्दाज़ 9
सख़ावते मुस्तफ़ा के असरात 11

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

क्या जूंएं मारने से वुज़ू टूट जाता है ? मअ़ दीगर सुवालात 13

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

अ़क़ीक़े की बकरी के पेट से बच्चा निकला तो अ़क़ीक़ा होगा ? मअ़ दीगर सुवालात 15

मज़ामीन

काम की बातें 17
मोमिन का नस्बुल ऐन 19
बदल डालो ज़िन्दगी को 21
शबे बराअत में रसूलुल्लाह के मामूलात 23
इस्लाम का निज़ामे ज़कात 26
एह़सान न जताइये 28
बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 30

ताजिरों के लिये

अह़कामे तिजारत 31

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

ह़ज़रते उ़क्काशा बिन मिह़सन رضی اللہ عنہ 33
वोह जिन के कन्धे पर रसूले करीम ने अपना दस्ते शफ़्क़त मारा 35
ह़ज़रते ज़ह़ाक बिन क़ैस और ह़ज़रते अबू जुहैफ़ा رضی اللہ عنہما 37
इमामे आज़म और रिवायते ह़दीस 38
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 40

क़ारिईन के सफ़ह़ात

नए लिखारी 42

बच्चों का ''माहनामा फ़ैज़ाने मदीना''

क़ुरआन की ज़ीनत / ह़ुरूफ़ मिलाइये 45
जिस्मे मुबारक की ख़ुश्बूएं 46
माहे क़ुरआन 47
बच्चों में तख़्लीक़ी सलाह़िय्यत पैदा करने के त़रीक़े 49

इस्लामी बहनों का ''माहनामा फ़ैज़ाने मदीना''

बेटियों के लिये तालीमी इदारे का इन्तिख़ाब 51
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 53

कुरआनी तालीमात

फ़लाहो कामयाबी के क़ुरआनी उसूल

गुज़श्ता माह के शुमारे में फ़लाह़ का माना और कुरआने करीम में बयान कर्दा फ़लाह़ का ज़रीआ़ बनने वाले उमूर बयान किये गए थे। उन में दर्जे ज़ैल उसूल शामिल थे :

1 तक़्वा 2 नेकी की दावत और बुराई से मुमानअ़त 3 ह़क़ ही को ह़क़ समझना और अल्लाह से डरना 4 शैत़ानी आमाल से बचना 5 अल्लाह की नेमतों का ज़िक्रो शुक्र करना 6 कुफ़्र के मुक़ाबिल साबित क़दमी और त़लबे मददे इलाही 7 नमाज़ और अ़मले सालेह़ (सिलए रह़मी व मकारिमे अख़्लाक़) 8 ईमान के साथ साथ नमाज़ों में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ अपनाना, बेहूदा बातों की जानिब इल्तिफ़ात न करना, ज़कात अदा करना, बदकारी से बचना, अमानत अदा करना, अ़हद पूरा करना और नमाज़ों की पाबन्दी करना 9 शर्मो ह़या और पर्दा व इफ़्फ़त 10 अल्लाह की ब कसरत याद।

ज़ैल में "फ़लाह़ो कामयाबी के मज़ीद 8 कुरआनी उसूल" पेश हैं :

1 नफ़्स की पाकीज़गी का एहतिमाम

नफ़्स का इन्सानी ज़िन्दगी में बड़ा अहम किरदार है। इस की इस्लाह़ हो गई तो बन्दा कामयाब है, येह बिगड़ा रहा तो नुक़्सान ही नुक़्सान है, कुरआने करीम ने फ़लाह़ो कामरानी का एक उसूल नफ़्स की पाकीज़गी इरशाद फ़रमाया है जैसा कि सूरतुल आअ़्ला में फ़रमाया :

﴿قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى(۱۴) وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى(۱۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी।[1]

यानी जिस ने ईमान ला कर, अल्लाह का नाम ले कर, तक्बीर कह कर, नमाज़ पढ़ कर नफ़्स की पाकीज़गी का एहतिमाम किया वोह फ़लाह़ व मुराद को पहुंचा। तफ़्सीराते अह़मदिय्या में है कि तज़क्का से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तक्बीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है।[2]

2 रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीमो तौक़ीर व इत़ाअ़त

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व ताज़ीम कामयाबी व कामरानी का वाज़ेह़ कुरआनी उसूल है, सूरतुल आराफ़ में है :

﴿فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۱۵۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो उस पर ईमान लाएं और उस की ताज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के साथ उतरा वोही बा मुराद हुए।[3]

3 रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर फ़ैसले पर सरे तस्लीम ख़म करना

फ़लाह़ो कामयाबी का एक बुन्यादी उसूल हर त़रह़ के मुआ़मले में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले

और हुक्म को फ़ौरन तस्लीम कर लेना है। चुनान्चे इरशादे रब्बानी है : ﴿اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ لِیَحْكُمَ بَیْنَهُمْ اَنْ یَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَاؕ-وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۵۱) وَ مَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ یَخْشَ اللّٰهَ وَ یَتَّقْهِ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ(۵۲)﴾
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमानों की बात तो येही है जब अल्लाह और रसूल की त़रफ़ बुलाए जाएं कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए तो अ़र्ज़ करें हम ने सुना और हुक्म माना और येही लोग मुराद को पहुंचे। और जो हुक्म माने अल्लाह और उस के रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो येही लोग कामयाब हैं।[4]

किसी इख़्तिलाफ़ में फ़ैसला फ़रमाना अगर्चे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात के साथ तअ़ल्लुक़ रखता है लेकिन आज भी अगर किसी मुआ़मले में ह़क़ व बात़िल का फ़ैसला रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात से किया जाए तो कामयाबी व फ़लाह़ इसी में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात के मुत़ाबिक़ फ़ैसला माना जाए और सरे तस्लीम ख़म कर दिया जाए।

4 अहले क़राबत और मसाकीन पर ख़र्च करना

ख़ूनी रिश्तों से एक फ़ित़री उल्फ़त और त़बीअ़त में उन का एह़सास होता है, लेकिन दुन्या का माल ऐसा नासूर है कि बाज़ लोगों को येह रिश्ते भी भुला देता है, रब्बे करीम ने क़ुरआने पाक में और रसूले अ़ज़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी तालीमात में सिलए रह़मी की बहुत ताकीद फ़रमाई, यहां तक कि क़ुरआने करीम ने अहले क़राबत पर ख़र्च करने को फ़लाह़ो कामयाबी का ज़रीआ़ इरशाद फ़रमाया है और साथ ही इस बात पर ताकीद फ़रमाई है कि "क्या उन्हों ने न देखा कि अल्लाह रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे" चुनान्चे अहले क़राबत के साथ सुलूक और एह़सान करो सदक़ा दे कर और मेहमान नवाज़ी कर के उन के ह़क़ दो, इसी त़रह़ ग़ुरबा व मसाकीन पर ख़र्च करना भी फ़लाह़ो कामरानी का उसूल है अलबत्ता येह भी ज़रूरी है कि इस में मक़्सूद अल्लाह करीम की रिज़ा हो।[5]

5 दुश्मनाने अल्लाह व रसूल से दूरी

किसी भी मुआ़शरे या लेवल का फ़र्द हो वोह येह एह़सास रखता है कि जो अपना है उस से मह़ब्बत व मुवाफ़क़त होगी और जो अपनों का दुश्मन है उस से कभी मुवाफ़क़त न होगी, अलबत्ता दीने इस्लाम जो कि इन्सानिय्यत का ह़क़ीक़ी मज़हब है, उस ने जामेअ़ उसूल दिया है कि जिस से भी मह़ब्बत होगी सिर्फ़ अल्लाह और रसूल के लिये और जिस की भी मुख़ालिफ़त होगी सिर्फ़ अल्लाह व रसूल के लिये, क़ुरआने करीम ने इस उसूले मह़ब्बत व मुख़ालिफ़त को बहुत वाज़ेह़ फ़रमाया और इसे फ़लाह़ो कामयाबी का ज़रीआ़ और इस पर आ़मिलीन को अल्लाह का गिरोह फ़रमाया चुनान्चे सूरतुल मुजादलह में है : ﴿لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْؕ-اُولٰٓىٕكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَ اَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُؕ-وَ یُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاؕ-رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُؕ-اُولٰٓىٕكَ حِزْبُ اللّٰهِؕ-اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۲۲)﴾
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल से मुख़ालिफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से उन की मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा रहें अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी येह अल्लाह की जमाअ़त है सुनता है अल्लाह ही की जमाअ़त कामयाब है।[6]

क़ुरआने करीम ने वाज़ेह़ कर दिया कि मोमिनीन से येह हो ही नहीं सकता और उन की येह शान ही नहीं और

ईमान इस को गवारा ही नहीं करता कि ख़ुदा और रसूल के दुश्मन से दोस्ती करें।[7]

6 बुख़्ल से परहेज़ और जज़्बए ईसार

रब्बुल इ़ज़्ज़त ने क़ुरआने करीम में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शानो अ़ज़्मत बयान फ़रमाई और उन के ऐसे आमाल का ज़िक्र फ़रमाया जो अल्लाह को मह़बूब और फ़लाह़ो कामयाबी का उसूल होने के साथ साथ इन्सानिय्यत व हमदर्दी, ह़ुस्ने मुआ़शरत और बाहमी दिलदारी का ज़रीअ़ए अव्वलीन हैं। इन औसाफ़ में "ख़ुद को ज़रूरत होने के बा वुजूद अपनी चीज़ें दूसरों के लिये ईसार करना और नफ़्स के लालच से बचा रहना" शामिल हैं जैसा कि सूरतुल ह़श्र में है : ﴿وَالَّذِیْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِیْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ یُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَیْهِمْ وَلَا یَجِدُوْنَ فِیْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّاۤ اُوْتُوْا وَیُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ﳴ وَمَنْ یُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने पहले से उस शहर और ईमान में घर बना लिया दोस्त रखते हैं उन्हें जो उन की त़रफ़ हिजरत कर के गए और अपने दिलों में कोई ह़ाजत नहीं पाते उस चीज़ की जो दिये गए और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोह़ताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।[8]

7 सीधी बात करना

फ़लाह़ व कामरानी के उसूलों में से एक येह भी है कि सच्ची और सीधी बात की जाए जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِیْدًا(۷۰) یُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَیَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِیْمًا(۷۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिये संवार देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी कामयाबी पाई।[9]

सीधी और सच्ची बात के कुछ मज़ीद फ़वाइद को सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने यूं बयान फ़रमाया कि "सच्ची और दुरुस्त ह़क़ व इन्साफ़ की सीधी बात कहो और अपनी ज़बान और कलाम की ह़िफ़ाज़त रखो, येह भलाइयों की अस्ल है ऐसा करोगे तो अल्लाह पाक तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिये संवार देगा, तुम्हें नेकियों की तौफ़ीक़ देगा, तुम्हारी ताअ़तें क़बूल फ़रमाएगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा।"[10]

8 सब्र और इस्तिक़ामत

दीन के मुआ़मले में आने वाली मुसीबतों, परेशानियों और बिल ख़ुसूस ईमान के मुक़ाबिल होने वाली मुख़ालिफ़त पर सब्र करना और ईमान पर डटे रहना बहुत सआ़दत की बात और फ़लाह़ व कामरानी का ज़रीआ़ है।[11] रब्बुल इ़ज़्ज़त ने ईमान पर इस्तिक़ामत और सब्र वालों के बारे में वाज़ेह़ एलान फ़रमाया कि

﴿اِنِّیْ جَزَیْتُهُمُ الْیَوْمَ بِمَا صَبَرُوْۤا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ(۱۱۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आज मैं ने उन के सब्र का उन्हें येह बदला दिया कि वोही कामयाब हैं।[12]

इस्तिक़ामत बड़ी चीज़ है, कहते हैं कि इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इस्तिक़ामत की अहमिय्यत को "وَاَنَّ اَحَبَّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللهِ اَدْوَمُهَا وَاِنْ قَلَّ" से बयान फ़रमाया। यानी बेशक अल्लाह के नज़्दीक मह़बूब तरीन अ़मल वोह है जो दाइमी हो अगर्चे थोड़ा हो।[13]

---

(1) پ30، الاعلیٰ:14، 15 (2) خزائن العرفان (3) پ9، الاعراف:157 (4) پ18، النور:51، 52 (5) پ21، الروم:37، 39 (6) پ28، المجادلۃ:22 (7) خزائن العرفان (8) پ28، الحشر:9 (9) پ22، الاحزاب:70، 71 (10) خزائن العرفان، (11) پ18، المؤمنون: 109 تا 111 (12) پ18، المؤمنون: 111 (13) بخاری، 4/237، حدیث:6464۔

बदतरीन शख़्स कौन ?

ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : اِنَّ شَرَّ النَّاسِ عِنْدَ اللّٰهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ تَرَكَهُ النَّاسُ اتِّقَاءَ شَرِّهٖ तर्जमा : बेशक लोगों में से अल्लाह के नज़्दीक बदतरीन मक़ाम का ह़ामिल क़ियामत के दिन वोह शख़्स होगा जिसे लोग उस के शर से बचने के लिये छोड़ दें।[1]

पस मन्ज़र येह फ़रमाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक त़वील ह़दीसे पाक का जुज़्व है जो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से मरवी है कि एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ाज़िरी की इजाज़त मांगी, फ़रमाया : इजाज़त दे दो येह उस क़बीले का बुरा आदमी है। फिर जब वोह (दाख़िल होने के बाद) बैठा तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश अख़्लाक़ी से मिले और उस से कुशादा रूई (यानी मुस्कुराते चेहरे) से गुफ़्तगू फ़रमाई। जब वोह शख़्स चला गया तो ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! जब आप ने उसे देखा तो उस के बारे में ऐसा ऐसा फ़रमाया फिर उस से ख़ुश अख़्लाक़ी और कुशादा रूई फ़रमाई ? तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम ने मुझे फ़ोह़श गो कब पाया ? बेशक लोगों में से अल्लाह के नज़्दीक बदतरीन मक़ाम का ह़ामिल क़ियामत के दिन वोह शख़्स होगा जिसे लोग उस के शर से बचने के लिये छोड़ दें।[2]

शर्हे ह़दीस इस ह़दीसे रसूल को इमाम बुख़ारी ने सह़ीह़ बुख़ारी में तीन मक़ामात पर, इमाम मुस्लिम ने सह़ीह़ मुस्लिम में, इमाम तिर्मिज़ी ने जामेअ़ तिर्मिज़ी और इमाम अबू दावूद ने सुनने अबी दावूद और इमाम अह़मद बिन ह़म्बल ने मुस्नद अह़मद बिन ह़म्बल में नक़्ल किया (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم)। इस रिवायते अ़ज़ीमा में कम अज़ कम 7 उमूर का बयान है : 1 अ़लानिय्या बुराई करने वाले शख़्स की ग़ीबत का बयान 2 बुरे शख़्स से किसी ह़िक्मत की वज्ह से ख़ुश अख़्लाक़ी और शाइस्तगी से मुलाक़ात करना 3 मुदाहनत (चापलूसी) और मुदारात (शाइस्तगी) में फ़र्क़ 4 ज़ेहनी इश्काल को बुज़ुर्गों की ख़िदमत में पेश करना 5 नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश अख़्लाक़ी का बयान 6 बद कलामी और सख़्त ज़बानी की मज़म्मत 7 बद कलामी की सूरतें।

तरतीब वार वज़ाह़त इन उमूर की तरतीब वार वज़ाह़त पढ़िये और ह़दीसे पाक की बरकतें पाइये।

1 अ़लानिय्या बुराई करने वाले शख़्स की ग़ीबत का बयान रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आने वाले मुलाक़ाती के बारे में फ़रमाया : “येह उस क़बीले का बुरा आदमी है।” हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात उस वक़्त फ़रमाई जब कि वोह अभी हुज़ूर के पास पहुंचा न था दरवाज़े पर ही था यानी उस के पसे पुश्त बयान फ़रमाया।[3] आने वाला अपने क़बीले का सरदार भी था, उस को ह़ाज़िरी की इजाज़त देने में येह ह़िक्मत थी कि (हुस्ने सुलूक की वज्ह से) उस की क़ौम

इस्लाम क़बूल कर ले।[4] अब उस की बुराई पीठ पीछे बयान करना ग़ीबत थी या नहीं ? और अगर ग़ीबत थी तो जाइज़ थी या مَعَاذَ الله ना जाइज़ ? इस बारे में शारेहीने ह़दीस ने मुख़्तलिफ़ तौजीहात की हैं चुनान्चे उ़म्दतुल क़ारी में है : इस ह़दीस से मालूम हुवा कि जो अपने फ़िस्क़ को ज़ाहिर करता हो उस की ग़ीबत करना जाइज़ है। येह ह़दीस काफ़िरों, फ़ासिक़ों, ज़ालिमों और अहले फ़साद की ग़ीबत के जवाज़ की दलील है।[5] इरशादुस्सारी में है : इस ह़दीस से साबित होता है जो किसी शख़्स के ह़ाल पर किसी शै के बारे में मुत्तलअ़ हो और उसे अन्देशा हो कि कोई उस शख़्स की ज़ाहिरी अच्छाई से धोका खा कर किसी बुराई में पड़ जाएगा तो उसे चाहिये कि वोह नसीह़त के इरादे से लोगों को बुराई से होशियार कर दे।[6] अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त में है : इस की मज़म्मत और इस का ह़ाल मुन्कशिफ़ करना इस लिये था ताकि लोग उस को पहचान लें, फ़रेब और धोका न खाएं लिहाज़ा येह ग़ीबत न हुई। बाज़ ने कहा है कि वोह अ़लानिय्या बुराई का इर्तिकाब करता था लिहाज़ा ऐसे शख़्स के बारे में मुत्तलअ़ करना ग़ीबत नहीं होती।[7] मिरआतुल मनाजीह़ में है : इस ह़दीस से मालूम हुवा कि किसी शख़्स का मशहूर ऐ़ब पसे पुश्त (पीठ पीछे) बयान करना ग़ीबत नहीं, नीज़ लोगों को उस के शर से बचाने के लिये उस के शर पर मुत्तलअ़ कर देना ग़ीबत नहीं।[8] ग़ीबत के बारे में तफ़्सीली मालूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **"ग़ीबत की तबाहकारियां"** (504 सफ़ह़ात) का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

2 बुरे शख़्स से किसी ह़िक्मत की वज्ह से ख़ुश अख़्लाक़ी और शाइस्तगी से मुलाक़ात करना नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक मिज़ाजे करीमाना था और अल्लाह पाक ने आप को हुस्ने अख़्लाक़ का मज़हर बनाया था इस लिये उस शख़्स से अख़्लाक़े करीमाना का सुलूक किया और शाइस्तगी से पेश आए ताकि उम्मती उस के शर और बद बख़्ती से बचें रहें और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस सरदार के साथ किसी क़िस्म का ना पसन्दीदा सुलूक न किया ताकि उम्मत उस त़रीक़े पर चल कर ऐसों के शर से बच सके।[9] मज़ीद येह भी मालूम हुवा कि किसी की इस्लाह़ के लिये उस को बुरा न कहना उस से अख़्लाक़ से पेश आना सुन्नते रसूल है। हर शख़्स की इस्लाह़ के त़रीक़े जुदागाना हैं, हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़कीमे मुत़लक़ हैं।[10] नेकी की दावत पेश करने वाले मुबल्लिग़ीन को ख़ुसूसी त़ौर पर इस बात का ख़याल रखना चाहिये।

3 मुदाहनत (चापलूसी) और मुदारात (शाइस्तगी) में फ़र्क़ इमाम क़ुरतुबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक में शरीरों के शर से बचने के लिये मुदारात का सुबूत है जो दीन में मुदाहनत तक न पहुंचे। इन दोनों में येह फ़र्क़ है कि मुदाहनत दीनी अह़काम को दुन्यावी फ़ाएदे के लिये तर्क करने का नाम है और येह जाइज़ नहीं है जैसे दुन्यावी फ़ाएदे के लिये ज़ालिम के ज़ुल्म, फ़ासिक़ के फ़िस्क़ को बयान न करना, जब कि मुदारात दीनी या दुन्यावी फ़ाएदे के लिये दुन्यावी भलाई करने को कहते हैं येह जाइज़ है बल्कि मुदारात कभी मुस्तह़ब भी होती है जैसे फ़ासिक़, ज़ालिम वग़ैरा से अच्छी त़रह़ पेश आना जब कि वोह अपने ज़ुल्म और फ़िस्क़ की ताईद न समझे। नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आने वाले के साथ अच्छा सुलूक किया और बात चीत करते वक़्त नर्मी की, ताहम उस की किसी क़िस्म की तारीफ़ नहीं की, ख़ुलासा येह कि जो आप ने उस शख़्स के ह़ाज़िर होने से पहले फ़रमाया था (यानी येह अपने क़बीले का बुरा आदमी है) वोह सच था और जो आप ने उस के साथ हुस्ने सुलूक किया वोह मुदारात था।[11] रसूलुल्लाह ने एक और जगह फ़रमाया : بُعِثْتُ بِمُدَارَاةِ النَّاس यानी मुझे लोगों से मुदारात के लिये भेजा गया है।[12] इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ऐ अ़ज़ीज़ ! मुदारात ख़ल्क़ व उल्फ़त व मुवानसत अहम उमूर से है, मगर जब तक न दीन में मुदाहनत न उस के लिये किसी गुनाहे शरई में इब्तिला हो।[13] सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़तावा आ़लमगीरी के ह़वाले से लिखते हैं : लोगों के साथ मुदारात से पेश आना, नर्म बातें करना, कुशादा रूई से कलाम करना

मुस्तहब है, मगर येह ज़रूर है कि मुदाहनत न पैदा हो। बद मज़हब से गुफ़्तगू करे तो इस त़रह़ न करे कि वोह समझे मेरे मज़हब को अच्छा समझने लगा, बुरा नहीं जानता है।[14] दीनी फ़वाइद के हुसूल के लिये दुन्यावी शख़्सिय्यात से मिलने वाले मुबल्लिग़ीन के लिये इन बातों का ख़याल रखना अज़ ह़द ज़रूरी है।

4 ज़ेहनी इश्काल को बुज़ुर्गों की ख़िदमत में पेश करना इस रिवायत से हमें येह भी सीखने को मिला कि जब किसी दीनी बुज़ुर्ग के क़ौल या फ़ेल के बारे में हमारे ज़ेहन में कोई इश्काल या एतिराज़ पैदा हो तो दो में से एक काम कर लेना चाहिये (1) हुस्ने ज़न का कोई पहलू तलाश कर लीजिये या (2) अदबो एह़तिराम के साथ उस दीनी शख़्सिय्यत से अपना इश्काल बयान कर के तशफ़्फ़ी कर लीजिये। आप ने देखा कि इस ह़दीसे मुबारक में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को इश्काल पैदा हुवा तो अपने सरताज صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कर के उस इश्काल को दूर करना चाहा। वोह इश्काल मुम्किना त़ौर पर येह था कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह अ़मल शरीफ़ ग़ीबत में तो दाख़िल नहीं है कि इस की ग़ैर मौजूदगी में इसे बुरा फ़रमाया और सामने अख़्लाक़ से गुफ़्तगू फ़रमाई।[15]

5 नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश अख़्लाक़ी का बयान रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को इन के इश्काल का जवाब देते हुए फ़रमाया : तुम ने मुझे फ़ोह़श गो कब पाया ? यानी हम दोस्त दुश्मन नेक व बद सब से अख़्लाक़ ही बरतते हैं किसी से कज ख़ुल्क़ी (बुरे अख़्लाक़) से पेश नहीं आते, तुम को हमारा तजरिबा है। बाज़ लोग ऐसे होते हैं कि लोग उन से नालां होते हैं मगर उस से डर कर उस का एह़तिराम करते हैं येह उन्हीं में से है अगर मैं उस के सामने वोह ही कहता जो उस के पसे पुश्त कहा था तो येह मेरे पास आना छोड़ देता और उस की इस्लाह़ न हो सकती।[16]

6 बद कलामी और सख़्त ज़बानी की मज़म्मत इस रिवायत के आख़िर में ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बद कलाम और सख़्त ज़बान शख़्स की मज़म्मत फ़रमाई कि बेशक लोगों में से अल्लाह के नज़्दीक बदतरीन मक़ाम का ह़ामिल क़ियामत के दिन वोह शख़्स होगा जिसे लोग उस के शर से बचने के लिये छोड़ दें (ताकि वोह उन्हें अपनी ज़बान से तक्लीफ़ न दे)। इसी मज़्मून की ह़दीसे पाक इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने भी इन अल्फ़ाज़ से रिवायत की, कि يَا عَائِشَةُ! اِنَّ مِنْ شِرَارِ النَّاسِ الَّذِيْنَ يُكْرَمُوْنَ اِتِّقَاءَ اَلْسِنَتِهِمْ यानी ऐ आ़इशा ! बेशक बदतरीन लोग वोह हैं जिन का एह़तिराम उन की ज़बानों से बचने के लिये किया जाए।[17] इस रिवायत में ऐसे लोगों को होश के नाख़ुन लेने चाहियें जो अपनी सख़्त कलामी से लोगों पर रोब जमा कर ख़ुश होते हैं।

7 बद कलामी की सूरतें बद कलामी, ज़बान दराज़ी और सख़्त ज़बानी जैसे त़न्ज़, तन्क़ीद, त़ाना, एह़सान जताना वग़ैरा की बेशुमार सूरतें हैं जिन का इह़ात़ा मुख़्तसर सफ़ह़ात में मुम्किन नहीं। ज़बान की आफ़तों पर पूरी पूरी किताबें लिखी गई हैं, सरे दस्त मक्तबतुल मदीना की इन किताबों को पढ़ना बहुत मुफ़ीद है : (1) ख़ामोश शहज़ादा (2) जन्नत की दो चाबियां (3) ज़बान की आफ़तें (4) गुफ़्तगू के आदाब (5) एक चुप सौ सुख।

अल्लाह पाक हमें हुस्ने अख़्लाक़ और नर्म कलामी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)بخاری،4/108،حدیث:6032(2)بخاری،4/108،حدیث:6032(3)مراٰۃ المناجیح،6/457(4)فتح الباری،11/384،تحت الحدیث:6032(5)عمدۃ القاری، 15/192،تحت الحدیث:6032(6)ارشاد الساری،13/64،تحت الحدیث:6032(7)اشعۃ اللمعات،4/76(8)مراٰۃ المناجیح،6/458(9)فتح الباری،11/385، تحت الحدیث:6032(10)دیکھئے مراٰۃ المناجیح،6/458(11)فتح الباری،11/385،تحت الحدیث:6032(12)شعب الایمان،6/351،حدیث 8475(13)فتاویٰ رضویہ،4/526،527(14)بہار شریعت،3/654(15)مراٰۃ المناجیح،6/458(16)دیکھئے مراٰۃ المناجیح،6/458(17)ابوداؤد،4/330،حدیث:4793۔

अन्दाज़ मेरे हुज़ूर के

आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुसीबत व परेशानी में अन्दाज़

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी में बेशुमार आज़्माइशें आईं, आप ने हर सूरत में अल्लाह पाक की रिज़ा पर राज़ी रहते हुए सब्रो शुक्र के वोह अन्दाज़ अपनाए जिन को पढ़ना और उन पर अ़मल करना मुश्किल ह़ालात में जीने का सलीक़ा सिखाता है, आइये ! अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वोह मुबारक अन्दाज़ पढ़ते हैं :

दुआ़ करना

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बड़ी से बड़ी मुसीबत व परेशानी में भी दुआ़ मांगी, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े दुआ़ की चन्द रिवायात मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब कोई मुश्किल पेश आती तो आप फ़रमाते :

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ۔ (1)

2 रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुसीबत के मौक़अ़ पर यूं दुआ़ करते :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ (2)

3 रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सख़्त से सख़्त आज़्माइश में भी दुआ़ फ़रमाई चुनान्चे जब ग़ज़्वए अह़ज़ाब हुवा और दुश्मन ने मुसलमानों को सख़्त मुह़ासरे में ले लिया तो अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही में यूं अ़र्ज़ की : اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ اَللّٰهُمَّ اهْزِمِ الْاَحْزَابَ اَللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ यानी ऐ किताब नाज़िल फ़रमाने, जल्द ह़िसाब लेने वाले ऐ अल्लाह ! लश्करों को शिकस्त दे, ऐ अल्लाह ! उन को शिकस्त दे दे और उन के क़दम उखाड़ दे ।(3)

सितमे कुफ़्फ़ार पर भी दुआ़एं देना

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर मुसीबत व परेशानी पर हमेशा अल्लाह करीम का शुक्र अदा फ़रमाते और दुआ़एं करते यहां तक कि अगर दुश्मन ज़ुल्म भी करता तो आप दुआ़एं देते जैसा कि नबुव्वत के दसवें साल क़बीलए सक़ीफ़ को दावते इस्लाम देने के लिये त़ाइफ़ तशरीफ़ ले गए मगर बजाए पैग़ामे ह़क़ क़बूल करने के उन्हों ने इस क़दर अज़िय्यत दी और औबाश लड़कों ने पथ्थर मारे कि जिस्मे अक़्दस ज़ख़्मी और नालैन मुबारक ख़ून से भर गए । इसी ह़ालत में वापस आते हुए रास्ते में पहाड़ों के फ़िरिश्ते ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ की : आप जो चाहें हुक्म दें अगर इजाज़त हो तो अख़्शबैन (त़ाइफ़ के दो मज़बूत़ और ऊंचे पहाड़ों) को उन पर उलट दूं ? इस के जवाब में आप ने फ़रमाया कि "मुझे उम्मीद है कि अल्लाह पाक उन की पुश्तों से ऐसे बन्दे पैदा करेगा जो सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत करेंगे और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएंगे ।"(4)

हैबतनाक आवाज़ पर इक़्दाम

किसी अचानक मुसीबत या परेशानी का सामना होने पर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم साबित क़दम रहते और ऐसे मौक़अ़ पर पीछे होने के बजाए सब से आगे रहते जैसा कि ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बयान करते हैं : एक रात अहले मदीना ने कोई ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनी लोग उस आवाज़ की त़रफ़ दौड़े तो उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आवाज़ वाली जगह की त़रफ़ से वापस आते हुए पाया क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से पहले उस आवाज़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए थे, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہ के घोड़े की नंगी पुश्त पर सुवार थे, गले में तलवार लटक रही थी और फ़रमा रहे थे : डरने की कोई बात नहीं है।[5]

बर वक़्त वसाइल का इस्तिमाल

मुसीबत में बर वक़्त वसाइल का इस्तिमाल करना भी प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक अन्दाज़ है जैसा कि ग़ज़्वए उहुद के मौक़अ़ पर जब कि बिखरे हुए मुसलमान अभी रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जम्अ़ भी नहीं हुए थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन क़मीआ जो क़ुरैश के बहादुरों में बहुत ही नामवर था। उस ने नागहां ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख लिया। एक दम बिजली की त़रह़ सफ़ों को चीरता हुवा आया और ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ातिलाना ह़म्ला कर दिया। ज़ालिम ने पूरी त़ाक़त से आप के चेहरए अनवर पर तलवार मारी जिस से ख़ोद की दो कड़ियां रुख़े अनवर में चुभ गईं। एक दूसरे काफ़िर ने आप के चेहरए अक़्दस पर ऐसा पथ्थर मारा कि आप के दो दन्दाने मुबारक को चोट पहुंची और नीचे का मुक़द्दस होंट ज़ख़्मी हो गया। इसी ह़ालत में उबय बिन ख़लफ़ मलऊ़न अपने घोड़े पर सुवार हो कर आप को शहीद कर देने के इरादे से आगे बढ़ा। ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने एक जां निसार सह़ाबी ह़ज़रते ह़ारिस बिन सुमामह رَضِیَ اللہُ عَنْہ से एक छोटा सा नेज़ा ले कर उबय बिन ख़लफ़ की गर्दन पर मारा जिस से वोह तिल्मिला गया। गर्दन पर बहुत मामूली ज़ख़्म आया और वोह भाग निकला।[6]

क़त्ल के दरपे दुश्मन के सामने अन्दाज़

मुसीबत के वक़्त अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त पर कामिल तवक्कुल भी प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका का ह़िस्सा है, ग़ज़्वए ग़त़फ़ान के मौक़अ़ पर दासूर आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक पर तलवार बुलन्द कर के बोला कि बताइये अब कौन है जो आप को मुझ से बचा ले? आप ने जवाब दिया कि "मेरा अल्लाह मुझ को बचा लेगा।" चुनान्चे जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام दम ज़दन में ज़मीन पर उतर पड़े और दासूर के सीने में एक ऐसा घूंसा मारा कि तलवार उस के हाथ से गिर पड़ी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन तलवार उठा ली और फ़रमाया कि बोल अब तुझ को मेरी तलवार से कौन बचाएगा? दासूर ने कांपते हुए भर्राई हुई आवाज़ में कहा : कोई नहीं। ह़ुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उस की बे कसी पर रह़म आ गया और आप ने उस का क़ुसूर मुआ़फ़ फ़रमा दिया। दासूर इस अख़्लाक़े नबुव्वत से बेह़द मुतास्सिर हुवा और कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया और अपनी क़ौम में आ कर इस्लाम की तब्लीग़ करने लगा।[7]

बुख़ार में रिज़ा मन्दी ब रिज़ाए इलाही

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और जब मैं ने आप को छुवा तो अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم! आप को तो बहुत तेज़ बुख़ार है! फ़रमाया : हां मुझे तुम्हारे दो मर्दों के बराबर बुख़ार होता है। मैं ने अ़र्ज़ की : क्या येह इस लिये कि आप के लिये दुगना सवाब होता है? इरशाद फ़रमाया : हां! जब भी किसी मुसलमान को बीमारी (या) कोई और तक्लीफ़ लाह़िक़ हो तो वोह उस के तमाम गुनाह झाड़ देती है जैसे दरख़्त अपने पत्ते झाड़ देता है।[8]

लख़्ते जिगर के विसाल पर सब्र और अन्दाज़

रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने शहज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللہُ عَنْہ के इन्तिक़ाल पर इस त़रह़ रिज़ाए इलाही पर रिज़ामन्दी का इज़्हार फ़रमाया : आंख अश्कबार और दिल ग़मज़दा है लेकिन हम ने ज़बान से वोही कहना है जिस से हमारा मालिक राज़ी हो। ऐ इब्राहीम! हम तेरी जुदाई से यक़ीनन ग़मगीन हैं।[9]

येह चन्द रिवायात व वाक़िआ़त ज़िक्र किये गए वगरना रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा में मसाइबो आलाम के सेंकड़ों मवाक़ेअ़ आए लेकिन आप हमेशा अपने रब्बुल इ़ज़्ज़त की रिज़ा पर राज़ी रहे। अल्लाह करीम हमें भी ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)ترمذی، 5/311، حدیث:3535 (2)بخاری، 4/202، حدیث:6345 (3)بخاری، 2/290، حدیث:2933 (4)دیکھئے: مشکاۃ المصابیح، 2/371، حدیث: 5848 وغیرہ (5)الشفا، 1/116 (6)مدارج النبوت، 2/127، 129 ملتقطاً (7)شرح الزرقانی علی المواہب، 2/381 ملخصًا (8)بخاری، 4/11، حدیث:5667 (9)بخاری، 1/441، حدیث:1303۔

सख़ावते मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के असरात

हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने तब्लीगे़ ह़क़ और इशाअ़ते इस्लाम के लिये मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ अपनाए, उन्ही में से आप का अन्दाजे़ सख़ावत भी है जिस के ज़रीए हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने लोगों को ह़क़ के क़रीब किया। सय्यिदुल अस्ख़िया صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم मख़्लूके़ इलाही में सब से बडे़ दरिया दिल और सख़ी हैं। सख़ावत करने में आप बरसने वाले बादल और मूसलाधार बारिश की त़रह हैं। पास न होता तो उधार ले कर भी दूसरों पर ख़र्च करते और अपनी ज़रूरिय्यात के बा वुजूद दूसरों को दे देते। हर आने वाले के लिये आप का दस्तरख़्वान खुला होता। मेहमान की तकरीम करते, भूकों को खाना खिलाते, बे लिबास को लिबास फ़राहम करते, बे चैन की बे चैनी दूर करते, परेशान ह़ाल का मदावा करते, आफ़ात में घिरे अफ़राद की दाद रसी फ़रमाते, मिस्कीन के साथ भलाई, यतीम की कफ़ालत और कमज़ोर की मदद फ़रमाते। आप صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم जूदो करम और सख़ावत की अ़लामत हैं। अ़रब के बडे़ बडे़ नामवर सख़ियों "ह़ातिम त़ाई, हिरम बिन सिनान, ख़ालिद बिन उ़बैदुल्लाह और कअ़ब बिन उमामा अयादी" का भी आप से कोई मुवाज़ना नहीं क्यूंकि आप जो भी देते वोह बिग़ैर किसी दुन्यावी मफ़ाद के सिर्फ़ अल्लाह के लिये देते। येही वज्ह है कि फिर आप की सख़ावत के बडे़ शानदार समरात व नताइज देखने में आए। चन्द वाक़िआ़त और उन के नताइज हम यहां ज़िक्र कर रहे हैं। उन्हें पढ़िये और ईमान ताज़ा कीजिये :

ना पसन्दीदगी मह़बूबिय्यत में बदल गई

ग़ज़्वए हुनैन के मौक़अ़ पर रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने सफ़्वान बिन उमय्या को तीन सौ बकरियां अ़त़ा फ़रमाईं। इस सख़ावते मुस्त़फ़ा का असर येह हुवा कि येही सफ़्वान बिन उमय्या जो पहले रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم को पसन्द न करते थे, सख़ावते मुस्त़फ़ा से मुतास्सिर हो कर कहने लगे : रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم हुनैन के दिन मुझे माल अ़त़ा फ़रमाने लगे ह़ालांकि आप मेरी नज़र में मबग़ूज़ तरीन थे। आप صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم मुझे अ़त़ा फ़रमाते रहे यहां तक कि मेरी नज़र में मह़बूब तरीन हो गए।[1]

क़ौम को दावते ईमान

एक शख़्स को दो पहाड़ों के दरमियान भरी हुई बकरियों का रेवड़ अ़त़ा फ़रमाया तो उस ने अपनी क़ौम में जा कर कहा : ऐ मेरी क़ौम ! तुम इस्लाम ले आओ ! अल्लाह की क़सम ! मुह़म्मद ऐसी सख़ावत फ़रमाते हैं कि फ़क़्र (यानी मोह़ताजी) का ख़ौफ़ नहीं रहता।[2]

ह़ातिम त़ाई की बेटी सिफ़्फ़ाना और बेटे अ़दी का क़बूले इस्लाम

रबीउ़ल आख़िर 9 हिजरी में पैग़म्बरे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने ह़ज़रते मौला अ़ली رضی اللہ عنہ की मातह़ती में 150 सुवारों का लश्कर क़बीलए "त़य" की जानिब भेजा। उस ह़म्ले में क़बीले के ऊंट, बकरियां और क़ैदी हाथ आए। उन क़ैदियों में मश्हूर सख़ी ह़ातिम त़ाई की बेटी सिफ़्फ़ाना भी थीं जब कि उन के भाई अ़दी बिन ह़ातिम जो कि क़बीले के सरदार थे, मुल्के शाम फ़रार हो गए थे। ह़ज़रते सिफ़्फ़ाना رضی اللہ عنہا ने हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم की बारगाह में अ़र्ज़ की : मैं ह़ातिम त़ाई की बेटी हूं और मेरे वालिद कई औसाफे़ ह़मीदा के मालिक थे लिहाज़ा आप मुझे आज़ाद कर दें और वापस अपने क़बीले जाने दें। येह सुन कर आप صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने सह़ाबए किराम से फ़रमाया कि उस लड़की को आज़ाद कर दो क्यूंकि उस का बाप अच्छे अख़्लाक़ को पसन्द करता था। फिर आप صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने उन्हें आज़ाद भी कर दिया और सुवारी के लिये भी इन्तिज़ामात करवा दिये।[3]

इस हुस्ने अख़्लाक़ व सख़ावत का उन पर ऐसा शानदार असर पड़ा कि उन्हों ने वापस जा कर अपने भाई

अ़दी से कहा कि मैं ने ह़ज़रते मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा सख़ी व करीम किसी को नहीं देखा और मेरी राय येह है कि तुम उन से जा कर मिलो। औसाफ़ो कमालाते मुस्त़फ़ा को सुन कर अ़दी बिन ह़ातिम बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें खजूर की छाल से भरा हुवा तकिया दिया और ख़ुद ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा हो गए। येह अख़्लाक़ देख कर ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ईमान ले आए और उन की बहन सिफ़्फ़ाना बिन्ते ह़ातिम رَضِیَ اللہُ عَنْہَا भी ईमान ले आईं।[4]

क़बीलए हवाज़िन के रईसे आज़म मालिक बिन औ़फ़ का क़बूले इस्लाम

शव्वाल 8 हिजरी में ग़ज़्वए हुनैन पेश आया, और अल्लाह पाक ने मुसलमानों को बहुत बड़ी फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई।[5] माले ग़नीमत में 24 हज़ार ऊंट, 40 हज़ार से ज़ाइद बकरियां, कई मन चांदी, और छे हज़ार क़ैदी थे।[6] जंग के बाद क़बीलए हवाज़िन का एक वफ़्द अपने क़ैदियों की रिहाई के लिये आया तो आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हारा सरदार मालिक बिन औ़फ़ कहां है ? उन्हों ने बताया कि वोह "सक़ीफ़" के साथ त़ाइफ़ में है। आप ने फ़रमाया कि तुम लोग मालिक बिन औ़फ़ को ख़बर कर दो कि अगर वोह मुसलमान हो कर मेरे पास आ जाए तो मैं उस का सारा माल उस को वापस दे दूंगा। इस के इ़लावा उस को एक सौ ऊंट और भी दूंगा।

मालिक बिन औ़फ़ को जब येह ख़बर मिली तो वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर मुसलमान हो गए। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का तमाम माल उन को वापस कर दिया और वादे के मुत़ाबिक़ एक सौ ऊंट मज़ीद भी इनायत फ़रमाए। ह़ज़रते मालिक बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस ख़ुल्के़ अ़ज़ीम से बेह़द मुतास्सिर हुए और आप की मदह़ में एक क़सीदा पढ़ा जिस के दो अश्आ़र का तर्जमा येह है : "तमाम इन्सानों में ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मिस्ल न मैं ने देखा न सुना, जो सब से ज़ियादा वादे को पूरा करने वाले और सब से ज़ियादा माले कसीर अ़त़ा फ़रमाने वाले हैं। और जब तुम चाहो उन से पूछ लो वोह कल आइन्दा की ख़बर तुम को बता देंगे।"[7]

क़ारिईने किराम ! पैग़म्बरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने सख़ावत के क्या कहने ! आप की इन सख़ावतों में बड़ी ह़िक्मतें पोशीदा थीं। इन के बहुत मुस्बत फ़वाइद सामने आए हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत की बदौलत इस्लाम का दाइरा भी वसीअ़ हुवा जिस की वाज़ेह़ मिसाल गुज़री कि जिस शख़्स को बकरियों का रेवड़ दिया गया उस ने अपनी क़ौम से कहा कि "दाइरए इस्लाम में आ जाओ, हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस क़दर अ़त़ा फ़रमाते हैं कि फ़क़्र का कोई अन्देशा ही बाक़ी नहीं रहता।"

एक दूसरे को तोह़फ़े तह़ाइफ़ के तबादले से दिलों की नफ़रतें दूर होती हैं। बाहमी मह़ब्बत बढ़ती है और मुआ़शरा अम्न का गहवारा बन जाता है हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत की सूरत में येह बात अ़मली त़ौर पर नज़र आती है।

ख़ुलासा येह है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ा से इर्तिकाज़े दौलत का ख़ातिमा हुवा, अन्दरूनी और बैरूनी त़ौर पर रियासत मज़बूत़ हुई, लोग जूक़ दर जूक़ दाइरए इस्लाम में दाख़िल होने लगे, मक्का फ़त्ह़ हो गया, इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त हुई, मुआ़शरा एक उम्मत बन गया, मुसलमान मआ़शी और मुआ़शरती त़ौर पर ख़ुशह़ाल हो गए, दौलत किसी एक त़बके़ में नहीं रही बल्कि अमीर ग़रीब, मुतवस्सित़ ग़रज़ हर त़रह़ के त़बके़ के अफ़राद उस से इस्तिफ़ादा करने लगे, सफे़द पोशों की इ़ज़्ज़ते नफ़्स मह़फ़ूज़ रही। अल ग़रज़ "हुज़ूर की सिफ़ते नर्म दिली व रह़म दिली का इज़्हार, बुख़्ल व कन्जूसी की रोक थाम व मज़म्मत, ग़रीबों मिस्कीनों, यतीमों की ख़ैर ख़्वाही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की तरग़ीब, नेकी और भलाई के कामों में तआ़वुन की तरग़ीब, घर वालों की ख़र्च करने के ह़वाले से तरबिय्यत, सह़ाबा की ख़र्च करने के ह़वाले से तरबिय्यत, एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा बेदार करना और उसे तक़्विय्यत देना, तह़क़ीरे मुस्लिम का ख़ातिमा करना, माली ग़ुरूर व तकब्बुर का ख़ातिमा करना।" येह तमाम समरात आप की शाने सख़ा की बरकत से ज़ाहिर हुए। आज के दौर में भी उम्मते मुस्लिमा को चाहिये कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत से अ़त़ा व सख़ावत के आला तरीन पहलू को अपनाए। दौलत जम्अ़ न रखे बल्कि उसे बिग़ैर किसी ग़रज़ और दिखावे के रिज़ाए इलाही की ख़ातिर ख़ल्के़ ख़ुदा पर ख़र्च करे।

---

(1) مسلم، ص973، حدیث:6021(2) مسلم، ص973، حدیث:6022(3) دلائل النبوۃ للبیہقی، 5/341، مفہوماً(4) المستطرف، 1/292(5) مدارج النبوت، قسم سوم، باب ہشتم، 2/308(6) السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ص504- سیرتِ مصطفٰی، ص463
(7) السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ص505، سیرتِ مصطفٰی، ص668-

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

1 ज़ख़्मी या बीमार जानवर के लिये दुआ़ करना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई जानवर ज़ख़्मी या बीमार हो जाए तो क्या उस के लिये दुआ़ कर सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! बिल्कुल दुआ़ कर सकते हैं। किसी ने अगर मुर्ग़ी पाली हुई है, उस से अन्डे ह़ासिल करता है, यूं ही किसी ने बकरी पाली हुई है उस का दूध इस्तिमाल करता है लेकिन बाद में कुछ ऐसा हो गया कि मुर्ग़ी ने अन्डे देना बन्द कर दिये या बकरी ने दूध देना बन्द कर दिया तो अल्लाह पाक से दुआ़ मांगी जा सकती है कि "या अल्लाह ! इस जानवर को दोबारा से नफ़्अ़ बख़्श बना दे।" इसी त़रह़ अगर क़ुरबानी का जानवर लिया और वोह बीमार पड़ गया, मालिक भी परेशान है कि क़ुरबानी के दिन क़रीब हैं और येह बीमार हो गया है, अब क्या करूं ? इस के लिये भी दुआ़ की जा सकती है कि "या अल्लाह ! इस जानवर को शिफ़ा दे ताकि मैं इसे तेरी राह में क़ुरबान करूं।" बहर ह़ाल जानवरों की शिफ़ा के लिये भी अल्लाह पाक से दुआ़ की जा सकती है।

2 क्या बाल ख़ून चूसते हैं ?

सुवाल : सर और दाढ़ी के बाल सुन्नत के मुत़ाबिक़ रखने चाहियें लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि बाल ख़ून चूसते हैं उन्हें क्या जवाब दिया जाए ?

जवाब : दाढ़ी भी लाज़िमी रखनी है अगर्चे बाल ख़ून चूसते हों, देखा जाए तो सारे बदन पर बाल मौजूद हैं वोह भी ख़ून चूसते हैं, उन्हें उन की ख़ूराक अल्लाह पाक दे रहा है जिस त़रह़ अल्लाह पाक बदन की ग़िज़ा बदन को दे रहा है। इन्सानी बदन के रूएं और बाल इन्सान का कितना ख़ून चूस लेंगे ? जितना चूसते हैं उस से ज़ियादा बनता भी तो है। अल्लाह पाक ने सब चीज़ों की ग़िज़ा मुअ़य्यन की है। हम लोग मुंह से थूकते हैं, नाक से भी कुछ न कुछ निकलता है, आंख से भी आंसू निकलते हैं, हम लोग पानी पीते हैं तो येह सब कुछ बनता है। अगर कोई येह कहे कि मेरे बदन का पानी बाहर नहीं निकलना चाहिये तो क्या उस को समझदार कहेंगे ? तो ऐसा शख़्स अपने बदन से निकलने वाले पसीने को कैसे रोकेगा। इस के इ़लावा थूकना किस त़रह़ बन्द करेगा ? नाक का क्या करेगा ? बाज़ औक़ात जिस्मे इन्सानी से पानी निकलना बहुत फ़ाएदे मन्द होता है। बालों के भी बहुत फ़वाइद हैं, बालों के ज़रीए़ अल्लाह पाक ने इन्सान को ज़ीनत दी है इस से ह़ुस्ने इन्सानी है। ज़रा सोचें कि अब्रू, पल्कें और जिस्म के सब बाल उतर जाएं तो कितना अ़जीब लगेगा लिहाज़ा इस त़रह़ के वस्वसों को पालना नहीं चाहिये।

3 क्या जूएं मारने से वुज़ू टूट जाता है ?

सुवाल : क्या जूएं मारने से वुज़ू टूट जाता है ?

जवाब : जूएं मारने, यूंही बकरा ज़ब्ह़ करने से

वुज़ू नहीं टूटता। نَعُوْذُ بِاللّٰه अगर कोई बा वुज़ू किसी बन्दे को क़त्ल कर दे तो उस से भी वुज़ू नहीं टूटेगा। किसी को मारने पीटने से वुज़ू नहीं टूटता।

4 ग़ैर मुस्लिम को ईंटें बेचना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई ग़ैर मुस्लिम मुसलमान से ईंटें ख़रीद कर अपनी इबादत गाह तामीर करे, तो क्या उस का गुनाह मुसलमान को मिलेगा ?

जवाब : ग़ैर मुस्लिम को ईंटें बेचना जाइज़ है, वोह ख़रीद कर जहां भी लगाए उस का गुनाह मुसलमान पर नहीं, हां अगर गुनाह की निय्यत से दी तो उस के अलग अह़काम हैं।

5 नमाज़ की दावत देने का अन्दाज़ कैसा होना चाहिये ?

सुवाल : 72 नेक आमाल रिसाले का तीसरा सुवाल है कि "क्या आज आप ने घर, बाज़ार, मार्किट वग़ैरा जहां भी थे वहां नमाज़ों के औक़ात में नमाज़ पढ़ने से क़ब्ल नमाज़ की दावत दी ?" सुवाल येह है कि मार्किट में नमाज़ की दावत देते हुए हमें कैसा अन्दाज़ अपनाना चाहिये ?

जवाब : नमाज़ की दावत देते हुए मह़ब्बत भरा अन्दाज़ होना चाहिये, नमाज़ की दावत फ़ोन पर भी दी जा सकती है, मस्जिद की त़रफ़ जाते हुए भी किसी को नमाज़ पढ़ने के लिये साथ चलने का कहा जा सकता है। यूंही अगर कोई शख़्स नमाज़ में नज़र नहीं आता तो उसे दावत देते हुए समझाने की कोशिश भी की जा सकती है। मज़ीद येह कि नमाज़ के तअ़ल्लुक़ से रिवायात सुनाई जा सकती हैं और "**फ़ैज़ाने नमाज़**" किताब से दर्स भी दिया जा सकता है। बहरह़ाल मुख़्तलिफ़ सूरतें अपनाई जा सकती हैं, नमाज़ की दावत देते रहना चाहिये اِنْ شَآءَ اللّٰه नमाज़ियों की तादाद में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा।

6 तबर्रुकात का इस्तिख़ारा करना कैसा ?

सुवाल : ऐसा मालूम हुवा है कि आप तबर्रुकात के तअ़ल्लुक़ से इस्तिख़ारा फ़रमाते हैं कि आया येह तबर्रुक दुरुस्त है या नहीं ? क्या येह बात दुरुस्त है ?

जवाब : मैं ने आज तक तबर्रुकात से मुतअ़ल्लिक़ कोई इस्तिख़ारा नहीं किया और न इस्तिख़ारे के ज़रीए़ तबर्रुकात फ़ाइनल किये जा सकते हैं। तबर्रुकात के शरई तक़ाज़े और हैं।

7 शफ़्क़त से छोटे बच्चों के हाथ पांव चूमना कैसा ?

सुवाल : बच्चों के पांव चूमने से क्या बच्चे ना फ़रमान होते हैं ?

जवाब : लोग शफ़्क़त से छोटे बच्चों के हाथ पांव चूमते हैं, इस में ह़रज नहीं। इस से न बच्चों की ताज़ीम मक़्सूद होती है और न बच्चों को पता होता है कि मेरे हाथ पांव क्यूं चूमते हैं ? बस बच्चे अच्छे और प्यारे लगते हैं तो इस लिये चूमते हैं। हाथ पांव चूमने से बच्चों का ना फ़रमान हो जाना येह मैं ने पहली बार सुना है। और येह बात समझ में भी नहीं आती, ऐसा न उ़लमा से सुना है न किसी किताब में पढ़ा है।

8 जन्नत का मौसिम कैसा होगा ?

सुवाल : जिस त़रह़ दुन्या की ज़िन्दगी में 12 महीने पाए जाते हैं तो क्या आख़िरत यानी जन्नत की ज़िन्दगी में भी येह महीने पाए जाएंगे ?

जवाब : आख़िरत में दुन्या जैसा निज़ाम नहीं है। दुन्या में तो गर्मियां, सर्दियां, महीने, हफ़्ते, दिन और रात मौजूद हैं, वहां येह नहीं होंगे। जन्नत में हर वक़्त मौसिमे बहार होगा, दुन्या में जिस त़रह़ सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त समां होता है वैसा समां जन्नत में होगा। वहां मक्खी, मच्छर, अन्धेरा, बीमारी, सदमा और बदबू वग़ैरा जैसी कोई चीज़ नहीं होगी। वहां तो सिर्फ़ ख़ुशियां ही ख़ुशियां होंगी। जन्नती को जिस चीज़ की ख़्वाहिश होगी वोह उसे मिल जाएगी। जन्नत में सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार होगा। इतना ही नहीं जन्नत में जन्नती शख़्स को जो सब से बड़ी नेमत मिलेगी वोह अल्लाह पाक का दीदार होगा।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 अ़क़ीक़े की बकरी के पेट से बच्चा निकला तो अ़क़ीक़ा होगा या नहीं ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मुझे अपनी बेटी का अ़क़ीक़ा करना था तो कल मन्डी से एक बकरी लाया, ज़ब्ह़ करने के बाद पता चला कि वोह ह़ामिला थी और उस के पेट से मरा हुवा बच्चा निकला। मालूम येह करना है कि इस सूरत में बेटी का अ़क़ीक़ा हो गया या नहीं ? नीज़ पेट से जो मरा हुवा बच्चा निकला वोह ह़लाल है या ह़राम ? इस की भी वज़ाह़त कर दें।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

दरयाफ़्त की गई सूरत में आप की बेटी का अ़क़ीक़ा हो गया क्यूंकि अ़क़ीक़ा दुरुस्त होने के लिये जानवर का ह़ामिला न होना शर्त़ नहीं बल्कि इस के लिये उन्हें तमाम शराइत़ का लिह़ाज़ ज़रूरी है कि जो क़ुरबानी के जानवर में हैं और ह़ामिला जानवर की क़ुरबानी जाइज़ है अलबत्ता ह़ामिला होना मालूम हो तो बेहतर येह है कि इस के इलावा दूसरा जानवर क़ुरबान किया जाए तो येही तफ़्सील अ़क़ीक़े में जारी होगी।

नीज़ जानवर ज़ब्ह़ करने से पेट में मौजूद बच्चा ह़लाल नहीं हो जाता बल्कि ज़िन्दा पैदा होने की सूरत में उसे अलग से ज़ब्ह़ करना होगा और अगर मरा हुवा पैदा हुवा तो वोह मुर्दार है, सूरते मस्ऊला में भी चूंकि बच्चा मरा हुवा पैदा हुवा लिहाज़ा वोह मुर्दार है उसे खाना ह़लाल नहीं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

2 दह दर दह से कम पानी में बे वुज़ू शख़्स का हाथ पड़ने से पानी का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि पिछले दिनों हमारे हां काफ़ी बारिश हुई तो हम ने घर में रखे हुए फ़ारिग़ ड्रम में बारिश का पानी भर लिया कि वुज़ू वग़ैरा में इस्तिमाल करेंगे और फिर हम इस्तिमाल भी करते रहे, एक दिन जब मैं फ़ज्र की नमाज़ के बाद वापस आया तो बच्चों की अम्मी ने पूछा कि आप ने वुज़ू किस पानी से किया ? मैं ने बताया कि ड्रम के पानी से, तो उन्हों ने बताया कि रात

को मैं ने ग़लती से बे वुज़ू हाथ उस में धो लिये थे, आप सोए हुए थे तो उस वक़्त नहीं बताया, येही ज़ेहन था कि जब फ़ज्र में उठेंगे तो बता दूंगी। इस सूरत में मेरी फ़ज्र की नमाज़ हुई या नहीं ?

नोट : ड्रम दह दर दह से छोटा है और बच्चों की वालिदा अगर्चे आ़म औ़रतों की त़रह़ शरई मुआ़मलात में कोताही कर जाती हैं मगर उन की इस बात पर मेरा भी ग़ालिब गुमान येह है कि वोह दुरुस्त कह रही है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

दह दर दह से कम पानी में बे वुज़ू शख़्स का बे धुला हाथ पड़ जाए तो वोह पानी मुस्तामल हो जाता है और मुस्तामल पानी सह़ीह़ मज़्हब के मुत़ाबिक़ ख़ुद अगर्चे पाक है मगर उस में नजासते ह़ुक्मिया दूर करने की सलाह़िय्यत नहीं होती, इस लिये उस से वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं होता। नीज़ पानी वुज़ू व ग़ुस्ल के क़ाबिल है या नहीं ? इस ख़बर का तअ़ल्लुक़ दीनी उमूर से है और इस में एक आ़दिल शख़्स की ख़बर मोतबर होती है अगर्चे औ़रत हो और अगर ख़बर देने वाला फ़ासिक़ या मस्तूरुल ह़ाल हो यानी आ़दिल है या नहीं, उस का इ़ल्म न हो तो इस सूरत में उस की बात पर तह़र्री करने का हुक्म है, अगर दिल इस बात पर जमे कि वोह दुरुस्त कह रहा हो तो उस की बात पर अ़मल किया जाएगा।

इस तफ़्सील के मुत़ाबिक़ सूरते मसऊला में भी चूंकि आप का ग़ालिब गुमान येह है कि वोह दुरुस्त कह रही है तो उस की ख़बर मोतबर है और आप नमाज़ दोबारा पढ़ेंगे क्यूंकि इस ख़बर के मुत़ाबिक़ आप ने जो वुज़ू किया वोह मुस्तामल पानी से किया और मुस्तामल पानी से वुज़ू नहीं होता।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 क़ादए अख़ीरा में तशह्हुद के बाद नमाज़ी भूल कर खड़ा हो गया तो ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि क़ादए अख़ीरा में तशह्हुद पढ़ने के बाद अगर कोई नमाज़ी भूल कर खड़ा हो गया और पांचवीं रक्अ़त के सज्दे से पहले पहले याद आने पर बैठ गया तो पूछना येह है कि उसे सज्दए सह्व करना होगा या नहीं ? और अगर सज्दए सह्व करना होगा तो इस से पहले तशह्हुद भी दोबारा पढ़ना होगा या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़ादए अख़ीरा में भूल कर खड़े हो जाने की सूरत में याद आने पर जब वापस लौटा तो सलाम में ताख़ीर की वज्ह से सज्दए सह्व वाजिब है। अलबत्ता खड़े हो जाने की वज्ह से तशह्हुद बात़िल नहीं होता कि दोबारा पढ़ना ज़रूरी हो, लिहाज़ा क़ादे में बैठते ही एक जानिब सलाम फेर कर सज्दे में चला जाए, दोबारा तशह्हुद न पढ़े।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीह़ सिर्फ़ एक एक दफ़्आ़ पढ़ी तो नमाज़ का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मुझे एक काम से कहीं जाना था, वक़्त कम था और गाड़ी निकल जाने का ख़ौफ़ था, तो नमाज़ अदा करते हुए रुकूअ़ व सुजूद में तीन मरतबा तस्बीह़ पढ़ने के बजाए एक एक मरतबा पढ़ी, क्या इस सूरत में मेरी नमाज़ अदा हो गई ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

रुकूअ़ व सुजूद में तीन बार तस्बीह़ पढ़ना सुन्नत है, बिला ज़रूरत तीन बार से कम तस्बीह़ पढ़ना या बिल्कुल न पढ़ना, मकरूहे तन्ज़ीही है, ऐसी सूरत में नमाज़ का दोबारा पढ़ना मुस्तह़ब यानी बेहतर होता है, अलबत्ता किसी उ़ज़्र मसलन वक़्त कम होने या गाड़ी चले जाने के ख़ौफ़ से तीन बार से कम तस्बीह़ पढ़ी, तो मकरूहे तन्ज़ीही भी नहीं, लिहाज़ा पूछी गई सूरत में आप की नमाज़ बिला कराहत अदा हो गई।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

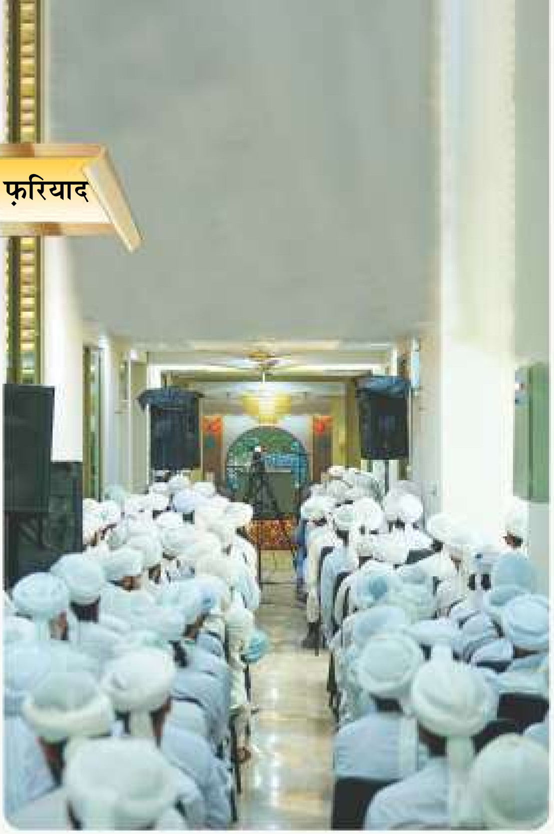

काम की बातें

इरशादे रब्बे करीम है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَ مَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (۱۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों से हंसें अ़जब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से दूर नहीं कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में त़ाना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं।[1]

अगर किसी शख़्स में फ़क़्र, मोहताजी और ग़रीबी के आसार नज़र आएं तो उन की बिना पर उस का मज़ाक़ न उड़ाया जाए, हो सकता है कि जिस का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है वोह मज़ाक़ उड़ाने वाले के मुक़ाबले में दीन दारी के लिहाज़ से कहीं बेहतर हो।[2]

मज़ाक़ उड़ाने का शरई हुक्म बयान करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इहानत और तह़क़ीर के लिये ज़बान या इशारात, या किसी और त़रीक़े से मुसलमान का मज़ाक़ उड़ाना ह़राम व गुनाह है क्यूंकि इस से एक मुसलमान की तह़क़ीर और उस की ईज़ा रसानी होती है और किसी मुसलमान की तह़क़ीर करना और दुख देना सख़्त ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।[3]

कसीर अह़ादीस में इस फ़ेल से मुमानअ़त और इस की शदीद मज़म्मत और शनाअ़त बयान की गई है, जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने भाई से न झगड़ा करो, न उस का मज़ाक़ उड़ाओ, न उस से कोई ऐसा वादा करो जिस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करो।[4]

नोट : आयते मुबारका में औ़रतों का जुदागाना ज़िक्र इस लिये किया गया कि औ़रतों में एक दूसरे का मज़ाक़ उड़ाने और अपने आप को बड़ा जानने की आ़दत बहुत ज़ियादा होती है, नीज़ आयते मुबारका का येह मत़लब नहीं है कि औ़रतें किसी सूरत आपस में हंसी मज़ाक़ नहीं कर सकतीं बल्कि चन्द शराइत़ के साथ उन का आपस में हंसी मज़ाक़ करना जाइज़ है, जैसा कि आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (औ़रतों की एक दूसरे से) जाइज़ हंसी जिस में न फ़ोह़श हो न ईज़ाए मुस्लिम, न बड़ों की बे अदबी, न छोटों से बद लिह़ाज़ी, न वक़्त व मह़ल के नज़र से बे मौक़अ़, न उस की कसरत अपनी हमसर औ़रतों से जाइज़ है।[5]

(और आपस में त़ाना न करो) यानी क़ौल या इशारे के ज़रीए़ एक दूसरे पर ऐ़ब न लगाओ क्यूंकि मोमिन एक जान की त़रह़ है जब किसी दूसरे मोमिन पर ऐ़ब लगाया जाएगा तो गोया अपने पर ही ऐ़ब लगाया जाएगा।[6]

(और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो) बुरे नाम रखने से क्या मुराद है इस के बारे में मुफ़स्सिरीन के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, उन में से तीन क़ौल दर्जे ज़ैल हैं :

1 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : एक दूसरे के बुरे नाम रखने से मुराद येह है कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो तो उसे तौबा के बाद उस बुराई से आ़र दिलाई जाए। यहां आयत में इस चीज़ से मन्अ़ किया गया है।

ह़दीसे पाक में इस अ़मल की वई़द भी बयान की गई है, जैसा कि ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने भाई को उस के किसी गुनाह पर शर्मिन्दा किया तो वोह शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक कि वोह उस गुनाह का इर्तिकाब न कर ले। शारेह़ीने ह़दीस ने फ़रमाया कि इस से मुराद ऐसे गुनाह पर किसी को शर्मिन्दा करना है जिस से बन्दा ताइब हो चुका हो।(7)

2 बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया : बुरे नाम रखने से मुराद किसी मुसलमान को कुत्ता, या गधा, या सुअर कहना है।

3 बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उस को नागवार हो (लेकिन तारीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों ममनूअ़ नहीं, जैसे कि ह़ज़रते अबू बक्र رضی اللہ عنہ का लक़ब अ़तीक़ और ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ का फ़ारूक़ और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رضی اللہ عنہ का ज़ुन्नूरैन और ह़ज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ की कुन्यत अबू तुराब और ह़ज़रते ख़ालिद رضی اللہ عنہ का लक़ब सैफ़ुल्लाह था) और जो अल्क़ाब गोया कि नाम बन गए और अल्क़ाब वाले को नागवार नहीं वोह अल्क़ाब भी ममनूअ़ नहीं, जैसे आमश और आरज वग़ैरा।(8)

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۚ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ (۱۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है और ऐ़ब न ढूंडो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।(9)

(ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो) आयत के इस ह़िस्से में अल्लाह पाक ने अपने मोमिन बन्दों को बहुत ज़ियादा गुमान करने से मन्अ़ फ़रमाया क्यूंकि बाज़ गुमान ऐसे हैं जो मह़ज़ गुनाह हैं लिहाज़ा एह़तियात़ का तक़ाज़ा येह है कि गुमान की कसरत से बचा जाए।(10)

अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : यहां आयत में गुमान की कसरत को मुब्हम रखा गया ताकि मुसलमान हर गुमान के बारे में मोह़तात़ हो जाए और ग़ौरो फ़िक्र करे यहां तक कि उसे मालूम हो जाए कि उस गुमान का तअ़ल्लुक़ किस सूरत से है क्यूंकि बाज़ गुमान वाजिब हैं, बाज़ ह़राम हैं और बाज़ मुबाह़ हैं।(11)

इस आयत में दूसरा हुक्म येह दिया गया कि मुसलमानों की ऐ़ब जूई न करो और उन के पोशीदा ह़ाल की जुस्तजू में न रहो जिसे अल्लाह पाक ने अपनी सत्तारी से छुपाया है।

इस आयत से मालूम हुवा कि मुसलमानों के पोशीदा ऐ़ब तलाश करना और उन्हें बयान करना मम्नूअ़ है, यहां इसी से मुतअ़ल्लिक़ एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे ह़ज़रते अबू बरज़ा अस्लमी رضی اللہ عنہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : ऐ उन लोगों के गिरौह, जो ज़बान से ईमान लाए और ईमान उन के दिलों में दाख़िल नहीं हुवा, मुसलमानों की ग़ीबत न करो और उन की छुपी हुई बातों की टटोल न करो, इस लिये कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की छुपी हुई चीज़ की टटोल करेगा, अल्लाह पाक उस की पोशीदा चीज़ की टटोल करे (यानी उसे ज़ाहिर कर दे) गा और जिस की अल्लाह पाक टटोल करेगा (यानी ऐ़ब ज़ाहिर करेगा) उस को रुस्वा कर देगा, अगर्चे वोह अपने मकान के अन्दर हो।(12)

(और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या) इस आयत में तीसरा हुक्म येह दिया गया कि एक दूसरे की ग़ीबत न करो, क्या तुम में कोई येह पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, यक़ीनन येह तुम्हें ना पसन्द होगा, तो फिर मुसलमान भाई की ग़ीबत भी तुम्हें गवारा न होनी चाहिये क्यूंकि उस को पीठ पीछे बुरा कहना उस के मरने के बाद उस का गोश्त खाने की मिस्ल है क्यूंकि जिस त़रह़ किसी का गोश्त काटने से उस को ईज़ा होती है उसी त़रह़ उस की बदगोई करने से उसे क़ल्बी तक्लीफ़ होती है और दर ह़क़ीक़त इ़ज़्ज़तो आबरू गाश्त से ज़ियादा प्यारी है।(13)

---

(1) پ26، الحجرات:11 (2) صراط الجنان، 9/425 (3) جہنم کے خطرات، ص173 (4) ترمذی، 3/400، حدیث:2002- صراط الجنان، 9/427 (5) فتاویٰ رضویہ، 23/194- صراط الجنان، 9/426 (6) روح المعانی، الحجرات، تحت الآیۃ: 11، 13/424- صراط الجنان، 9/430 (7) ترمذی، 4/226، 227، حدیث:2513 (8) خازن، الحجرات، تحت الآیۃ:11، 4/170- صراط الجنان، 9/431 (9) پ26، الحجرات:12 (10) تفسیر ابن کثیر، الحجرات، تحت الآیۃ:12، 7/352 (11) بیضاوی، الحجرات، تحت الآیۃ:12، 5/218 ملخصاً- صراط الجنان، 9/433 (12) ابو داؤد، 4/354، حدیث:4880- صراط الجنان، 9/437 (13) صراط الجنان، 9/439۔

मोमिन का नस्बुल ऐन

अ़ज़ीम मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मुफ़्ती सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी رحمۃ اللہ علیہ एक ह़ाज़िक़ मुफ़्ती, दूर अन्देश आ़लिम और साह़िबे ह़िक्मत हस्ती थे, आप के मक़ालात आप के इन औसाफ़े जलीला के बय्यन सुबूत हैं, आप ने दीने इस्लाम की अहमिय्यत व अ़ज़्मत पर एक बड़ा ही पुर मग़्ज़ कॉलम तह़रीर फ़रमाया है, कॉलम की अहमिय्यत के पेशे नज़र माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के क़ारिईन के लिये शामिले इशाअ़त किया जाता है :

दुन्या के दिल फ़रेब मनाज़िर और ह़ैरत अंगेज़ त़लस्सुम अरबाबे अ़क़्ल व ख़ुर्द को ह़ैरान व सरगर्दां कर डालते हैं। गुज़रगाहे आ़लम से गुज़रने वाला हर नफ़्स जब चमनिस्ताने आ़लम की ताज़गी व त़रावत और अ़जाइब व ग़राइब को देखता है, तो वोह सरशार हो कर उसी के इ़श्क़ में गिरिफ़्तार हो जाता है। यहां की हर चीज़ उस पर जादू से ज़ियादा असर करती है। उम्मीद और ह़िर्स के दाम (जाल) में फंस कर अपने आप को बे क़ाबू बना देता है। उस का वरूद (आना) दुन्या में किसी त़रह़ हुवा हो ख़्वाह बादशाह के घर उस की विलादत मयस्सर आई हो और वोह ख़ानदाने सल्त़नत का चश्मो चराग़ बना हो, या गदाए बे नवा (फ़क़ीर) के झोंपड़े में पैदा हुवा हो, और इब्तिदा ही से भूक और दूसरी तकालीफ़ में मुब्तला रहा हो। मसाइबो आलाम के हुजूम में उस ने उ़म्र का बड़ा ह़िस्सा गुज़ारा हो, मगर दुन्या का इ़श्क़ इस दर्जा मुसल्लत़ होता है कि वोह उन तमाम तकालीफ़ को गवारा करता है मगर दुन्या को तर्क करना गवारा नहीं करता। मौत का लफ़्ज़ भी उसे शाक़ गुज़रता है। येह देख कर भी कि दुन्या में लाखों ही ताजो तख़्त के मालिक हुए, मगर अन्जाम सब का दुन्या की तमाम नेमतों को छोड़ कर ग़ुर्बत व तन्हाई का सफ़र हुवा। दौलते दुन्या की बे वफ़ाई उस को दुन्या की त़रफ़ से सैर और अफ़्सुर्दा ख़ात़िर नहीं करती और तमाम उ़म्र उसी की तह़सील व जुस्तजू में सर्फ़ कर डालता है और अपनी ज़िन्दगी के क़ाबिले क़द्र सरमाया को उस ग़द्दार (दुन्या) पर क़ुरबान कर जाता है। दुन्या के साथ इ़श्क़ो वारफ़्तगी का येह आ़लम होता है कि वोह अपने आप को और अपने मक़्सदे ह़यात को उ़म्र भर फ़रामोश किये रहता है और कभी उस त़रफ़ नज़र नहीं डालता कि वोह ख़ुद किस काम की चीज़ है और उस की ज़िन्दगी का मक़्सद क्या है। दुन्या की कितनी ह़क़ीक़त है और उस के साथ कितना तअ़ल्लुक़ रखना मुनासिब है। इसी ना पाएदार दुन्या की मह़ब्बत में अन्धा हो कर अ़ज़ीज़ों क़रीबों से जंग करता है। अबनाए जिन्स (हम क़बीला अफ़राद) के ख़ून बहाता है। ज़मीन के एक क़त़्आ़ (टुकड़े) पर लड़ मरता है। फ़ौजकशी होती है। ज़मीन इन्सानी ख़ूनों से गुले रंग (सुर्ख़) बना दी जाती है जो उस ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने की निय्यत से शुजाअ़त व बसालत (बहादुरी) के जौहर दिखाता है और ख़ुद उसी का पैवन्दे ख़ाक हो जाता है। वोह

ज़मीन उस को अपने अन्दर इज़्ज़तो आबरू के साथ जगह भी नहीं देती मगर येह मफ़्तून उस का शैदा ही बना रहता है। इन्सान पर येह बड़ी मुसीबत है और जो आ़क़िल दुन्या में आता है उस की ज़ेबो ज़ीनत देख कर जान बाख़्ता हो जाता है। इस मोहलिका से नजात दिलाने वाला कौन है।

ऐ इस्लाम

ऐ इस्लाम ! ऐ सच्चे दीन ! ऐ मुबारक रहनुमा ! जानो दिल तुझ पर क़ुरबान !!! तू ने ह़क़ीक़त को बे नक़ाब किया तूने बात़िल के पर्दे चाक किये। तू ने ग़लती के क़ारे अ़मीक़ (गहरे गढ़े) से निकाला तू ने मदहोशी व बे अ़क़्ली के क़ैदो बन्द से रिहाई दी तू ने इश्क़े दुन्या की क़ैदे गिरां से आज़ाद किया तूने आंखों में बीनाई दी तूने बताया :

﴿وَ مَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ(۲۰)﴾

दुन्या की ज़िन्दगानी धोके की मताअ़ है।(1)

तू ने इन्सान के सामने उस की ज़िन्दगी का मक़्सद पेश किया ﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ(۵۶)﴾ कि जिन्नो इन्सान की ख़िल्क़त इबादत के लिये है।(2)

दुन्या की तमाम क़ौमें ज़मीन के लिये लड़ लड़ कर ज़मीन पर फ़िदा हो गईं मगर जिस की आंख में तेरा सुर्मा लगा था, वोह दुन्या का मुब्तला न हुवा। ह़ुस्ने बात़िल उस को फ़रेब न दे सका। झूटी चमक दमक के शोबदे उस पर असर न कर सके। तू ने ज़ोह्दो तक़्वा के दर्स दिये। तू ने तर्क व इन्क़िताअ़ के सबक़ पढ़ाए। तू ने रियाज़त व मुजाहदे के आईन सिखाए। तू ने इस्लाहे़ नफ़्स के उसूल क़ाइम किये। तू ने फ़ज़ाइलो रज़ाइल के ह़ुदूद को मुम्ताज़ किया। तू ने ह़क़ व बात़िल में तफ़रिक़े (फ़र्क़ बयान) किये जो तेरी मजलिस के ह़ाज़िर बाश हुए दुन्या उन्हें फ़रेब न दे सकी। तेरे शैदाइयों का नस्बुल ऐ़न (मक़्सद) रिज़ाए इलाही रहा। जो हर ख़ूबी का मम्बअ़ और हर सआ़दत का सर चश्मा है।

एक मुसलमान जब किसी मक़्सद के लिये जुम्बिश करता है, जिस किसी काम के लिये उठता है, जब किसी अ़मल के लिये सरगर्मी करता है, जब किसी जिद्दो जहद का आग़ाज़ करने से पहले देख लेता है कि उस की सई व अ़मल से उस का मक़्सदे अस्ली रिज़ाए इलाही मुयस्सर आने की उम्मीद है ? अगर ऐसा हो तो ब ह़ैसिय्यत एक फ़रमां बरदार इस्लाम के उस काम को निहायत ज़ौक़ से अन्जाम देता है और अपने अ़मल की बरकत से दुन्या को सलाहो़ फ़लाह़ से मामूर कर देता है और जो अ़मल रिज़ाए इलाही का सबब न हो सके मुसलमान को ब ह़ैसिय्यते दीन उस से कोई अ़लाक़ा नहीं होता। इस लिये तमाम अहले दुन्या की ज़िन्दगी बेकार हो सकती है, राएगां जा सकती है, मारिज़े हलाकत व फ़ना में रहती है, लेकिन एक शैदाए इस्लाम की ज़िन्दगी का लम्ह़ा लम्ह़ा कार आमद और मूजिबे बरकत है। वोह खाता और पीता है, पहनता ओढ़ता है, चलता फिरता है, सल्त़नत व ह़ुकूमत करता है, क़ल्ए़ बनाता है, जंग के लिये सफ़ आराई करता है या गोशए तन्हाई में ख़ामोश बैठता है, भूका प्यासा रहता है, ग़रज़ जो कुछ करता है रिज़ाए इलाही के लिये। उस की हर सई का, उस की हर जुम्बिश व ह़रकत का मक़्सद वोह दाइमी और ला ज़वाल है जिस के दामन तक फ़ना की गर्दो कदूरत नहीं पहुंच सकती। शरीअ़ते त़ाहिरा ने उस के लिये वोह मज़बूत़ उसूल क़ाइम कर दिये हैं जिन पर कारबन्द रहने से वोह मुहालिक व ख़त़रात का शिकार नहीं हो सकता। حُبُّ الدُّنْیَا رَاْسُ كُلِّ خَطِیْئَةٍ दुन्या की मह़ब्बत हर बदी का सर है।(3)

येह वोह ज़र्रीं उसूल है जिस का मलहूज़ रहना हर ख़ुदा शनास व त़ालिबे रिज़ाए ह़क़ का अव्वलीन फ़र्ज़ और जिस की मुराआ़त इन्सान को गुनाहों और बदकारियों से नजात देती है जो काम करे ह़ुब्बे दुन्या से न हो, रिज़ाए मौला के लिये हो, हरगिज़ वोह काम फ़ासिद न होगा, ख़राब न होगा। मोमिन के लिये येह ज़रूर है कि वोह अपना नस्बुल ऐ़न रिज़ाए इलाही मुक़र्रर करे और फ़ाक़िदुल बसरी वल बसीरत (आंख की बीनाई और दिल की बसीरत से बे बहरा) ग़ैरों की त़रह़ शैदाए दुन्या न हो जाए।(4)

---

(1) پ27، الحدید:20 (2) پ27، الذّٰریٰت:56 (3) کنزالعمال، 2/79، حدیث:6111
(4) السواد الاعظم، ربیع الآخر 1349ھ، ص2 تا 4، مقالاتِ صدرالافاضل، ص305۔

बदल डालो ज़िन्दगी को (Change your life)

एक मुसलमान को अपनी ज़िन्दगी को बेहतर से बेहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिये । कुछ बातों को अपनाना इस ह़वाले से बहुत मुफ़ीद है। येह इस मौज़ूअ़ पर तीसरा मज़्मून है जो 12 टिप्स पर मुश्तमिल है जिन की वज़ाह़त भी शामिले तह़रीर है। येह टिप्स सोह़बतों, तजरिबों, मुशाहदों, किताबों, तारीख़, मीडिया और सोश्यल मीडिया वग़ैरा से माख़ूज़ हैं मगर ख़याल रहे कि इन बातों को जाइज़ और बाइसे सवाब कामों की ह़द तक मह़दूद समझा जाए क्यूंकि इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाबितए ह़यात है।

1 आज की माज़िरत कल की नदामत से बेहतर है।

वज़ाह़त बाज़ औक़ात कोई बड़ा हमें काम कहता है जिसे करने की हम में सकत नहीं होती, लेकिन हम माज़िरत करने के बजाए उस की नाराज़ी से डरते हुए हामी भर लेते हैं फिर जब मुक़र्ररा वक़्त पर वोह काम नहीं कर पाते तो नदामत का शिकार होते हैं, इस लिये माज़िरत करनी है या नदामत उठानी है ? बहर ह़ाल माज़िरत बेहतर है ताकि वोह काम किसी और को दे दिया जाए।

2 जो इशारों किनायों से आप की मुराद न समझे उसे ज़बान से बोल कर खुद को शर्मिन्दा होने से बचाइये।

वज़ाह़त आज़ा भी बोलते हैं जिसे बॉडी लेंग्वेज कहा जाता है। इसी त़रह़ हम एक बात वाज़ेह़ और सराह़त के साथ कहते हैं या इशारों किनायों से। अब सामने वाला हमारी बीमारी या थकावट या ज़रूरत को न तो चेहरे के तअस्सुरात से समझ रहा हो न बॉडी लेंग्वेज से उस वक़्त अगर हम उस से किनाया में बात करें मसलन अगर मेरे पास रक़म हो तो मैं अपना अच्छा इलाज करवा लूं तो भी वोह रिसपोन्स न दे, तो ऐसे को सराह़त के साथ कहना कि आप मुझे इलाज के लिये कुछ रक़म दे दें, आप को शर्मिन्दा कर देगा।

3 वोह शोबा अपनाइये जो आप के मिज़ाज के मुवाफ़िक़ और शौक़ के मुत़ाबिक़ हो।

वज़ाह़त लोगों की एक तादाद है जो ऐसा कारोबार या जॉब कर रही होती है जो उन के मिज़ाज के मुत़ाबिक़ नहीं होती और न ही उसे करने में उन्हें कोई शौक़ या दिलचस्पी होती है बस मजबूरी में कर रहे होते हैं, नतीजतन वोह उस शोबे में ख़ास परफ़ोर्मन्स नहीं दिखा सकते। इस लिये जब आप को सिलेक्शन का इख़्तियार मिले तो अपने मिज़ाज के मुवाफ़िक़ और शौक़ के मुत़ाबिक़ शोबे को इख़्तियार कीजिये, आप उस काम में बोरियत मह़सूस नहीं करेंगे और तरक़्क़ी के मवाक़ेअ़ भी मिलेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ

4 ख़्वा म ख़्वाह की उम्मीदों के जाल में फंसने वाले लोग जल्दी मायूसी के गढ़े में गिर जाते हैं।

वज़ाह़त उम्मीद की कोई बुन्याद भी होती है उस का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है येह उम्मीद रखना कि बारिश आस्मान के बजाए ज़मीन से बरसेगी या मैं एक दिन मगरमछ की सुवारी करूंगा, ख़ाम ख़याली है।

5 एन्जॉय और स्ट्रगल ज़िन्दगी का लाज़िमी हिस्सा है, फ़ैसला आप के हाथ में है कौन सा काम पहले करना है।

वज़ाह़त एन्जॉय और स्ट्रगल एक सर्कल की त़रह़ होते हैं अगर आप अपनी जवानी के अय्याम ऐ़शो इशरत में

गुज़ार देंगे तो बुढ़ापा गुज़ारना मुश्किल हो जाएगा और अगर जवानी में स्ट्रगल कर के अपनी माली व तिब्बी हालत बेहतर बना लेंगे तो बुढ़ापा सुखी गुज़रेगा। फ़ैसला आप के हाथ में है।

6 खुशियों के सिग्नल आप के इर्द गिर्द मौजूद हैं सिर्फ़ कनेक्शन की देर है।

वज़ाहत जिस तरह Wi-Fi के सिग्नल हमारे अत्राफ़ में मौजूद होते हैं सिर्फ़ डिवाइस से कनेक्ट करने की देर होती है हमारे मोबाइल में Wi-Fi एक्टिव हो जाता है। इसी तरह खुशी हमारे अन्दर से फूटती है सिर्फ़ महसूस करने की ज़रूरत है, इस का तजरिबा करना हो तो दूध पीते बच्चे को पुचकार कर देखिये, वोह कोई माद्दी चीज़ मिले बिग़ैर खुश हो कर मुस्कुराना शुरूअ़ कर देगा।

7 जितना आप का तजरिबा ज़ियादा होगा उतने ज़ियादा आप हक़ीक़त पसन्द होंगे।

वज़ाहत हक़ीक़त पसन्दी ज़िन्दगी के लिये बहुत ज़रूरी है और तजरिबा कार होना हक़ीक़त पसन्द होने के लिये बहुत अहम है जैसे येह हक़ीक़त है कि मियां बीवी में अन बन हो ही जाती है, इन्सान को गुस्सा आ ही जाता है, अहमिय्यत दिये जाने पर दिल खुश होता है, बाप को उस के सामने ज़लील किया जाए येह गई गुज़री औलाद को भी बुरा लगेगा, ग़मगीन के सामने हंसना मुस्कुराना उसे अच्छा नहीं लगेगा।

8 खुशियां बांटने से बढ़ती हैं और ग़म बांटने से कम होते हैं।

वज़ाहत आप की खुशी पर कोई खुश हो उस पर भी आप को खुशी होगी इस लिये अपनी खुशियां अपने प्यारों से शेयर किया करें यूंही अगर कोई दुखी और ग़मगीन हो तो उस की ढारस बन्धा कर, तसल्ली दे कर, मदद कर के उस के ग़म बांट लीजिये।

9 हदफ़ वोह लें जिस को पूरा करना आप के लिये मुम्किन भी हो।

वज़ाहत ऐड़ियां उठा कर अपना क़द बड़ा दिखाने की आ़दत बहुत से लोगों में होती है, उन में से बाज़ खुशामदी भी होते हैं उन से जो काम बोलो जवाब मिलता है : हाज़िर जनाब, मैं आप का नौकर। इसी चक्कर में येह लोग वोह अहदाफ़ भी ले लेते हैं जिन्हें पूरा करना उन के बस में नहीं होता चुनान्चे नाकामी उन का मुंह चढ़ा रही होती है। अल्लाह हमें इस से बचाए।

10 उम्मीद और मायूसी दोनों हमारे अन्दर होती हैं अब येह हम पर है कि हम अपने आप पर किसे ग़लबा देते हैं ?

वज़ाहत जिस तरह हंसना और रोना, जागना और सोना, गुस्सा और नर्मी हमारे अन्दर मौजूद होती है इसी तरह उम्मीद और मायूसी एक दूसरे की ज़िद हैं जहां उम्मीद होगी मायूसी वहां नहीं आएगी और जिस दिल में मायूसियों के अन्धेरे समाए होंगे वहां उम्मीद की किरनें नहीं जागेंगी। अब हम पर है कि हम खुद पर उम्मीद को ग़लबा देते हैं या मायूसी को ? यक़ीनन उम्मीद को ग़लबा देने वाले मायूसियों से बचे रहते हैं।

11 ख़्वाहिशें दो क़िस्म की होती हैं एक वोह जिन को पूरा करना हमारे इख़्तियार में होता है दूसरी वोह जिन पर हमारा कोई इख़्तियार नहीं होता।

वज़ाहत पहली की मिसाल किताब लिखने की ख़्वाहिश, किसी मौज़ूअ़ पर बयान करने की ख़्वाहिश और दूसरी की मिसाल बेटे की ख़्वाहिश के बा वुजूद बेटियां पैदा होती रहना या औलाद की ख़्वाहिश के बा वुजूद उस का पैदा न होना।

12 जिस ख़्वाहिश की वज्ह से आप ब्लेक मैल हो रहे हों उसे यक लख़्त छोड़ दीजिये, आप फ़ौरन सुकून में आ जाएंगे।

वज़ाहत मश्हूर है ख़्वाहिश बादशाह को फ़क़ीर बना देती है। अगर आप ज़ाती घर बनाना चाह रहे हैं, गाड़ी ख़रीदना चाह रहे हैं लेकिन तवील कोशिश के बा वुजूद रक़म जम्अ़ नहीं हो रही जिस की वज्ह से आप के शबो रोज़ टेन्शन में गुज़र रहे हैं तो उस ख़्वाहिश को तर्क कर दीजिये, आप चन्द मिनटों में सुकून में आ जाएंगे और टेन्शन से छुटकारा मिल जाएगा।

याद रहे : जो इन सफ़हात में पेश किया उस से बहुत ही कम है जो पेश नहीं किया गया।

शबे बराअत में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मामूलात

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब को दीने इस्लाम में बहुत अहमिय्यत ह़ासिल है। इस की ख़ुसूसिय्यात के बाइ़स इसे शबे बराअत भी कहते हैं। हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस शब में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में इबादत फ़रमाया करते थे जैसा कि

मस्जिद में इबादत

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ बयान करते हैं कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे किसी काम से ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के घर भेजा तो मैं ने उन से अ़र्ज़ की : जल्दी कीजिये कि मैं हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस ह़ाल में छोड़ कर आया हूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم को निस्फ़ शाबान (शबे बराअत) के बारे में कुछ बातें बता रहे थे तो ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ उनैस यहां बैठो ! मैं तुम्हें निस्फ़ शाबान के बारे में हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीसे मुबारका सुनाती हूं। एक दफ़्आ़ हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे हां तशरीफ़ फ़रमा थे। रात के वक़्त जब मेरी आंख खुली तो मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बिस्तर में न पाया, मैं दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُنَّ के हु़जरों में गई मगर मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं पाया तो मैं ने गुमान किया कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते मारिया क़िब्त़िया رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के हां तशरीफ़ ले गए हैं, मैं घर से निकली और मस्जिद से गुज़री तो मेरा पांव आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से टकराया, उस वक़्त आप सज्दे में थे।(1)

घर में इबादत व मुनाजाते नबवी

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शबे बराअत में अल्लाह पाक की बारगाह में सज्दा रेज़ हो कर जो दुआ़एं मांगीं उस के बारे में ह़ाफ़िज़ व मुअर्रिख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सईद अल मारूफ़ अ़ल्लामा इब्ने दुबैसी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 637 हिजरी) शबे बराअत के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अपने रिसाले में रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا इरशाद फ़रमाती हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने हु़जरे में गिरे हुए कपड़े की त़रह़ (यानी बिग़ैर किसी ह़रकत के) सज्दे की ह़ालत में देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यूं मुनाजात कर रहे हैं :

سَجَدَ لَكَ سَوَادِیْ وَخَیَالِیْ وَاٰمَنَ بِكَ فُؤَادِیْ هٰذِهٖ یَدِیْ وَمَا جَنَیْتُ بِهَا عَلٰی نَفْسِیْ یَا عَظِیْمُ رَجَآءً لِكُلِّ عَظِیْمٍ اِغْفِرِ الذَّنْبَ الْعَظِیْمَ سَجَدَ وَجْهِیْ لِلَّذِیْ خَلَقَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ

यानी मेरे क़ल्ब व ख़याल ने तुझे सज्दा किया और मेरा दिल तुझ पर ईमान लाया, येह मेरे हाथ हैं उन से मैं ने कोई गुनाह नहीं किया, ऐ अ़ज़मत वाली ज़ात जिस से हर अ़ज़ीम चीज़ की उम्मीद की जाती है, गुनाहे अ़ज़ीम को मुआ़फ़ फ़रमा, मेरा चेहरा उस ज़ात के लिये सज्दा रेज़ है जिस ने इसे पैदा किया और उस में कान और आंखें बनाईं। फिर हु़ज़ूरे अकरम

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दे से सरे मुबारक उठाया और दोबारा सज्दा रेज़ हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए :

اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَ بِكَ مِنْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ اَقُوْلُ كَمَا قَالَ اَخِىْ دَاوٗدُ اَعْفِرُ وَجْهِىْ فِى التُّرَابِ لِسَيِّدِىْ وَحَقٌّ لَهٗ اَنْ يُّسْجَدَ

यानी मैं तेरी नाराज़ी से तेरी रिज़ा की, तेरी पकड़ से तेरे अ़फ़्वो दर गुज़र की और तेरे जलाल से तेरी ही पनाह त़लब करता हूं, तू उसी सना व तारीफ़ के लाइक़ है जो तू ने खु़द बयान फ़रमाई, मैं वोही अ़र्ज़ करता हूं जो मेरे भाई दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अ़र्ज़ की : मैं अपना चेहरा अपने मौला के लिये ख़ाक आलूद करता हूं और जो इसी लाइक़ है कि उस के सामने जबीने नियाज़ ख़म की जाए । फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दे से सर उठा कर येह दुआ़ मांगी :

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِىْ قَلْبًا نَقِيًّا لَا كَافِرًا وَّلَا شَقِيًّا

यानी ऐ अल्लाह ! मुझे पाकीज़ा दिल अ़त़ा फ़रमा जो न तो नाशुक्री करने वाला हो और न ही बद बख़्त ।(2)

शबे बराअत में हुज़ूर के त़वील सज्दे

शबे बराअत में हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सज्दे किस क़दर त़वील हुवा करते थे इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक रात नमाज़ अदा करने के लिये खड़े हुए और इतना त़वील सज्दा किया कि मुझे येह गुमान हुवा कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई है। जब मैं ने येह देखा तो खड़ी हुई और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अंगूठे को हिलाया तो अंगूठे में ह़रकत पैदा हुई, मैं वापस चली गई फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दे से सरे मुबारक उठाया और नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो इरशाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! क्या तुम्हारा येह गुमान था कि मैं तुम्हारे साथ बे वफ़ाई करूंगा ? मैं ने अ़र्ज़ की : या नबिय्यल्लाह ! खु़दा की क़सम ऐसा नहीं मगर आप के त़वील सज्दे से मुझे येह गुमान हुवा था कि कहीं आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ तो नहीं क़ब्ज़ कर ली गई । आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम जानती हो कि येह कौन सी रात है ? मैं ने अ़र्ज़ की : अल्लाह और उस का रसूल ज़ियादा जानते हैं। फ़रमाया : येह निस्फ़ शाबान की रात है इस रात अल्लाह पाक अपने बन्दों पर नज़रे रह़मत फ़रमाता है तो बख़्शिश मांगने वालों को बख़्श देता है और रह़्म त़लब करने वालों पर रह़्म फ़रमाता है और बुग़्ज़ रखने वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है ।(3)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُم को भी शबे बराअत की अहमिय्यत बताया करते थे जैसा कि ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا से अ़र्ज़ की, कि जल्दी कीजिये मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस ह़ाल में छोड़ कर आया हूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُم के सामने पन्दरह शाबान की बातें बता रहे थे नीज़ मुख़्तलिफ़ अह़ादीसे मुबारका की रौशनी में येह भी अन्दाज़ा होता है कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर साल शबे बराअत कभी घर में और कभी मस्जिद में इ़बादत और ज़िक्रो दुआ़ में मश्ग़ूल रहते थे और वोह भी इस एहतिमाम के साथ कि बसा औक़ात इस इ़बादत में सारी रात गुज़र जाती जैसा कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا शबे बराअत से ही मुतअ़ल्लिक़ एक मरतबा का वाक़िआ़ बयान फ़रमाती हैं : فَمَا زَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يُصَلِّىْ قَائِمًا وَقَاعِدًا حَتّٰى اَصْبَحَ فَاَصْبَحَ وَقَدِ اصْمَغَدَّتْ قَدَمَاهُ فَاِنِّىْ لَاَغْمِزُهَا

यानी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो कर और बैठ कर मुसल्सल नमाज़ पढ़ते रहे यहां तक कि सुब्ह़ हो गई, सुब्ह़ तक हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक क़दम सूज गए थे चुनान्चे मैं आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमे मुबारक दबाने लगी ।(4) कभी ऐसा भी हुवा कि उम्मत के लिये फ़िक्रमन्द रहने वाले हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे बराअत में क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए और वहां जा कर अपने रब से अहले क़ुबूर के लिये दुआ़एं मांगीं जैसा कि ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम

صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم को पन्दरह शाबान की रात जन्नतुल बक़ीअ़ में इस ह़ाल में पाया कि आप صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم मुसलमान मर्दों, औ़रतों और शहीदों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कर रहे थे।[5]

सद शुक्र ख़ुदाया तू ने दिया, है रह़मत वाला वोह आक़ा
जो उम्मत के रन्जो ग़म में, रातों को अश्क बहाता रहे[6]

लिहाज़ा हमें चाहिये कि रह़मत व मग़्फ़िरत वाली इस मुबारक रात को शब बेदारी करते हुए इ़बादात और ज़िक्रो दुआ़ में गुज़ारें और अपनी मग़्फ़िरत की दुआ़ के साथ साथ क़ब्रिस्तान जा कर अपने मर्ह़ूमीन के लिये भी दुआ़ए मग़्फ़िरत करें।

शबे बराअत में क़ब्रिस्तान जाना

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों का मामूल चला आ रहा है कि शबे बराअत में क़ब्रिस्तान जा कर अपने मर्ह़ूम रिश्तेदारों और आ़म मुसलमानों के लिये फ़ातिह़ा ख़्वानी, ईसाले सवाब और दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं नीज़ मज़ाराते औलिया व उ़लमा पर ह़ाज़िरी का भी एहतिमाम किया जाता है येह न सिर्फ़ एक अच्छा अ़मल है बल्कि ह़दीसे पाक में ज़ियारते क़ुबूर को दुन्या से बे रग़बती और फ़िक्रे आख़िरत का सबब क़रार दिया गया है चुनान्चे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْهَا فَاِنَّهَا تُزَهِّدُ فِي الدُّنْيَا وَتُذَكِّرُ الْاٰخِرَةَ

यानी मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ किया था अब ज़ियारते क़ुबूर कर लिया करो कि बेशक येह दुन्या से बे रग़बत करती है और आख़िरत की याद दिलाती है।[7] मालूम हुवा कि वक़्तन फ़ वक़्तन क़ब्रिस्तान जाते रहना चाहिये ताकि क़ब्रों को देख कर हमारे दिल में फ़िक्रे आख़िरत पैदा हो, ख़ास त़ौर पर पन्दरह शाबान की रात को क़ब्रिस्तान जा कर अपने मर्ह़ूमीन और दीगर मुसलमानों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करनी चाहिये।

---

(1) فضائل الاوقات، ص32، حدیث:36 (2) دیکھئے: ذکر احادیث رویت عن النبی فی ذکر لیلۃ النصف من شعبان وفضلہ، ص134 (3) شعب الایمان، 3/382، حدیث: 3835 (4) دیکھئے: الدعوات الکبیر، 2/145، حدیث:530 (5) دیکھئے: شعب الایمان، 3/384، حدیث: 3837 (6) وسائلِ بخشش (مرمم)، ص475 (7) ابن ماجہ، 2/252، حدیث:1571۔

इस्लाम का निज़ाम ज़कात

कोई भी मुल्क मआशी तौर पर चाहे कितना ही तरक़्क़ी याफ़्ता क्यूं न हो, लेकिन उस में कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो मुख़्तलिफ़ वुजूहात की बिना पर ग़ुर्बत व अफ़्लास की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों और रियासतों ने उस के मुख़्तलिफ़ ह़ल निकाले हैं, जब कि इस्लाम ने ज़कात की सूरत में एक अ़ज़ीम निज़ाम सेंकड़ों साल पहले ही मुहय्या कर दिया है, जिस के ज़रीए़ ग़रीब और मोह़ताज अफ़राद की ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी पूरी होने का इन्तिज़ाम होता है। इस्लाम ने मालदारों पर ज़कात फ़र्ज़ की ताकि वोह उस के ज़रीए़ कमज़ोर और नादार त़बक़े की मदद करें और इस त़रह़ दौलत चन्द लोगों की मुठ्ठियों में क़ैद होने के बजाए मफ़्लूकुल ह़ाल अफ़राद तक पहुंचे और यूं मआशी तवाज़ुन की फ़ज़ा क़ाइम रहे। पारह 8, सूरतुल अन्आ़म, आयत नम्बर 165 में इरशादे रब्बे करीम है :

﴿وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓىٕفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّیَبْلُوَكُمْ فِیْ مَاۤ اٰتٰىكُمْؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें नाइब किया और तुम में एक को दूसरे पर दर्जों बुलन्दी दी कि तुम्हें आज़माए उस चीज़ में जो तुम्हें अ़त़ा की।(1) यानी आज़माइश में डाले कि तुम नेमत व जाहो माल पा कर कैसे शुक्र गुज़ार रहते हो और बाहम एक दूसरे के साथ किस क़िस्म के सुलूक करते हो।(2)

ज़कात की अहमिय्यत ज़कात अराकीने इस्लाम में से एक अहम रुक्न है। ज़कात की अहमिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि क़ुरआने करीम में नमाज़ के साथ ज़कात का ज़िक्र 32 मरतबा आया है।(3) ज़कात की फ़र्ज़िय्यत के ह़वाले से क़ुरआने पाक में इरशाद होता है :

1 ﴿وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो।(4)

2 इसी त़रह़ सूरतुत्तौबह में रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया गया :

﴿خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّیْهِمْ بِهَا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब उन के माल में से ज़कात तह़सील करो जिस से तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो।(5)

1 नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ को जब यमन की त़रफ़ रवाना किया तो उन से फ़रमाया : उन को बताओ कि अल्लाह पाक ने उन के मालों में ज़कात फ़र्ज़ की है जो मालदारों से ले कर फ़ुक़रा को दी जाए।(6) 2 एक और मौक़अ़ पर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस्लाम की बुन्याद पांच बातों पर है, येह गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुह़म्मद उस के रसूल हैं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात अदा करना, ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।(7)

ज़कात किस पर फ़र्ज़ है इस्लाम के निज़ामे ज़कात की येह ख़ूबी है कि हर एक पर फ़र्ज़ नहीं की गई है बल्कि चन्द क़ुयूदो शराइत़ के साथ मालिके निसाब अफ़राद पर फ़र्ज़ है, अगर उसे भी नमाज़ रोज़ा वग़ैरा इबादात की त़रह़ हर एक पर लाज़िम कर दिया जाता तो ग़रीब व मुफ़्लिस लोग जिन्हें ख़ुद अपनी ह़ाजत व ज़रूरत के लिये माल दरकार होता है मशक़्क़त में मुब्तला हो जाते, लिहाज़ा येह सिर्फ़ मालदारों पर ही फ़र्ज़ की गई और वोह भी चन्द शराइत़ के साथ ताकि इस से मुस्तह़िक़ और मोह़ताज लोगों की माली मदद की जा सके। ज़कात किस पर फ़र्ज़ है मुलाह़ज़ा कीजिये :

ज़कात देना हर उस आ़क़िल, बालिग़ और आज़ाद मुसलमान पर फ़र्ज़ है जिस में येह शराइत़ पाई जाएं : (1) निसाब का मालिक हो (2) येह निसाब नामी हो (3) निसाब उस के क़ब्ज़े में हो (4) निसाब उस की ह़ाजते अस्लिया (यानी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी) से ज़ाइद हो (5) निसाब दैन से फ़ारिग़ हो (यानी उस पर ऐसा क़र्ज़ न हो जिस का मुत़ालबा बन्दों की जानिब से हो, कि अगर वोह क़र्ज़ अदा करे तो उस का निसाब बाक़ी न रहे) (6) उस निसाब पर एक साल गुज़र जाए।[8] इन शराइत़ की तफ़्सील जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब **"फ़तावा अहले सुन्नत अह़कामे ज़कात"** का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

ज़कात अदा करने की ह़िक्मतें इस्लाम के बयान कर्दा अह़काम में हमारे लिये ही कसीर फ़वाइद और बहुत सी ह़िक्मतें हैं। आइये ! ज़कात की फ़र्ज़िय्यत में जो ह़िक्मतें हैं उन में से चन्द मुलाह़ज़ा कीजिये : (1) सख़ावत इन्सान का कमाल है और बुख़्ल ऐ़ब। इस्लाम ने ज़कात की अदाएगी जैसा प्यारा अ़मल मुसलमानों को अ़त़ा फ़रमाया ताकि इन्सान में सख़ावत जैसा कमाल पैदा हो और बुख़्ल जैसा क़बीह़ ऐ़ब उस की ज़ात से ख़त्म हो (2) जैसे एक मुल्की निज़ाम होता है कि हमारी कमाई में हुकूमत का भी ह़िस्सा होता है जिसे वोह टेक्स के त़ौर पर वुसूल करती है और फिर वोही टेक्स हमारे ही मफ़ाद में यानी मुल्की इन्तिज़ाम पर ख़र्च होता है बिला तश्बीह हमें मालो दौलत और दीगर तमाम नेमतों से नवाज़ने वाली हमारे रब ही की प्यारी ज़ाते पाक है और ज़कात अल्लाह पाक का ह़क़ है, जो हमारे ही ग़ुरबा पर ख़र्च किया जाता है (3) रब चाहता तो सब को मालो दौलत अ़त़ा फ़रमा कर ग़नी कर देता लेकिन उस की मशिय्यत है कि उस ने अपने ही बन्दों में बाज़ों को अमीर और दौलत मन्द किया और बाज़ों को ग़रीब रखा और अमीरों यानी साह़िबे निसाब पर ज़कात की अदाएगी लाज़िम कर दी ताकि इस से अमीरों और ग़रीबों में मह़ब्बत व उन्सिय्यत और बाहमी इम्दाद का जज़्बा पैदा हो और अल्लाह पाक की नेमत को सब मिल बांट कर खाएं और उस का शुक्र अदा करें (4) शरीअ़त ने ज़कात फ़र्ज़ कर के कोई अनहोनी चीज़ फ़र्ज़ नहीं की बल्कि अगर हम अपने अत़राफ़ में ग़ौरो फ़िक्र करें तो ज़कात की ह़क़ीक़त हर जगह मौजूद है। जैसे कि फलों का गूदा इन्सान के लिये है मगर छिल्का जानवरों का ह़क़ है। गन्दुम में फल हमारा ह़िस्सा मगर भूसा जानवरों का, गन्दुम में भी आटा हमारा है तो भूसी जानवरों की। हमारे जिस्म में बाल और नाख़ुन वग़ैरा का ह़द्दे शरई से बढ़ने की सूरत में अ़लाह़िदा करना ज़रूरी है कि येह सब जिस्म की ज़कात यानी इज़ाफ़ी चीज़ मैल हैं। बीमारी तन्दुरुस्ती की ज़कात, मुसीबत राह़त की, नमाज़ें दुन्यावी कारोबार की गोया ज़कात हैं (5) अगर हर वोह शख़्स जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है ज़कात की अदाएगी का इल्तिज़ाम कर ले तो मुसलमान कभी दूसरों के मोह़ताज न होंगे। मुसलमानों की ज़रूरतें मुसलमानों से ही पूरी हो जाएंगी और किसी को भीक मांगने की भी ह़ाजत न होगी।[9]

---

(1) پ8، الانعام:165 (2) خزائن العرفان، پ8، الانعام، تحت الآیۃ: 165 (3) ردالمحتار، 3/202 (4) پ1، البقرۃ:43 (5) پ11، التوبۃ:103 (6) ترمذی، 2/126، حدیث625 (7) بخاری، 1/14، حدیث:8 (8) بہار شریعت، 1/488تا578 ملخصاً (9) رسائل نعیمیہ، ص298تا300 بتصرف۔

इस्लाम की रौशन तालीमात

एह़सान न जताइये

अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया : ﴿اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी का।[1] एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ اَحْسِنْ كَمَاۤ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَیْكَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और एह़सान कर जैसा अल्लाह ने तुझ पर एह़सान किया।[2] इन आयाते बय्यिनात में अल्लाह पाक ने एह़सान और नेकी करने का हुक्म दिया है। दीने इस्लाम में किसी के साथ एह़सान व भलाई करने और उस की ह़ाजात पूरी करने की बड़ी अहमिय्यत और फ़ज़ीलत बयान हुई है, जब कि येह एह़सान व भलाई और ह़ाजत रवाई एह़सान जताने और आ़र दिलाने की निय्यत से न हो बल्कि अल्लाह पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने की निय्यत से हो। इस की जज़ा बयान करते हुए अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ (۲۶۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।[3]

फ़ी ज़माना कोई किसी की मदद करने के लिये अव्वलन तो तय्यार ही नहीं होता और अगर मदद कर भी दे तो उ़मूमन किसी न किसी मौक़अ़ पर एह़सान जता देता है कि मैं ने फ़ुलां वक़्त तुम्हारे साथ येह एह़सान किया, वोह एह़सान किया, तुम मत़लबी शख़्स हो, एह़सान फ़रामोश हो वग़ैरा वग़ैरा। इस से जहां सामने वाले को सख़्त तक्लीफ़ और अज़िय्यत पहुंचती है वहां नेक आमाल का अज्रो सवाब भी ज़ाएअ़ हो जाता है। इस्लाम की रौशन तालीमात में से येह है कि किसी के साथ एह़सान व भलाई और मदद करते वक़्त अल्लाह पाक की रिज़ा व ख़ुशनूदी को पेशे नज़र रखा जाए ताकि सामने वाले का दिल ख़ुश हो और उसे तक्लीफ़ भी न पहुंचे, और दे कर एह़सान न जताया जाए ताकि इस का अ़मल ज़ाएअ़ न हो और उसे अज्रो सवाब भी मिले चुनान्चे क़ुरआने करीम में अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰىۙ كَالَّذِیْ یُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَیْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًاؕ لَا یَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَیْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْاؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ (۲۶۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर उस की त़रह़ जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथ्थर कर छोड़ा अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता।[4]

यानी जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है इस त़रह़ तुम एह़सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो।[5]

अल्लाह पाक ने अगर किसी को देने के लाइक़ बनाया है, किसी के साथ एह़सान व भलाई करने के क़ाबिल किया है तो उसे चाहिये कि एह़सान जताए बिग़ैर, रिज़ाए इलाही की निय्यत से अपने मुसलमान भाइयों की मदद करे

और मुश्किल वक़्त में उन के काम आए कि इस से दुन्या व आख़िरत में अपना ही फ़ाएदा है कि दुन्या में माल में बरकत होगी और आख़िरत में اِنْ شَآءَ الله पूरा पूरा बदला मिलेगा, अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ
وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ یُّوَفَّ اِلَیْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ(۲۷۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम जो अच्छी चीज़ दो तो तुम्हारा ही भला है और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर अल्लाह की मर्ज़ी चाहने के लिये और जो माल दो तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़्सान न दिये जाओगे ।[6]

जिस त़रह़ क़ुरआने करीम की आयाते बय्यिनात में एह़सान जताने की मुमानअ़त बयान फ़रमाई गई इसी त़रह़ अह़ादीसे मुबारका में भी एह़सान जताने पर सख़्त वई़दात इरशाद फ़रमाई गई हैं चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : धोकेबाज़, बख़ील और एह़सान जताने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा ।[7] एक और ह़दीसे पाक में फ़रमाया : एह़सान जताने वाला, वालिदैन का ना फ़रमान और शराब का आ़दी जन्नत में नहीं जाएगा ।[8]

ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बाज़ लोग किसी शख़्स को राहे ख़ुदा में भेजते हैं या किसी आदमी पर कुछ ख़र्च करते हैं और उस के नानो नफ़्क़ा (अख़राजात) का एहतिमाम करते हैं तो बाद में उस पर एह़सान जता कर उसे ईज़ा पहुंचाते हैं मसलन एह़सान जतलाते हुए कहते हैं कि मैं ने राहे ख़ुदा में इतना इतना ख़र्च किया, बारगाहे ख़ुदावन्दी में उन के अ़मल का कोई सवाब नहीं । जो लोग किसी को दे कर येह कहते हैं कि क्या मैं ने तुम को इतनी इतनी चीज़ नहीं दी थी ? वोह येह कह कर उस को ईज़ा पहुंचाते हैं ।[9]

किसी के साथ एह़सान कर के भूल जाना चाहिये ताकि न एह़सान याद रहे और न एह़सान जताने की नौबत आए । मश्हूर मुह़ावरा है : "नेकी कर दरिया में डाल ।" इस मुआ़मले में हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का त़र्ज़े अ़मल भी क्या ख़ूब था कि किसी पर एह़सान कर के जताना तो दूर की बात उस से दुआ़ए ख़ैर के भी त़ालिब न होते कि कहीं येह दुआ़ उन के एह़सान का बदला न हो जाए, अगर कोई ख़ुद दुआ़ दे भी देता तो उस के बदले में उस के लिये भी दुआ़ फ़रमा दिया करते, चुनान्चे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا जब फ़क़ीर की त़रफ़ कोई हदिया भेजतीं तो ले जाने वाले से कहतीं कि उस के दुआ़इया कलिमात को याद रखे, फिर उस जैसे कलिमात के साथ जवाब देतीं और फ़रमातीं : दुआ़ के बदले इस लिये दुआ़ दी है ताकि हमारा सदक़ा मह़फ़ूज़ रहे । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म और आप के बेटे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا भी ऐसा ही किया करते थे ।[10]

याद रखिये ! एह़सान जताना अल्लाह पाक की आला सिफ़ात जब कि हमारी मज़्मूम सिफ़ात में से है क्यूंकि अल्लाह पाक का एह़सान जताना मेहरबानी और मख़्लूक़ को इस का वाजिब कर्दा शुक्र अदा करने की याद देहानी है जब कि हमारा एह़सान जताना आ़र दिलाना होता है क्यूंकि सदक़ा लेने वाला ग़ैर का मोह़ताज होने की वज्ह से शिकस्ता दिल होता है और उस के हाथ के ऊपर होने का मोतरिफ़ होता है, लिहाज़ा जब देने वाला अपनी नेमत का इज़्हार करे या बरतरी जताए या उस एह़सान के इ़वज़ कोई ख़िदमत या शुक्र का मुत़ालबा करे तो येह चीज़ लेने वाले के नुक़्सान, शिकस्ता दिली, आ़र मह़सूस करने और दिल के टूटने में इज़ाफ़ा करती है जो कि अ़ज़ीम क़बाह़तें हैं ।[11]

बहरह़ाल एह़सान नहीं जताना चाहिये, हां जिस पर एह़सान किया जाए उसे चाहिये कि अपने मोह़सिन के एह़सान का ह़त्तल मक़्दूर बदला दे । ह़दीसे पाक में है : जिस पर कोई एह़सान किया जाए और वोह त़ाक़त रखता हो तो उस एह़सान का बदला ज़रूर दे, वरना एह़सान करने वाले की तारीफ़ ही कर दे क्यूंकि जिस ने एह़सान करने वाले की तारीफ़ की उस ने शुक्रिया अदा किया और जिस ने किसी के एह़सान को छुपाया उस ने ना शुक्री की ।[12] अल्लाह पाक हमें अपनी रिज़ा के लिये एक दूसरे के साथ एह़सान व भलाई करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1) پ14، النحل:90 (2) پ20، القصص:77 (3) پ3، البقرۃ:262 (4) پ3، البقرۃ:264 (5) خزائن العرفان، پ3، البقرۃ، تحت الآیۃ:264 (6) پ3، البقرۃ:272 (7) ترمذی، 3/388، حدیث:1970 (8) نسائی، ص895، حدیث:5683 (9) در منثور، البقرۃ، تحت الآیۃ:262، 2/39 (10) احیاء العلوم، 1/292 (11) الزواجر، 1/414 (12) ترمذی، 3/417، حدیث:2041۔

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

बातों से ख़ुश्बू आए

ग़ैर ज़रूरी गुफ़्तगू से ख़ामोशी बेहतर है

अ़क़्लमन्द के लिये ज़रूरी है कि जब तक बोलना ज़रूरी न हो जाए तब तक ख़ामोशी बरते, बोल कर तो बारहा नदामत उठाना पड़ती है मगर ऐसा बहुत कम है कि ख़ामोश रह कर शर्मिन्दगी उठानी पड़ जाए।

(फ़रमाने अबू ह़ातिम رَحْمَةُاللهِعَلَيْه) (روضۃالعقلاء،ص43)

अल्लाह पर भरोसे की अहमिय्यत

जो अपनी मारिफ़ते ख़ुदावन्दी को पहचानना चाहे उसे चाहिये कि ग़ौर करे कि अल्लाह पाक के किये गए वादों पर उस का दिल ज़ियादा भरोसा करता है या लोगों के किये गए वादों पर।(फ़रमाने शक़ीक़ बिन इब्राहीम अज़्दी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه) (طبقات الصوفیہ للسلمی،ص65)

नमाज़ में यक्सूई पैदा कीजिये

नमाज़ मुकम्मल इन्हिमाक के साथ और रिज़ाए इलाही के लिये पढ़ने से तसव्वुरात व ख़यालात का सिल्सिला ख़त्म हो जाता है। (फ़रमाने ह़ज़रते मियां ग़ुलाम अल्लाह सानी साहिब शरक़पुरी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه) (الرحیق العرفان،ص450ملخصاً)

अह्मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

मुसलमान के ह़क़ीक़ी ख़ैर ख़्वाह

मुसलमान का ईमान है कि अल्लाह व रसूल से ज़ियादा कोई हमारी भलाई चाहने वाला नहीं अल्लाह पाक व रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस चीज़ की त़रफ़ बुलाएं यक़ीनन हमारे दोनों जहान का उस में भला है, और जिस बात से मन्अ़ फ़रमाएं बिलाशुबा सरासर ज़रर व बला है।

(फ़तावा रज़विय्या, 15 / 105)

पीर की ख़िदमत की अहमिय्यत

पीर की ख़िदमत जो कुछ पीर होने के सबब की जाए वोह भी अल्लाह ही के लिये ख़र्च (यानी इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह) है। (फ़तावा रज़विय्या, 19 / 265)

बुराई को जड़ से ख़त्म करो

मरज़ का इलाज चाहना और सबब का क़ाइम रखना ह़माक़त नहीं तो क्या है। (फ़तावा रज़विय्या, 15 / 147)

अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन !

ख़ामोशी इ़ज़्ज़त बढ़ाती है

बुढ़ापे में ग़ुस्सा और सख़्त मिज़ाजी का मुज़ाहरा करने के बजाए ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगा कर अपनी इ़ज़्ज़त व अहमिय्यत दिलों में बर क़रार रखनी चाहिये।

पानी की क़द्र कीजिये

दूध की ह़िफ़ाज़त अगर उस के क़ीमती होने की वज्ह से की जाती है तो पानी की ह़िफ़ाज़त उस से बढ़ कर करनी चाहिये क्यूंकि पानी की क़द्रो अहमिय्यत दूध से ज़ियादा है, दूध के बिग़ैर ज़िन्दगी मुम्किन है मगर पानी के बिग़ैर नहीं।

दुश्मने सह़ाबा व अहले बैत से कोई सरोकार न रखो

जो सह़ाबा व अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का दुश्मन है वोह हमारे पांव की जूती के बराबर भी नहीं है, ऐसे बद बख़्त से हमारा कोई लेना देना नहीं होना चाहिये।

अह्कामे तिजारत

1 ऑर्डर पर माल तय्यार करवाने के बाद लेने से इन्कार करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि मेरा फ़र्नीचर बना कर देने का काम है कस्टमर तस्वीर या वीडियोज़ वग़ैरा के ज़रीए़ से कोई फ़र्नीचर पसन्द करता है और उसे बनाने का ऑर्डर दे देता है, ऑर्डर लेते वक़्त ही ज़रूरी चीज़ें तै कर ली जाती हैं मसलन कौन सी लकड़ी का बनाना है, पॉलिश या डेको वग़ैरा का रंग और डीज़ाइन क्या होगा, अगर शीट का बनाना है तो शीट और उस का कलर तै हो जाता है, इसी त़रह़ साइज़ और दीगर ज़रूरी चीज़ें तै हो जाती हैं येह सब चीज़ें कस्टमर की डीमान्ड के मुत़ाबिक़ रखी जाती हैं। बनने के बाद बाज़ कस्टमर लेने से मन्अ़ कर देते हैं और वज्ह येह बयान करते हैं कि हमें पसन्द नहीं आ रहा। ऐसी सूरत में उन्हें ऑर्डर तय्यार हो जाने के बाद न लेने का ह़क़ है या नहीं ?

वाज़ेह़ रहे कि येह फ़र्नीचर कस्टमर की पसन्द के मुत़ाबिक़ तय्यार हुवा था येह अगर न ले तो उस में हमारा काफ़ी नुक़्सान होता है।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : कस्टमर का ऑर्डर दे कर फ़र्नीचर तय्यार करवाना बैए़ इस्तिस्नाअ़ है, इस में मस्नूअ़ (बनवाई जाने वाली चीज़) की जिन्स, नौअ़, वस्फ़ वग़ैरा को इस त़ौर पर बयान कर देना ज़रूरी है जिस से वाज़ेह़ त़ौर पर इस मस्नूअ़ (बनवाई जाने वाली चीज़) की पहचान ह़ासिल हो जाए। लिहाज़ा फ़र्नीचर बना कर देने का ऑर्डर लेते वक़्त ही येह तै कर लिया कि इस में किस क़िस्म की लकड़ी लगेगी, क्या साइज़ होगा, क्या डीज़ाइन बनेगा और दीगर चीज़ें जो फ़रीक़ैन के लिये झगड़े का बाइ़स बन सकती हैं उन को वाज़ेह़ त़ौर पर बयान कर दिया तो येह अ़क़्दे इस्तिस्नाअ़ दुरुस्त वाक़ेअ़ हो गया।

अब अगर सानेअ़ (ऑर्डर पर चीज़ बना कर देने वाला) कस्टमर की बयान कर्दा सिफ़ात के मुत़ाबिक़ फ़र्नीचर तय्यार कर दे तो कस्टमर पर उसे लेना लाज़िम है, उसे मन्अ़ करने का शरअ़न ह़क़ ह़ासिल नहीं है, फ़ी ज़माना इसी क़ौल पर फ़तवा है। हां अगर एग्रीमेन्ट के वक़्त बयान की गई सिफ़ात के मुत़ाबिक़ मस्नूअ़ (बनवाई जाने वाली चीज़) तय्यार नहीं की है तो फिर कस्टमर को लेने और न लेने का इख़्तियार है जिसे फ़िक़्ही इस्त़िलाह़ में **"ख़ियारे वस्फ़"** कहते हैं।

तफ़्सील इस मस्अले की येह है कि सानेअ़ (ऑर्डर पर चीज़ बना कर देने वाले) ने प्रोडक्ट अगर मुस्तस्नअ़ (ऑर्डर पर चीज़ बनवाने वाले) की बयान की गई सिफ़ात के मुताबिक़ तय्यार की हो तब भी इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा और इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمَا के नज़दीक देखने के बाद मुस्तस्नअ़ (ऑर्डर पर चीज़ बनवाने वाले) को उसे लेने और न लेने का इख़्तियार मिलेगा जिसे फ़िक़्ही इस्तिलाह़ में "ख़ियारे रूयत" कहते हैं जब कि इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के नज़दीक मुस्तस्नअ़ (ऑर्डर पर चीज़ बनवाने वाले) को येह इख़्तियार नहीं मिलेगा[1] बल्कि उस पर उस चीज़ को लेना लाज़िम होगा और दौरे ह़ाज़िर बल्कि इस से पहले ज़माने के कई फ़ुक़हाए किराम ने इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के क़ौल को इख़्तियार फ़रमाया है। क्यूंकि ऑर्डर पर जिस के लिये माल बनाया जाता है, वोह उस की बयान कर्दा सिफ़ात के तह़्त बनाया जाता है और बहुत बड़ा सरमाया उस में लगाया जाता है, ख़रीदार के मन्अ़ करने पर या तो येह माल कहीं और नहीं बिकेगा या फिर देर से बिकेगा जिस में सानेअ़ (ऑर्डर पर चीज़ बना कर देने वाले) का बहुत नुक़्सान है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 स्कॉलर शिप की मद में मिलने वाली रक़म लेना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि तालीमी इदारों की त़रफ़ से स्कॉलर शिप की मद में मिलने वाली रक़म लेना क्या जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : फ़ी नफ़्सिही स्कॉलर शिप की मद में मिलने वाली रक़म लेने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं, स्कॉलर शिप देने वाले इदारे के Criteria के मुताबिक़ जो इस स्कॉलर शिप का ह़क़दार है वोह येह रक़म ले सकता है देने वाले की त़रफ़ से येह रक़म बत़ौरे हिबा यानी बत़ौरे गिफ़्ट होती है और बाज़ सूरतों में मुबाह़ की जाती है।

अलबत्ता अगर ज़कात की रक़म से स्कॉलर शिप दी जा रही है तो फिर उस के लेने, देने और मुस्तह़िक़ होने के अपने तफ़्सीली मसाइल हैं।

हिबा किसे कहते हैं इस से मुतअ़ल्लिक़ मजल्लतुल अह़कामुल अ़दलिया में है : "الهبة هی تمليك مال الآخر بلا عوض" यानी : किसी शख़्स को बिग़ैर किसी इ़वज़ के माल का मालिक बना देना हिबा है। (مجلۃ الاحکام العدلیہ، ص161)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 सेल्समेन का इज़ाफ़ी रक़म ख़ुद रख लेना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि दुकान के मालिक ने अपने सेल्समेन से कहा कि येह आइटम 150 रुपिये का हमें पड़ा है तुम 160 रुपिये का बेच देना, सेल्समेन ने दुकानदार की ग़ैर मौजूदगी में वोह आइटम 180 रुपिये का बेच दिया और 160 रुपिये गल्ले में डाल दिये और इज़ाफ़ी रक़म ख़ुद रख ली तो इस सूरत में क्या सेल्समेन का इज़ाफ़ी रक़म ख़ुद रख लेना दुरुस्त है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : दुकान पर काम करने वाला सेल्समेन मालिक की जानिब से चीज़ें बेचने का वकील होता है, और वकील अगर मुवक्किल की मुक़र्रर कर्दा क़ीमत से ज़ियादा में चीज़ बेच दे तो उस ज़ियादती का मालिक मुवक्किल होगा न कि वकील।

लिहाज़ा पूछी गई सूरत में जब सेल्समेन ने मालिक के बयान कर्दा रेट से ज़ियादा में चीज़ फ़रोख़्त कर दी तो अब वोह तमाम रक़म मालिक की होगी, सेल्समेन का ज़ाइद रक़म ख़ुद रख लेना जाइज़ नहीं।

मज्मउ़ल ज़मानात में है : "لو وكله ببيع عبده بالف فباعه بالفين فالالفان كله للموكل" यानी : अगर उसे अपना ग़ुलाम एक हज़ार रुपिये में फ़रोख़्त करने का वकील किया और उस ने दो हज़ार रुपिये का फ़रोख़्त कर दिया तो मुकम्मल दो हज़ार रुपिये मुवक्किल के होंगे।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) تحفۃ الفقہاء، جلد2، صفحہ 363، دار الکتب العلمیہ، بیروت

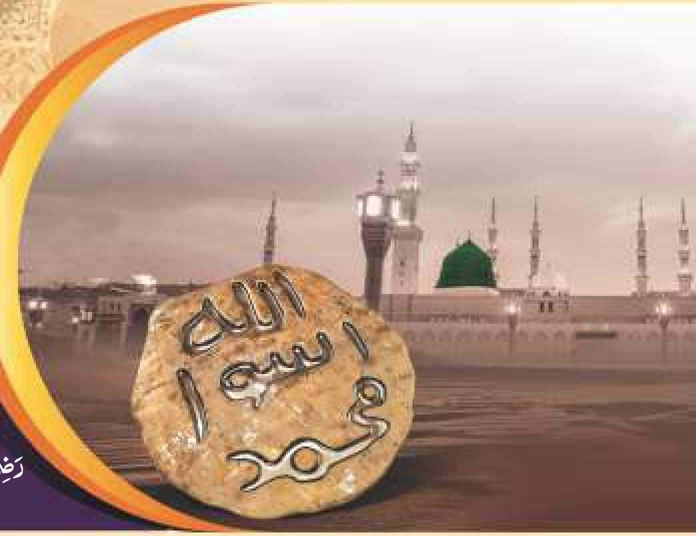

हज़रते उक्काशा बिन मिह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہُ

अ़रबी ज़बान की ज़र्बुल मसल है : "سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ" यानी उक्काशा तुम पर सबक़त ले गया। जब एक शख़्स किसी मुआ़मले में दूसरे से आगे बढ़ जाए तो पीछे रह जाने वाले के लिये येह ज़र्बुल मसल कही जाती है।(1) उक्काशा कौन थे और येह ज़र्बुल मसल कैसे बन गए ? आइये इस के लिये मज़्मून पढ़िये :

हज़रते उक्काशा बिन मिह़सन असदी رَضِیَ اللہُ عَنْہُ सहाबिये रसूल हैं आप साबिक़ीने अव्वलीन और अहले सुफ़्फ़ा सहाबा में से हैं(2) आप का शुमार निहायत बहादुर, मुम्ताज़ और बा कमाल अफ़राद में होता है(3) आप अपने भाई हज़रते अबू सिनान رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से दो साल छोटे थे(4) आप मश्हूर सहाबिय्या हज़रते उम्मे क़ैस मुहाजिरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के भाई हैं।(5)

कमान ठीक हो गई हज़रते उक्काशा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ को बारगाहे रिसालत से कई मोजिज़ात देखने का शरफ़ भी रहा है एक जंग के मौक़अ़ पर रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तीर चला रहे थे कि अचानक कमान किनारे पर से टूट गई और साथ ही तांत यानी किनारे पर बन्धा हुवा तार भी टूट गया और रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस में तार का बालिश्त बराबर एक टुकड़ा रह गया (जो खींच कर कमान के किनारे तक नहीं पहुंच सकता था), हज़रते उक्काशा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने दस्ते अक़्दस से कमान ली और तांत को खींच कर किनारे पर बांधना चाहा (मगर कामयाब न हुए) अ़र्ज़ गुज़ार हुए : या रसूलल्लाह ! तांत खींच कर किनारे तक नहीं पहुंच रही, इरशाद फ़रमाया : इस को खींचो ! पहुंच जाएगी, येह फ़रमान सुन कर आप ने तांत को खींचा तो वोह खिंचती चली गई और किनारे तक ब आसानी पहुंच गई आप ने तांत को कमान के किनारे पर दो या तीन मरतबा बल दे कर लपेट दिया फिर रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के हाथ से कमान ले कर दुश्मन पर तीर बरसाने शुरूअ़ कर दिये।(6)

टहनी तल्वार बन गई सिने 2 हिजरी माहे रमज़ान गज़्वए बद्र में आप की तल्वार दुश्मन से लड़ते लड़ते टूट गई, आप बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को एक टहनी अ़ता की और फ़रमाया : ऐ उक्काशा ! इस से लड़ो ! आप ने टहनी हाथ में पकड़ कर हिलाई तो वोह आप के हाथ में एक लम्बी सफ़ेद चमकती हुई मज़बूत तल्वार बन गई आप ने उसी तल्वार से दुश्मनों का मुक़ाबला किया यहां तक कि अल्लाह करीम ने मुसलमानों को फ़त्ह़ से हमकिनार कर दिया,(7) वोह तल्वार मुसल्सल आप के पास रही फिर आप ने गज़्वए उहुद, ख़न्दक़ और बाद के तमाम गज़्वात में हिस्सा लिया और अपनी तल्वार के ख़ूब जौहर दिखाए।(8)

सिने 6 हिजरी माहे रबीउ़ल अव्वल रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की सरबराही में चालीस सहाबा को बनी असद के चश्मए गम्र की त़रफ़ भेजा। आप ने अपने साथियों के साथ मिल कर उन पर ह़म्ला किया तो वोह लोग अपने ऊंटों को छोड़ कर भाग खड़े हुए, सहाबा ने उन के पीछे जाना चाहा तो आप ने मन्अ़ कर दिया और 200 ऊंटों को माले ग़नीमत की सूरत में ले कर मदीने पहुंचे आप और आप के साथियों में न कोई ज़ख़्मी हुवा और न ही आप को किसी फ़रेब व साज़िश से वासित़ा पड़ा।(9) सिने 9 हिजरी माहे रबीउ़ल आख़िर में भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को एक जंग पर रवाना किया था।(10)

उक्काशा सबक़त ले गए एक मरतबा रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं इरशाद फ़रमाया : मैं ने ह़ज के मौसिम में तमाम उम्मतों को देखा, अपनी उम्मत को देखा

कि उन्हों ने मैदानों और पहाड़ों को घेर रखा है, मुझे उन की कसरत ने ख़ुश कर दिया, मुझ से पूछा गया : क्या आप इस बात पर राज़ी हैं ? मैं ने कहा : मैं राज़ी हूं । फिर कहा गया : उन के साथ मज़ीद 70 हज़ार हैं जो बिग़ैर किसी ह़िसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे, वोह जो झाड़ फूंक नहीं करवाते, दाग़ नहीं लगवाते, बदफ़ाली नहीं लेते और अपने रब्बे पाक पर भरोसा करते हैं । येह सुन कर ह़ज़रते उ़क्काशा رضی اللہ عنہ खड़े हो गए और अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ कीजिये कि वोह मुझे भी उन में कर दे । चुनान्चे रह़मते आ़लम ने दुआ़ मांगी : या अल्लाह ! इसे भी उन लोगों में से कर दे । दूसरे सह़ाबी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : मेरे लिये भी दुआ़ कीजिये कि अल्लाह मुझे भी उन में से कर दे । इरशाद फ़रमाया : इस में उ़क्काशा तुम पर सबक़त ले गए ।[11] एक रिवायत में यूं इरशाद फ़रमाया : सब से पहले जो लोग दाख़िल होंगे उन के चेहरे चौदहवीं रात के चांद की मानिन्द चमकते होंगे, फिर वोह लोग दाख़िल होंगे जिन के चेहरे आस्मान पर ख़ूब चमकने वाले सितारों की त़रह़ होंगे, येह सुन कर आप खड़े हो गए और अ़र्ज़ गुज़ार हुए : अल्लाह करीम से दुआ़ कीजिये कि वोह मुझे उन में से कर दे, रह़मते आ़लम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने दुआ़ की : ऐ अल्लाह ! उ़क्काशा को उन में से कर दे । किसी ने अ़र्ज़ की : मेरे लिये भी दुआ़ कर दीजिये । इरशाद फ़रमाया : उ़क्काशा तुम पर सबक़त ले गए ।[12]

अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत की ह़िफ़ाज़त में शहादत सिने 9 हिजरी में तुलैह़ा बिन ख़ुवैलिद असदी ने (क़बूले इस्लाम से पहले) दावए नबुव्वत किया था[13] ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने इस की सरकोबी के लिये ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ की सरबराही में एक लश्कर रवाना किया, ह़ज़रते ख़ालिद ने ह़ज़रते उ़क्काशा के साथ ह़ज़रते साबित बिन अक़रम को आगे रवाना किया ताकि तुलैह़ा की कोई ख़बर ला सकें, येह दोनों ह़ज़रात घोड़ों पर सुवार थे, रास्ते में तुलैह़ा और उस के भाई सलमा से टकराव हो गया, ह़ज़रते उ़क्काशा ने तुलैह़ा पर जब कि ह़ज़रते साबित ने सलमा पर ह़म्ला किया, लेकिन सलमा ने ह़ज़रते साबित رضی اللہ عنہ को शहीद कर दिया, क़रीब था कि ह़ज़रते उ़क्काशा رضی اللہ عنہ तुलैह़ा को क़त्ल कर देते इतने में तुलैह़ा चीख़ा : मेरी मदद करो, येह मुझे क़त्ल कर देगा, सलमा पलट कर आप की त़रफ़ बढ़ा यहां तक कि दोनों ने मिल कर आप को घेर लिया और शहीद कर दिया फिर इन दोनों ह़ज़रात की नाशे मुबारका को घोड़ों के सुमों से रौन्ध दिया, मुसलमानों का लश्कर यहां पहुंचा तो उन दोनों मुक़द्दस ह़ज़रात की लाशों को देख कर रन्जीदा और दिल बरदाश्ता हो गया फिर उन दोनों ह़ज़रात की ख़ून आलूद कपड़ों के साथ उसी जगह तज्हीज़ो तक्फ़ीन कर दी गई ।[14] एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप ने 12 हिजरी सरज़मीने नज्द में "बुज़ाख़ा" के मक़ाम पर मुर्तदीन से जंग करते हुए शहादत पाई मगर सह़ीह़ येह है कि आप की शहादत 11 हिजरी में हुई, तुलैह़ा असदी ने आप को अपने भाई के साथ मिल कर शहीद किया था ।[15]

तुलैह़ा असदी का क़बूले इस्लाम बाद में ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ के लश्कर से सामना हुवा और उन से शिकस्त खाने के बाद तुलैह़ा बिन ख़ुवैलिद असदी शाम चले गए फिर तौबा कर के इस्लाम क़बूल कर लिया और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ के हाथ पर बैअ़त की, कई इस्लामी जंगों में शामिल हुए बिल ख़ुसूस जंगे क़ादसिय्या में आप ने अपनी जंगी सलाह़िय्यतों का लोहा मनवाया बिल आख़िर मारिकए निहावन्द 21 हिजरी में शहीद हुए ।[16]

रिवायात नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم के ज़ाहिरी विसाल के वक़्त ह़ज़रते उ़क्काशा बिन मिह़सन की उ़म्र 44 साल थी[17] प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم की अ़त़ा की हुई वोह बा बरकत तलवार विरासतन आप की औलाद दर औलाद के पास रही ।[18] ह़ज़रते अबू हुरैरा और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہم ने आप से रिवायात ली हैं ।[19]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)الاصابہ، 4/440 (2)الاصابہ، 4/440-حلیۃ الاولیاء، 2/15 (3)دلیل الفالحین، 1/269 (4)طبقات ابن سعد، 3/71 (5)بخاری، 4/25، حدیث: 5715 (6)مغازی للواقدی، ص242(7)دلائل النبوۃ للبیہقی،3/98(8)سیرت حلبیہ،2/245-الاستیعاب، 3/189(9)مغازی للواقدی، ص550-طبقات ابن سعد،2/65ملخصاً(10)نہایۃ الارب فی فنون الادب، 17/249 (11)مستدرک، 5/593، حدیث:8328 (12)مستدرک، 4/246، حدیث:5060 (13)الاعلام للزرکلی، 3/230 (14)دیکھئے: طبقات ابن سعد، 3/68- اسد الغابہ،3/93 (15)تاریخ الاسلام للذہبی،3/51-اعلام للزرکلی، 4/244 (16)اعلام للزرکلی، 3/230-اسد الغابہ،3/93(17)الاستیعاب،3/189(18)سیرت حلبیہ،2/245(19)الاستیعاب،3/189۔

वोह जिन के कन्धे पर रसूले करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने अपना दस्ते शफ़्क़त मारा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बच्चों और बड़ों सब के साथ शफ़्क़तो मह़ब्बत का अन्दाज़ निराला होता था, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अन्दाज़ येह भी था कि कभी नसीह़त करने या कोई बात ज़ेहन नशीन करवाने और मुतवज्जेह करने के लिये सामने वाले का कन्धा पकड़ते, कन्धे या दोनों कन्धों के दरमियान हाथ मुबारक मारते और येह मारना बिल्कुल थपथपाने की त़रह़ शफ़्क़तो मह़ब्बत से होता।[1] आइये ! ज़ैल में उन ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم में से चन्द के वाक़िआत पढ़ते हैं जिन के कन्धे या दोनों कन्धों के दरमियान रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते शफ़्क़त मारा यानी उस के ज़रीए थपथपाया :

ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ के दोनों कन्धों के दरमियान अपना दस्ते शफ़्क़त मारा ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ का बयान है कि ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ के दोनों कन्धों के दरमियान हाथ मारते हुए इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! तुझे सात ऐसे फ़ज़ाइल ह़ासिल हैं कि जिन में बरोज़े क़ियामत तुम्हारे साथ कोई मुक़ाबला नहीं कर सकेगा : (1) तुम अल्लाह पर ईमान लाने में (बच्चों में) सब से पहले हो (2) अल्लाह के अ़हद को सब से ज़ियादा पूरा करने वाले (3) अल्लाह के हुक्म को सब से ज़ियादा क़ाइम करने वाले (4) रिआ़या में अ़द्ल करने वाले (5) मसावात के साथ तक़्सीम करने वाले (6) फ़ैसला करने में सब से ज़ियादा साह़िबे बसीरत हो और (7) बरोज़े क़ियामत सब से बुलन्द मर्तबे में होगे।[2]

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के कन्धे पर अपना दस्ते शफ़्क़त मारा ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं एक सफ़र में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थी, हम ने एक जगह क़ियाम किया तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم को आगे रवाना कर दिया और मुझ से दौड़ का मुक़ाबला किया, मेरा बदन दुबला पतला था इस लिये मैं आगे निकल गई, फिर कुछ अ़र्से बाद किसी और सफ़र में ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थी, हम ने एक जगह क़ियाम किया तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم को आगे रवाना कर दिया और मुझ से दौड़ का मुक़ाबला किया, उस वक़्त मैं फ़रबा बदन थी लिहाज़ा ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आगे निकल गए। फिर मेरे कन्धे पर अपना दस्ते शफ़्क़त मारते हुए फ़रमाया कि येह उस (जीत) का बदला हो गया।[3] याद रहे ! येह दौड़ रात के अन्धेरे या

दिन में तन्हाई में थी।[4] लिहाज़ा फ़ी ज़माना होने वाली मर्द व औ़रत की दौड़ (Race) के लिये इस ह़दीस को दलील नहीं बनाया जा सकता।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا के दोनों कन्धों के दरमियान अपना दस्ते शफ़्क़त मारा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं बच्चों के साथ खेल रहा था, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो मैं एक दरवाज़े के पीछे छुप गया, आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और मेरे दोनों कन्धों के दरमियान (प्यार से) अपना दस्ते शफ़्क़त मारा और फ़रमाया : मुआ़विया को मेरे पास बुला कर ले आओ।[5]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا का कन्धा पकड़ा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा कन्धा पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : दुन्या में ऐसे रहो जैसे तुम मुसाफ़िर हो या राहगीर और अपने आप को क़ब्र वालों में से शुमार करो।[6]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا का) कन्धा पकड़ना क़ल्बी फ़ैज़ देने के लिये था क़ल्बी फ़ैज़ के बिग़ैर नसीह़त असर नहीं करती।[7]

ह़ज़रते मिक़्दाम बिन मअ़्दी कर्ब رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के कन्धे पर अपना दस्ते शफ़्क़त मारा

ह़ज़रते मिक़्दाम बिन मअ़्दी कर्ब رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धे पर अपना दस्ते शफ़्क़त मारा और फ़रमाया : ऐ क़ुदैम ! अगर तुम ह़ाकिम, कातिब और सरदार हो कर न मरो तो फ़लाह़ पाओगे।[8]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (ह़ज़रते मिक़्दाम رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के) कन्धे पर हाथ रखना, क़ुदैम तसग़ीर फ़रमा कर ख़िताब करना करम व मह़ब्बत के लिये है।[9]

ह़ज़रते अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के कन्धे पर अपना दस्ते शफ़्क़त मारा

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : क्या आप मुझे आ़मिल नहीं बनाएंगे ? तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धे पर अपना दस्ते शफ़्क़त मारते हुए फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! तुम कमज़ोर हो और येह अमानत है जो क़ियामत के दिन रुस्वाई और शर्मिन्दगी का बाइ़स होगी, अलबत्ता जो इस के ह़ुक़ूक़ अदा करे और इस की ज़िम्मेदारियां पूरी करे (वोह मुस्तस्ना है)।[10]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (ह़ज़रते अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के कन्धे पर) अज़ राहे शफ़्क़तो मह़ब्बत (अपना दस्ते शफ़्क़त मारा) ताकि उन को इस से मन्अ़ फ़रमा देने से रन्ज न हो।(मज़ीद फ़रमाते हैं :) ह़ुकूमत व सल्त़नत ज़ालिम के लिये रुस्वाई है और आ़दिल के लिये नदामत व शर्मिन्दगी, वोह सोचेगा कि मैं ने ह़ुकूमत करने के औक़ात इ़बादत में क्यूं न गुज़ारे।[11]

क़ारिईने किराम ! इन वाक़िआ़त से हमें येह दर्स मिलता है कि हम अपने मातह़तों के साथ घुल मिल कर रहें, मौक़अ़ की मुनासबत से उन्हें मुफ़ीद नसीह़तें करें और उन के साथ शफ़्क़तो मह़ब्बत का बरताव करें ताकि आपस में मह़ब्बत पैदा हो और नफ़रतें दूर हों। अल्लाह पाक हमें हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तालीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1) دیکھئے: مرقاۃ المفاتیح، 7/280، تحت الحدیث:3702 (2) حلیۃ الاولیاء، 1/106، حدیث:204 (3) دیکھئے: سنن کبریٰ للنسائی، 5/304، حدیث:8943 (4) دیکھئے: مراٰۃ المناجیح، 5/96 (5) دیکھئے: مسلم، ص1076، حدیث:6628 (6) دیکھئے: بخاری، 4/223، حدیث:6416-مشکاۃ المصابیح، 2/259، حدیث:5274 (7) مراٰۃ المناجیح، 7/90 (8) دیکھئے: ابو داؤد، 3/183، حدیث:2933 (9) مراٰۃ المناجیح، 5/361 (10) مسلم، ص783، حدیث:4719 (11) مراٰۃ المناجیح، 5/349، 350۔

हज़रते ज़ह्हाक बिन क़ैस और हज़रते अबू जुहैफ़ा رضی اللہ عنہما

दिमश्क़ शहर का एक मन्ज़र

क़ारिईने किराम ! हज़रते ज़ह्हाक बिन क़ैस और हज़रते अबू जुहैफ़ा رضی اللہ عنہما का शुमार भी कमसिन सहाबए किराम में होता है, आइये ! इन के बारे में पढ़ कर अपने दिलों को महब्बते सहाबए किराम से रौशन करते हैं :

हज़रते ज़ह्हाक बिन क़ैस رضی اللہ عنہ

आप رضی اللہ عنہ की विलादत नबिय्ये करीम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم के विसाले ज़ाहिरी से 7 साल पहले 3 हिजरी में हुई,[1] आप हज़रते उमैमा के बेटे और फ़ातिमा बिन्ते क़ैस के छोटे भाई हैं ।[2]

रिवायाते अहादीस : आप رضی اللہ عنہ से कई अहादीस मरवी हैं ।[3]

दुन्या व आख़िरत में सईद व शक़ी : एक रिवायत में आप رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स अपनी क़ौम में आए और लोग उस को ख़ुश आमदीद कहें तो जिस दिन अल्लाह पाक की बारगाह में जाएगा वहां भी उस को ख़ुश आमदीद कहा जाएगा । और जो शख़्स अपनी क़ौम में आए और लोग उस की बुराई करें तो क़ियामत के दिन भी उस का हश्र बुरा होगा ।[4]

विसाल : हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رضی اللہ عنہ तक़रीबन 7 साल के थे, आप رضی اللہ عنہ ने 61 साल की उम्र में 15 ज़ुल हिज्जा 64 हिजरी को वाक़िअए मरजे राहित़ में जामे शहादत नोश फ़रमाया ।[5]

हज़रते अबू जुहैफ़ा वहब बिन अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ

आप رضی اللہ عنہ का शुमार कमसिन सहाबा में होता है, आप ने हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم का कलाम शरीफ़ सुना और उसे रिवायत भी किया ।[6]

तादादे रिवायात : आप से 45 अहादीस मरवी हैं ।[7]

उ़लमा से बातें पूछा करो : एक रिवायत में आप رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बड़ों के पास बैठा करो, उ़लमा से बातें पूछा करो और हिक्मत वालों से मेल जोल रखो ।[8]

विसाल : हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رضی اللہ عنہ बच्चे थे, बालिग़ नहीं हुए थे, आप رضی اللہ عنہ ने सिने 72 हिजरी में वफ़ात पाई ।[9]

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 2/297 (2)معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، 3/63 (3)اسد الغابہ، 3/49(4) معجم کبیر، 8/298، حدیث:8136(5)الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 2/298(6)الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 4/186(7)تھذیب الاسماء واللغات، 2/489 (8) معجم کبیر، 22/125، حدیث: 324 (9)تھذیب الاسماء واللغات، 2/489۔

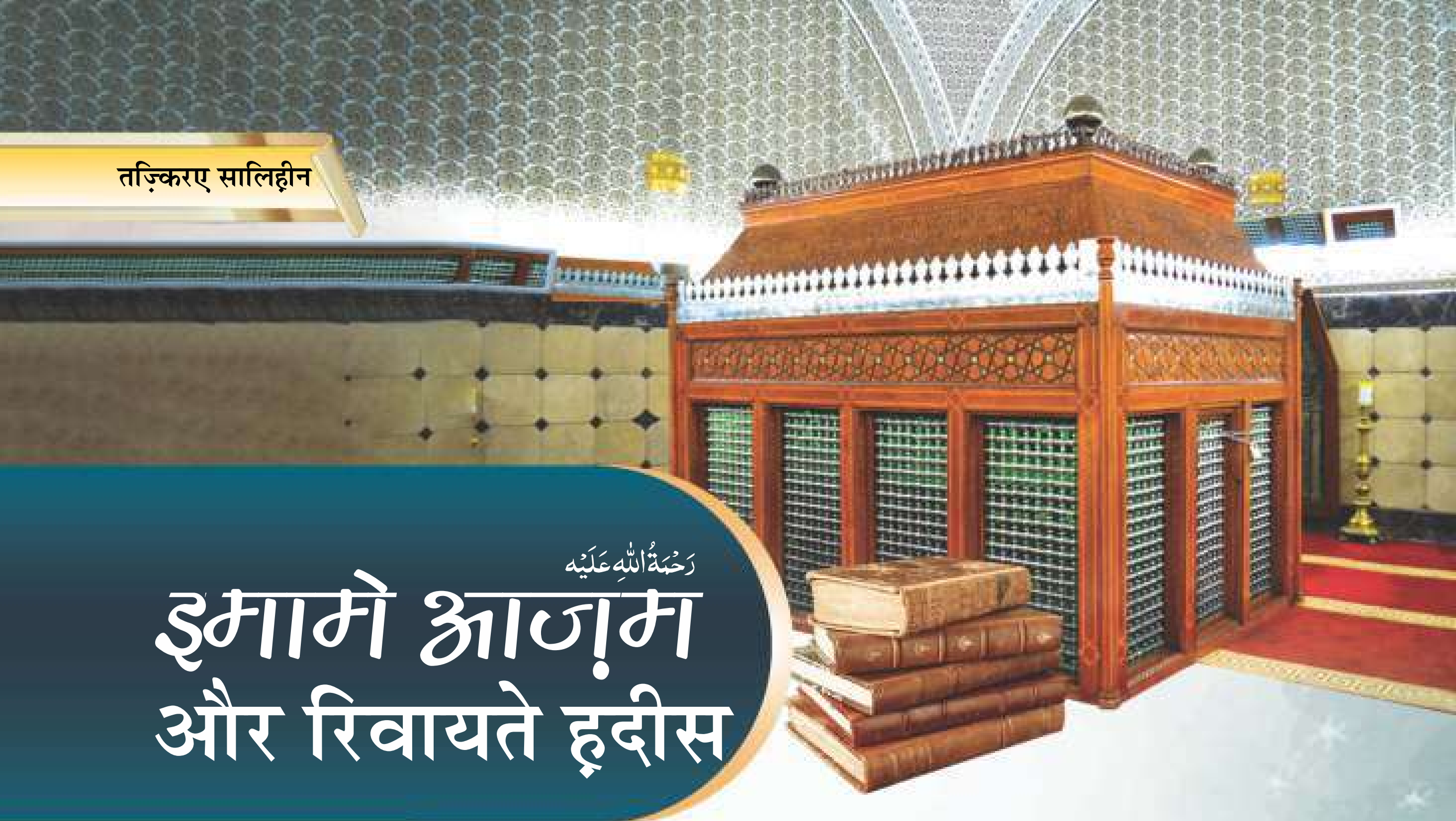

इमामे आज़म رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ और रिवायते ह़दीस

अल्लाह पाक ने आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुरआने अ़ज़ीम जैसी लारैब किताब दे कर फ़रीज़ए रिसालत की तक्मील के लिये इस दुन्या में मबऊ़स फ़रमाया। कुरआने करीम की तालीमात को आसान बनाने के लिये अह़ादीसे मुस्त़फ़ा को बत़ौरे तशरीहे़ कुरआन मुक़र्रर फ़रमाया, ह़दीस की ह़िफ़ाज़त के लिये बहुत से उ़लमा व मुह़द्दिसीन को मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से ह़दीसे नबवी की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई। जिन ख़ुश नसीब लोगों को अह़ादीसे नबविय्या की ख़िदमत का मौक़अ़ मयस्सर आया उन में एक बहुत बड़ा नाम इमामे आज़म, मुह़द्दिसे आज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ का भी है।

इल्मो अ़मल, ज़ोहदो तक़्वा, रियाज़त व इबादत और फ़ह्मो फ़िरासत की त़रह़ आप की शाने रिवायते ह़दीस को भी मुसलमान दिल से तस्लीम करते हैं। जैसा कि

अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस[1] ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ इमामे आज़म رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ के हम ज़माना और आप की बुलन्द शान के मोतरिफ़ थे। इमामे आज़म رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ भी उन की क़द्र करते थे। येह इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : इमाम अबू ह़नीफ़ा इल्म ह़ासिल करने के बहुत शौक़ीन और बुराइयों की रोक थाम करने वाले थे। उसी ह़दीस को लेते थे जो नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सिह़्ह़त को पहुंच चुकी हो, नासिख़ व मन्सूख़ की ख़ूब पहचान रखते थे और वोह क़ाबिले एतिमाद रावियों की रिवायात और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आख़िरी अ़मल की तह़क़ीक़ व जुस्तजू में रहते थे।[2]

इन्तिख़ाबे रिवायत में इमामे आज़म की एह़तियात इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शारानी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ मीज़ानुश्शरीअ़तुल कुब्रा में फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक ने मुझ पर एह़सान फ़रमाया कि मैं ने इमामे आज़म की मसानीदे सलासा का मुत़ालआ़ किया। मैं ने उन में देखा कि इमामे आज़म सिक़ह और सादिक़ ताबेईन के सिवा किसी से रिवायत नहीं करते जिन के ह़क़ में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैरुल कुरून होने की शहादत दी, जैसे अस्वद, इल्क़िमा, अ़त़ा, इकरिमा, मुजाहिद, मकह़ूल और ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِمۡ वग़ैरा। लिहाज़ा इमामे आज़म और हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान तमाम रावी आ़दिल, सिक़ह और मश्हूर हैं जिन की त़रफ़ किज़्ब की निस्बत भी नहीं की जा सकती और न वोह कज़्ज़ाब हैं।[3]

एक दिन इमामे आज़म رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ मन्सूर के दरबार में तशरीफ़ ले गए, वहां ईसा बिन मूसा भी मौजूद था। उस ने मन्सूर से कहा : येह इस ज़माने के सब से बड़े आ़लिमे दीन हैं, मन्सूर ने इमामे आज़म رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ को मुख़ात़ब कर के कहा : नोमान ! आप ने इल्म कहां से सीखा ? फ़रमाया :

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के तलामिज़ा से और उन्हों ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर से। नीज़ शागिर्दाने मौला अ़ली से उन्हों ने मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से। इसी त़रह़ तलामिज़ा इब्ने मसऊ़द से। वोह बोला : आप ने बड़ा क़ाबिले एतिमाद इ़ल्म ह़ासिल किया।[4]

इमाम अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ न सिर्फ़ इमामे आज़म हैं बल्कि मुह़द्दिसे आज़म भी हैं। आप ख़ुद फ़रमाते हैं :

“عِنْدِی صَنَادِیْقُ الْحَدِیْث، مَا اَخْرَجْتُ مِنْھَا اِلَّا الْیَسِیْرَ الَّذِیْ یُنْتَفَعُ بِہٖ”

यानी मेरे पास ह़दीस के बहुत से भरे हुए सन्दूक़ हैं मगर मैं ने उन में से थोड़ी ह़दीसें निकाली हैं जिन से लोग नफ़्अ़ उठाएं।[5]

इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने ज़माने के मुह़द्दिसीन से ऊंची शान और बुलन्द रुत्बे के ह़ामिल थे। इस बात का एतिराफ़ न सिर्फ़ बाद के लोगों ने किया बल्कि आप के हम ज़माना मुह़द्दिसीन ने भी किया है। चुनान्चे मश्हूर मुह़द्दिस इमाम मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

“طَلَبْتُ مَعَ اَبِیْ حَنِیْفَۃَ الْحَدِیْثَ فَغَلَبَنَا” यानी मैं ने इमाम अबू ह़नीफ़ा के साथ “**इ़ल्मे ह़दीस**” ह़ासिल किया तो वोह हम पर ग़ालिब रहे।[6]

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ चूंकि ताबेई हैं इस लिये आप को कई सह़ाबए किराम से रिवायते ह़दीस का शरफ़ ह़ासिल है।[7]

सह़ाबिये रसूल की ज़ियारत और समाए ह़दीस

इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं जब अपने वालिदे गिरामी के साथ ह़ज पर गया तो वहां मैं ने एक शख़्स को देखा जिन के इर्द गिर्द लोग जम्अ़ थे, मैं ने वालिदे मोह़तरम से पूछा येह कौन है ? उन्हों ने बताया : येह सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन जज़्अ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं। मैं ने पूछा : उन के पास ऐसी कौन सी चीज़ है कि लोगों ने घेरा डाल रखा है ? फ़रमाया : उन के पास नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हुई अह़ादीसे मुबारका हैं। येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ आगे बढ़े और सह़ाबिये रसूल से बराहे रास्त एक ह़दीसे पाक सुनने का शरफ़ ह़ासिल किया।[8] और मैं ने उन से सुना कि वोह कह रहे थे :

“قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ: مَنْ تَفَقَّہَ فِیْ دِیْنِ اللّٰہِ کَفَاہُ
اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ وَرَزَقَہُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ”

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने दीन की समझ ह़ासिल कर ली उस की फ़िक्रों का इ़लाज अल्लाह पाक करता है और उस को इस त़रह़ पर रोज़ी देता है कि किसी को वहमो गुमान भी नहीं होता।[9]

वह़दानिय्याते इमामे आज़म

किसी भी मुह़द्दिस का ह़दीस में मक़ामो मर्तबा जांचने के लिये मरविय्यात की सनदी ह़ैसिय्यत और ह़दीस के बारे में एह़तियात़ वग़ैरा की बहुत अहमिय्यत है। इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के रिवायते ह़दीस में मक़ामो मर्तबे का अन्दाज़ा इस बात से ब ख़ूबी लगाया जा सकता है कि आप की रिवायत कर्दा बाज़ अह़ादीस वह़दानी (सिर्फ़ एक वासित़े से रिवायत कर्दा) हैं जब कि दीगर बड़े बड़े अइम्मए ह़दीस को येह शरफ़ ह़ासिल नहीं है। जिन मुह़द्दिसीन का अपना भी बड़ा नाम है और उन की कुतुब को भी बड़ी शोहरत ह़ासिल है उन की भी सब से आ़ली सनद सलासी (तीन वासित़ों वाली) है। ख़ुद इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ जिन की किताब “**सह़ीह़ बुख़ारी**” को अह़ादीस की कुतुब में सब से अफ़्ज़ल कहा जाता है, उन की सब से आ़ली सनद सलासी है। इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की रिवायते ह़दीस पर बात की जाए तो इस ह़वाले से अ़ज़ीम मुह़द्दिस यह़्या बिन मुईन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इमाम अबू ह़नीफ़ा ह़दीस में सिक़ह थे। सिर्फ़ उस ह़दीस को बयान करते थे जो उन को अच्छी त़रह़ मह़फ़ूज़ होती थी।[10]

अक़्वाल

इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की मुह़द्दिसिय्यत का बे शुमार लोगों ने एतिराफ़ किया है, चन्द अकाबिरीन के अक़्वाल मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

1 इमाम बुख़ारी और इमाम अबू दावूद के उस्ताज़ अ़ली बिन जअ़्द फ़रमाते हैं : اَبُوْحَنِیْفَۃَ اِذَا جَاءَ بِالْحَدِیْثِ جَاءَ بِہٖ مِثْلَ الدُّرِّ यानी इमाम अबू ह़नीफ़ा जब भी ह़दीस पेश करते हैं वोह मोती की त़रह़ पेश करते हैं।

2 ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं “اَوَّلُ مَنْ صَیَّرَنِیْ مُحَدِّثًا اَبُوْحَنِیْفَۃَ” यानी मुझे मुह़द्दिस बनाने वालों में सब से पहली शख़्सिय्यत, इमाम अबू ह़नीफ़ा की ज़ाते अक़्दस है।[11]

3 यज़ीद बिन हारून رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ कहते हैं : “کَانَ اَبُوْحَنِیْفَۃَ نَقِیًّا...اَحْفَظَ اَھْلَ زَمَانِہٖ” यानी इमाम अबू ह़नीफ़ा परहेज़गार. . . और अपने ज़माने के बहुत बड़े ह़ाफ़िज़े ह़दीस थे।[12]

---

(1) تاریخ بغداد، 9/154، 160 (2) مناقبِ امام اعظم للکردری، 2/10، اخبار ابی حنیفۃ واصحابہ، ص75 (3) میزان الشریعہ للشعرانی، 1/82 (4) تاریخ بغداد، 13/335 (5) مناقب الامام الاعظم للموفق، 1/95 (6) مناقب الامام ابی حنیفۃ وصاحبیہ، ص43 (7) الخیرات الحسان، ص33 (8) اخبار ابی حنیفۃ واصحابہ، ص18 (9) مسند الامام ابی حنیفۃ للاصبہانی، ص25 (10) سیر اعلام النبلاء، 6/532 (11) وفیات الاعیان، 2/393 (12) اخبار ابی حنیفہ واصحابہ، ص48۔

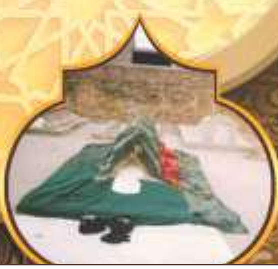

मज़ार ख़्वाजा सय्यिद लाल शाह हमदानी رحمۃ اللہ علیہ

मज़ार इमाम हबीब अह़मद बिन ज़ैन ह़बशी अ़लवी رحمۃ اللہ علیہ

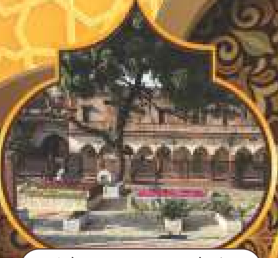

मज़ार मुफ़्तिये आज़म शाह मुहम्मद मज़हरुल्लाह देहलवी رحمۃ اللہ علیہ

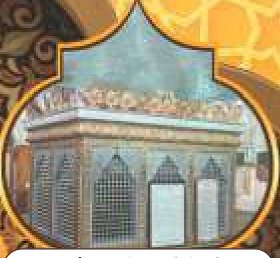

मज़ार ह़ज़रते ह़ुज्र बिन अ़दी किन्दी رضی اللہ عنہ

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म इस्लामी साल का आठवां महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 11 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

सह़ाबए किराम علیہم الرضوان

शुहदाए जंगे जिसर : ह़ज़रते अबू उ़बैद बिन मसऊ़द सक़फ़ी رضی اللہ عنہ की कमान्ड में शाबान 13 हि. को मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के दरमियान क़ुसुन्नातिफ़ के मक़ाम पर जंग हुई, इस में चार हज़ार मुसलमान शहीद हुए, इस जंग में मुसलमान दरियाए फ़ुरात के मग़रिबी अ़लाक़े मरौह़ा से एक पुल (जिसर) के ज़रीए मशरिक़ी अ़लाक़े क़ुसुन्नातिफ़ गए थे, इस लिये उस को जंगे जिसर, जंगे क़ुसुन्नातिफ़ और जंगे मरोह़ा भी कहते हैं।[1]

1 हुजरुल ख़ैर ह़ज़रते ह़ुज्र बिन अ़दी किन्दी رضی اللہ عنہ सह़ाबी, राविये ह़दीस, फ़ाज़िले कूफ़ा, मुस्तजाबुद्दावात, मुजाहिद और नेक व पारसा शख़्सिय्यत के मालिक थे, जंगे क़ादसिय्या, जमल व सिफ़्फ़ीन में शिर्कत की, शाबान 51 हि. में शाम के मक़ाम मरजे उ़ज़राअ (मौजूदा नाम अ़दरा, सूबा रीफ़ दिमश्क़) में शहीद किये गए।[2]

औलियाए किराम رحمہم اللہ السلام

2 शैख़ शत़ा दिमयात़ी رحمۃ اللہ علیہ शत़ा ताबेई के नाम से मश्हूर हैं, येह ह़ाकिम दिमयात़ हामूक / बामरक के बेटे थे, उन्हों ने सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते उ़मैर बिन वहब जुमह़ी क़ुरैशी رضی اللہ عنہ के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया और इन के साथ मिल कर जंग में मसरूफ़ हो गए, उन की शहादत 15 शाबान 21 हि. को हुई, दिमयात़ से पांच किलो मीटर के फ़ासिले पर दफ़्न किये गए। बाद में मस्जिद व मज़ार की तामीर हुई। हर साल इन का उ़र्स 15 शाबान को मुन्अ़क़िद होता है।[3]

3 इमाम ह़बीब अह़मद बिन ज़ैन ह़बशी अ़लवी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश 1069 हि. को ग़र्फ़ा, ह़ज़्र मौत, यमन में हुई और 19 शाबान 1144 हि. को विसाल फ़रमाया, ह़ौत़ा, अह़मद बिन ज़ैन, यमन में मज़ार एक गुम्बद में ज़ियारत गाहे आ़म है। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिमे बा अ़मल, आ़रिफ़ बिल्लाह, वलिय्ये कामिल, दाइये कबीर, मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा, उ़स्ताज़ुल उ़लमा, इमाम व फ़क़ीह, मक़ामे सिद्दीक़ुल कुब्रा पर फ़ाइज़ और यमन के अकाबिर उ़लमा व मशाइख़ से थे। 17 मसाजिद तामीर करने की वज्ह से अबुल मसाजिद कहलाए। 18 कुतुब में अर्रिसालतुल जामिआ़ को बहुत शोहरत ह़ासिल हुई।[4]

4 ख़्वाजा सय्यिद लाल शाह हमदानी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश दन्दा शाह में हुई, ख़्वाजा अह़मद दीन अंगवी से उ़लूमो फ़ुनून में महारत ह़ासिल की, बैअ़त का शरफ़ ख़्वाजा

दोस्त मुह़म्मद क़न्धारी और ख़िलाफ़त ख़्वाजा मुहम्मद उ़स्मान दामानी से ह़ासिल हुई, आप आ़लिमे बा अ़मल और बा करामत वलिय्ये कामिल थे। आप का विसाल 7 शाबान 1313 हि. को हुवा, मज़ार जाए पैदाइश में है।[5]

5 मुस्तफ़्तिये आला ह़ज़रत, नेमतुल औलिया ह़ज़रते शाह नेमत अ़ली ख़ाकी बाबा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 1287 हि. को मौज़अ़ ददरी ज़िल्अ़ सीतामढ़ी, बिहार हिन्द में हुई, आप पाबन्दे शरीअ़त, सच्चे मज्ज़ूब, मुतसल्लिब सुन्नी, साह़िबे करामत और मर्जए़ उ़लमा व अ़वाम थे, आप का विसाल 13 शाबान 1350 हि. को नमाज़े फ़ज्र के आख़िरी सज्दे में हुवा। मज़ार बनाटोला, इस्लाम पुर, मिन्हार, बिहार, हिन्द में है।[6]

उ़लमाए इस्लाम رحمہم اللہ السلام

6 इमाम अ़ली बिन ह़सन बिन शक़ीक़ अ़बदी बसरी मरवज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इमाम सुफ़्यान बिन उ़यैना और इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक जैसे अकाबिरीन के शागिर्द, मुह़द्दिसे कबीर, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और इमाम बुख़ारी के शैख़ हैं। आप ने 78 साल की उ़म्र पा कर माहे शाबान सिन 211 या 212 हि. में मक़ामे मर्व में विसाल फ़रमाया।[7]

7 इमाम मक्की बिन इब्राहीम तमीमी ह़न्ज़ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 126 हि. में हुई, आप इमाम जाफ़रे सादिक़ और इमामे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا के शागिर्द, जय्यिद आ़लिमे दीन, ह़दीस के इमाम और मशाइख़े इमाम बुख़ारी से थे, आप ने 60 ह़ज किये, 10 साल बैतुल्लाह में ख़िदमत कर के गुज़ारे और 17 ताबेईन से ह़दीस सुन कर लिखी, आप का विसाल शाबान 216 हि. में बल्ख़, ईरान में हुवा।[8]

8 हाफ़िज़ुल ह़दीस इमाम अ़ब्दान ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़स्मान बिन जबला अज़्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 140 हि. के बाद हुई और आप ने 76 साल की उ़म्र पा कर शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 221 हि. में विसाल फ़रमाया। आप इमामुल ह़दीस, मर्जए़ मुह़द्दिसीन, उस्ताज़ुल उ़लमा और जज़्बए ग़म गुसारी मालामाल से थे, आप इमाम बुख़ारी के मशाइख़ में से हैं।[9]

9 शैख़ुल मशरिक़, सय्यिदुल ह़ुफ़्फ़ाज़ इमाम इस्ह़ाक़ बिन राहुवया ह़न्ज़ली मरवज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 161 हि. में हुई और 15 शाबान 238 हि. को नैशापुर, ईरान में विसाल फ़रमाया। आप ने ह़ुसूले इल्मे ह़दीस के लिये इराक़, ह़िजाज़े मुक़द्दस, यमन और शाम का सफ़र किया, वापस जा कर नैशापुर में इशाअ़त में मसरूफ़ रहे। इमाम बुख़ारी ने आप से अह़ादीस समाअ़त करने का शरफ़ पाया। किताब मस्नदे इस्ह़ाक़ बिन राहविया आप की पहचान है।[10]

10 शैख़ुल क़ुर्रा अ़ब्दुल ख़ालिक़ मनूफ़ी अज़्हरी सुम्म देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 22 ज़ुल ह़िज्जा 959 हि. को मिस्र में हुई और 27 शाबान 1078 हि. को हिन्द में वफ़ात पाई, मज़ार मुबारक अह़मदाबाद गुजरात हिन्द में है, आप फ़ाज़िले जामिअ़तुल अज़्हर क़ाहिरा, जय्यिद ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, बेहतरीन क़ारी और दीगर उ़लूम के साथ फ़न्ने क़िराअत पर उ़बूर ह़ासिल था। उ़लमाए हिन्द ने आप से सनदे क़िराअत ह़ासिल की।[11]

11 मुफ़्तिये आज़म शाह मुह़म्मद मज़्हरुल्लाह देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नसबन फ़ारूक़ी, मस्लकन ह़नफ़ी और मशरबन नक़्शबन्दी थे, आप की पैदाइश 1303 हि. को देहली में हुई और यहीं 14 शाबान 1386 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार दरगाह मीरां शाहनानो, वस्त़ सह़न मस्जिद फ़त्ह़पुरी देहली में है, आप माहिर उ़लूमे इस्लामिया, वसीउ़ल मुत़ालआ़, मुफ़्तिये इस्लाम, साह़िबे तसानीफ़, मुत्तबए़ सुन्नत, ख़लीफ़ए शाह रुक्नुद्दीन अल्वरी और शैख़े त़रीक़त थे। कुतुब में तफ़्सीर मज़्हरुल क़ुरआन और मज़्हरुल फ़तावा मश्हूर हैं।[12]

---

(1)تاریخ طبری،3/146تا158-اسد الغابۃ،6/217(2)الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ،2/32-مستدرک للحاکم،4/588،590(3)المواعظ والاعتبار بذکر الخطط والآثار،1/416،417،وغیرہ(4)الرسالۃ الجامعۃ،ص5تا15،وکی پیڈیا(5)انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام،2/223(6)انوار خاکی،ص26،49،50،52(7)تہذیب الکمال،7/269،271-اسامی شیوخ البخاری للصغانی،ص162(8)تذکرۃ الحفاظ للذہبی،1/268(9)سیر اعلام النبلاء،9/42تا44(10)تہذیب الکمال،1/360،367-تذکرۃ الحفاظ للذھبی،2/17-سیر اعلام النبلاء،9/547(11)امتاع الفضلاء بتراجم القراء،2/160-تذکرۂ قاریان ہند،ص178،179-تواریخ آئینہ تصوف،ص218
(12)فتاویٰ مظہریہ،ص29تا41۔

नए लिखारी
(New Writers)

मिसालों की कुरआनी हिक्मतें

मुहम्मद उ़स्मान
(दर्जए साबिआ़ जामिअ़तुल मदीना)

कुरआने मजीद सरापा हिक्मत है, अल्लाह पाक ने इन्सानों को भलाई पर क़ाइम रखने के लिये और ज़िन्दगी में इ़ब्रत सीखने के लिये कुरआने करीम में कई मिसालें बयान की हैं उन में हर मिसाल अपने अन्दर कई असरार और हिक्मतें रखती है। येह इन्सानी फ़ित़रत है कि जब वोह अपनी आंखों से किसी चीज़ का मुशाहदा करता है तो यक़ीन की आला सत़ह़ पर चला जाता है। इस लिये अल्लाह पाक ने ऐसी मिसालें बयान की हैं जिस से इन्सान या तो बराहे रास्त मुतआ़रिफ़ होता है या बिल वासित़ा उन की ख़बर रखता है अल्लाह पाक ने कुरआन में जो अमसाल बयान की हैं वोह इस त़रह़ जामेअ़ हैं कि तारीखे़ इन्सानिय्यत के तमाम अदवार के लिये उन में इ़ब्रतें पोशीदा हैं हर ज़माने के उ़लमाए किराम उन मिसालों से अपने ज़माने के लोगों की राहनुमाई के लिये दुरूस व इ़ब्रतें बयान करते आ रहे हैं। आइये ! कुरआने मजीद की चन्द मिसालों की हिक्मतें मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

1 ग़ौरो फ़िक्र करना अल्लाह पाक ने कुरआने मजीद में मिसालें बयान फ़रमाईं ताकि लोग उस में ग़ौरो फ़िक्र करें जैसा कि इरशादे रब्बे करीम है :

﴿وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ(۲۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह मिसालें लोगों के लिये हम बयान फ़रमाते हैं कि वोह सोचें।(پ28، الحشر:21)

2 नसीह़त ह़ासिल करें अल्लाह पाक लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है ताकि वोह नसीह़त ह़ासिल करें और ईमान लाएं क्यूंकि मिसालों से बात अच्छी त़रह़ दिल में उतर जाती है। जैसा कि इरशादे रब्बे करीम है :

﴿وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ(۲۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वोह समझें। (پ13، ابراھیم:25)

3 कुफ़्फ़ारे कुरैश की जहालत को बयान करना

कुफ़्फ़ारे कुरैश ने मज़ाक़ उड़ाते हुए बत़ौरे त़न्ज़ कहा था कि अल्लाह मख्खी और मकड़ी की मिसालें बयान फ़रमाता है। कुरआने करीम में उन का रद कर दिया गया कि वोह जाहिल हैं जो मिसाल बयान करने की हिक्मत को नहीं जानते, क्यूंकि मिसाल से मक़्सूद तफ़्हीम होती है और जैसी चीज़ हो उस के लिये वैसी ही मिसाल बयान करना हिक्मत के तक़ाज़े के ऐन मुत़ाबिक़ है। जैसा कि इरशादे रब्बे करीम है :

﴿وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ(۴۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह मिसालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं और उन्हें नहीं समझते मगर इ़ल्म वाले।
(پ20، العنکبوت:43)

4 मुनाफ़िक़ों को गुमराह करना और मुसलमानों को हिदायत देना नुज़ूले कुरआन का अस्ल मक़्सद तो हिदायत है लेकिन चूंकि कुरआनी मिसालों के ज़रीए़ बहुत से लोग गुमराह होते हैं जिन की अ़क़्लों पर जहालत का ग़लबा होता है और कलाम के बिल्कुल माक़ूल, मुनासिब और मौक़अ़ मह़ल के मुत़ाबिक़ होने के बा वुजूद वोह इस का इन्कार करते हैं और इन्ही मिसालों के ज़रीए़ अल्लाह पाक बहुत से लोगों को हिदायत देता है जो ग़ौर व तह़क़ीक़ के आ़दी होते हैं और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं

कहते । जैसा कि इरशादे रब्बे करीम है : ﴿فَاَمَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا فَیَعۡلَمُوۡنَ اَنَّهُ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّهِمۡ ۚ وَاَمَّا الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا فَیَقُوۡلُوۡنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ یُضِلُّ بِهٖ كَثِیۡرًا ۙ وَّیَهۡدِیۡ بِهٖ كَثِیۡرًا ؕ وَمَا یُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا الۡفٰسِقِیۡنَ ﴿۲۶﴾﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो ईमान लाए वोह तो जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है रहे काफ़िर वोह कहते हैं ऐसी कहावत में अल्लाह का क्या मक़्सूद है अल्लाह बहुतेरों को उस से गुमराह करता है और बहुतेरों को हिदायत फ़रमाता है और इस से उन्हें गुमराह करता है जो बे हुक्म हैं । (پ1،البقرۃ:26)

अल्लाह पाक हमें क़ुरआने करीम पढ़ कर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़र्फ़ "اَلَا" के साथ तम्बीह फ़रमाना

अ़ली हुसैन

(दर्जए राबिआ़ जामिअ़तुल मदीना कन्ज़ुल ईमान)

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी मुबारक में तम्बीह व नसीह़त के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ नज़र आते हैं, जिन में एक अहम अन्दाज़ येह भी है कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "اَلَا" के लफ़्ज़ के ज़रीए अहम बातों की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई । लफ़्ज़ "اَلَا" अ़रबी ज़बान में ख़बरदार करने, तम्बीह करने या किसी बात पर ख़ास त़ौर पर तवज्जोह दिलाने के लिये इस्तिमाल होता है । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब कोई ऐसी बात बयान फ़रमाते जिसे उम्मत के लिये ख़ास त़ौर पर याद रखना ज़रूरी होता तो अक्सर "اَلَا" का इस्तिमाल फ़रमाते ताकि सुनने वाले पूरी तवज्जोह और इन्हिमाक से बात को सुनें, समझें और उस पर अ़मल करें । आइये ! चन्द अह़ादीसे मुबारका पढ़ते हैं :

दिल की इस्लाह़ की ताकीद फ़रमाई

दिल की ह़ालत बयान करते हुए रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلَا وَاِنَّ فِی الْجَسَدِ مُضْغَةً اِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ وَاِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهُ اَلَا وَهِیَ الْقَلْبُ

यानी ख़बरदार ! जिस्म में एक गोश्त का लोथड़ा है, अगर वोह दुरुस्त हो तो पूरा जिस्म दुरुस्त होता है, और अगर वोह बिगड़ जाए तो पूरा जिस्म बिगड़ जाता है, सुन लो ! वोह दिल है । (بخاری،1/33،حدیث:52)

इस ह़दीस में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लफ़्ज़ "اَلَا" को दो मरतबा इस्तिमाल फ़रमा कर उम्मत को दिल की पाकीज़गी और इस्लाह़ की ताकीद फ़रमाई ।

मा तह़तों के बारे में ताकीद फ़रमाई

एक मौक़अ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम लोगों को मा तह़तों के बारे में ताकीद करते हुए इरशाद फ़रमाया : اَلَا فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ यानी सुन लो ! तुम में से हर एक निगहबान है और हर एक से उस की रिआ़या (मा तह़तों और मह़कूम लोगों) के बारे में पुरसिश (यानी पूछ गछ) होगी ।(بخاری،2/159،حدیث:2554)

यहां पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "اَلَا" का इस्तिमाल कर के शिद्दत के साथ लोगों को मा तह़तों के साथ अच्छा बरताव करने की ताकीद फ़रमाई है कि तुम से तुम्हारे मा तह़तों के बारे में पूछा जाएगा लिहाज़ा अपने मा तह़तों के साथ अच्छा बरताव करो ।

दीने इस्लाम में मुसावात क़ाइम रखने की ताकीद फ़रमाई

ह़िज्जतुल वदाअ़ के ख़ुत़्बे में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दीने इस्लाम में मुसावात यानी बराबरी की ताकीद फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया :

یَا اَیُّهَا النَّاسُ اَلَا اِنَّ رَبَّكُمْ وَاحِدٌ وَاِنَّ اَبَاكُمْ وَاحِدٌ اَلَا لَا فَضْلَ لِعَرَبِیٍّ عَلٰی اَعْجَمِیٍّ وَلَا لِعَجَمِیٍّ عَلٰی عَرَبِیٍّ وَلَا لِاَحْمَرَ عَلٰی اَسْوَدَ وَلَا لِاَسْوَدَ عَلٰی اَحْمَرَ اِلَّا بِالتَّقْوٰی यानी ऐ लोगो ! सुन लो ! बेशक तुम्हारा रब एक है और बेशक तुम्हारा बाप (यानी ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام) एक है । ख़बरदार ! किसी अ़रबी को किसी अ़जमी पर और किसी अ़जमी को किसी अ़रबी पर, किसी गोरे को किसी काले पर और किसी काले को किसी गोरे पर कोई फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़्वे के सबब से । (مسند امام احمد،9/127،حدیث:23548)

यहां नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "لَا" का इस्तिमाल फ़रमा कर मुसलमानों को आपस में मुसावात क़ाइम रखने की ताकीद फ़रमाई ताकि मुसलमानों में तकब्बुर व तफ़ाख़ुर ख़त्म हो और भाई चारा परवान चढ़े ।

इन अह़ादीस के इलावा भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई अह़ादीस में लफ़्ज़ "لَا" के साथ तम्बीहात फ़रमाईं हैं जिन में ज़िन्दगी के हर शोबे से मुतअ़ल्लिक़ हिदायात शामिल हैं, जिन का मक़्सद मुसलमानों की ज़िन्दगियों को बेहतर और पाकीज़ा बनाना है ।

अल्लाह पाक हमें इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मय्यित के हुक़ूक़

अ़ब्दुल मन्नान अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म)

जिस त़रह़ ज़िन्दगी में लोगों के एक दूसरे पर हुक़ूक़ होते हैं जैसे कि औलाद पर उन के वालिदैन के हुक़ूक़, वालिदैन के औलाद पर हुक़ूक़, इसी त़रह़ मरने के बाद भी मुर्दों के हुक़ूक़ ज़िन्दों पर होते हैं जैसा कि उन के जनाज़े को कन्धा देना, उन का नमाज़े जनाज़ा अदा करना, उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करना और उन के लिये सदक़ए जारिया वाले काम करना वग़ैरा । मय्यित के चन्द मज़ीद हुक़ूक़ तफ़्सील के साथ ज़िक्र किये जा रहे हैं मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 अच्छी बात कहना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम बीमार या मय्यित के पास आओ तो अच्छी बात बोलो (यानी दुआ़ करो) इस लिये कि फ़रिश्ते तुम्हारी दुआ़ओं पर आमीन कहते हैं ।(فیضان ریاض الصالحین، 6/568)

2 मय्यित के लिये दुआ़ करना नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम मय्यित पर नमाज़ पढ़ो तो उस के लिये ख़ुलूस के साथ दुआ़ करो ।(فیضان ریاض الصالحین، 6/613)

3 मय्यित को कन्धा देना हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जनाज़े के साथ गया और उसे तीन बार कन्धा दिया उस ने मय्यित का ह़क़ अदा कर दिया जो उस पर था । (مشکاۃ المصابیح، 1/319، حدیث:1670)

4 मय्यित के ग़ुस्ल व कफ़न और दफ़्न में जल्दी करना ग़ुस्ल व कफ़न और दफ़्न में जल्दी चाहिये कि ह़दीस में इस की बहुत ताकीद आई है ।(دیکھئے: الجوہرۃ النیرۃ، ص131)

5 मय्यित का नमाज़े जनाज़ा पढ़ना हर मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए अगर्चे वोह कैसा ही गुनाहगार व मुर्तकिबे कबाइर हो । (बहारे शरीअ़त, 1 / 827)

6 मय्यित पर नौह़ा न करना आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नौह़ा करने वाली और सुनने वाली पर लानत फ़रमाई ।(مشکاۃ المصابیح، 1/328، حدیث:1732)

7 बाल न काटना मय्यित की दाढ़ी या सर के बाल में कंघा करना या नाख़ुन तराशना या किसी जगह के बाल मूंडना या कतरना या उखाड़ना, ना जाइज़ व मकरूहे तह़रीमी है बल्कि हुक्म येह है कि जिस ह़ालत पर है उसी ह़ालत में दफ़्न कर दें, हां अगर नाख़ुन टूटा हो तो ले सकते हैं और अगर नाख़ुन या बाल तराश लिये तो कफ़न में रख दें । (तज्हीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा, स. 91)

8 पर्दा पोशी मय्यित के हुक़ूक़ में से एक येह भी है कि उस के उ़यूब को छुपाया जाए जिस त़रह़ के हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मय्यित को ग़ुस्ल दिया और उस की पर्दा पोशी की तो अल्लाह पाक 40 मरतबा उस के गुनाह को बख़्शेगा ।(مستدرک للحاکم، 1/677، حدیث:1347)

9 ईसाले सवाब मुर्दा क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की त़रह़ होता है और किसी की दुआ़ का इन्तिज़ार करता है, जब किसी की दुआ़ पहुंचती है तो उसे बहुत ख़ुशी होती है बल्कि येह उस के लिये दुन्या व मा फ़ीहा से बेहतर होती है, ह़दीस में है : जब कोई शख़्स मय्यित को ईसाले सवाब करता है तो जिब्रईले अमीन उसे नूरानी त़बाक़ (बड़ी थाली) में रख कर क़ब्र के किनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : ऐ क़ब्र वाले ! येह तोह़फ़ा तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर । येह सुन कर वोह ख़ुश होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं । (معجم اوسط، 5/37، حدیث:6504)

अल्लाह पाक हमें मय्यित के हुक़ूक़ व आदाब का ख़याल रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आओ बच्चो ! ह़दीसे रसूल सुनते हैं

क़ुरआन की ज़ीनत

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : زَيِّنُوا الْقُرْاٰنَ بِاَصْوَاتِكُمْ यानी क़ुरआने पाक को अपनी आवाज़ों से मुज़य्यन करो। (ابن ماجہ، 2/131، حدیث:1342)

यानी ख़ुश इल्ह़ानी (अच्छी आवाज़) और बेहतरीन लहजे ग़मगीन आवाज़ से तिलावत करो और हर ह़र्फ़ को उस के मख़रज से सह़ीह़ अदा करो मगर गा कर (यानी गाने वग़ैरा के अन्दाज़ में) तिलावत करना जिस से मद शद में फ़र्क़ आ जाए (येह) ह़राम है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/270)

प्यारे बच्चो ! क़ुरआने करीम अल्लाह पाक का कलाम है जो हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा, क़ुरआने पाक में लोगों के लिये हिदायत है, इस का एक ह़र्फ़ पढ़ने पर दस नेकियां मिलती हैं और अल्लाह व रसूल की रिज़ा ह़ासिल होती है।

जिस किताब की इतनी अहमिय्यत व फ़ज़ीलत है उसे अच्छे से अच्छे अन्दाज़ में पढ़ना चाहिये और उस के लिये कोशिश भी करते रहना चाहिये।

अगर आप दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ और अच्छी आवाज़ के साथ क़ुरआने करीम पढ़ना चाहते हैं तो अपने क़रीबी मद्रसतुल मदीना में दाख़िला लीजिये और अच्छे अन्दाज़ में क़ुरआन पढ़ना सीखिये और हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान पर अ़मल करते हुए ख़ुश इल्ह़ानी (यानी अच्छे लहजे) से तिलावते क़ुरआने करीम करने की कोशिश कीजिये।

अल्लाह पाक हमें क़ुरआने करीम को अच्छे अन्दाज़ में पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हुरूफ़ मिलाइये !

ह़ज़रते इमाम जाफ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जो कोई शाबानुल मुअ़ज़्ज़म में रोज़ाना सात सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, अल्लाह करीम कुछ फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देगा जो इस दुरूदे पाक को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचाएंगे, उस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक ख़ुश होगी फिर अल्लाह पाक उन फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि इस दुरूद पढ़ने वाले के लिये क़ियामत तक दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहो। (القول البدیع، ص395)

प्यारे बच्चो ! शाबान इस्लामी साल का आठवां महीना है। सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : शाबान का महीना आता तो मुसलमान क़ुरआने पाक की तिलावत में मश्ग़ूल हो जाते, अपने मालों की ज़कात अदा कर देते ताकि कमज़ोरों और मिस्कीनों को भी रमज़ान के रोज़ों की त़ाक़त मिले।(ماذا فی شعبان، ص44) हमारे बुज़ुर्गाने दीन इस मुबारक महीने को इ़बादत, तिलावत, ज़िक्रो अज़्कार और दुरूदे पाक पढ़ने में गुज़ारते थे। हमें भी चाहिये कि इस महीने को नेकियों और बिल ख़ुसूस दुरूदे पाक पढ़ने में गुज़ारें कि इस महीने को दुरूद का महीना भी कहा गया है।

م	ز	ہ	ے	ت	ش	ر	ف	ر
ب	ا	و	ث	ل	ا	ص	ی	ا
ق	ں	ا	ی	ک	ی	ن	ب	ع
ر	ح	ی	ز	ا	م	ن	ر	ت
و	چ	ق	د	ا	ص	ش	ا	ل
د	ل	س	ت	غ	ف	ع	م	ا
د	د	ی	ع	ف	د	ب	ح	و
ع	ل	ی	ر	ب	ن	ا	ر	ت
ا	د	و	ر	د	م	ن	ع	ج

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़े "सादिक़" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं : 1 شعبان 2 فرشتے 3 درود 4 تلاوت 5 نیکیاں۔

जिस्मे मुबारक की ख़ुश्बूएं

आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक क़ाबिले ह़ैरत मोजिज़ा येह था कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक से ख़ुश्बू आया करती थी, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मसामों से निकलने वाला मुबारक पसीना ख़ुश्बूदार हुवा करता था बल्कि मुबारक पसीने की ख़ुश्बू इतनी जां फ़िज़ा हुवा करती थी कि लोग उसे बत़ौरे इ़त्र इस्तिमाल करने की जुस्तजू रखा करते।

बेहतरीन ख़ुश्बू

ह़ज़रते उम्मे सुलैम सह़ाबिय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी है कि दोपहर के वक़्त नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे घर तशरीफ़ लाते और क़ैलूला (यानी दोपहर को आराम) फ़रमाते, मैं सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये बिस्तर बिछा देती नीज़ रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसीना ज़ियादा आता था तो मैं पसीना मुबारक जम्अ़ करती रहती, एक दिन नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उम्मे सुलैम ! येह क्या कर रही हो ? अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इसे मैं अपनी ख़ुश्बू बनाऊंगी। एक रिवायत में है कि हम इस पसीनए मुबारक से बच्चों के लिये बरकत ह़ासिल करेंगे, येह पसीनए मुबारक हर ख़ुश्बू से बेहतर ख़ुश्बू है। येह सुन कर फ़रमाया : तू ने दुरुस्त कहा है।(1)

जिस्मे अक़्दस की इ़त्र बेज़ी

जहां तक जिस्मे मुबारक से ख़ुश्बू की लपटें आने का तअ़ल्लुक़ है तो इस बारे में ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि एक दिन मैं ने फ़ज्र की नमाज़ रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ पढ़ी, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने दरे दौलत (घर) जाने के लिये निकले तो मैं भी आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकल खड़ा हुवा तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने कुछ बच्चे आ गए, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन में से हर एक के रुख़्सारों पर (शफ़्क़त से) मुबारक हाथ फेरा और मेरे रुख़्सारों पर भी अपना मुबारक हाथ फेरा, मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों की ऐसी ठन्डक और महक मह़सूस की गोया आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इ़त्र फ़रोश के सन्दूक़ से हाथ निकाला हो।(2)

जिस्मे अक़्दस की ख़ुश्बू मुतलाशियों की राहनुमा

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ मज़ीद फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस राह से गुज़रते उस राह पर चलने वाले को हुज़ूरे अकरम के पसीनए ख़ुश्बूदार की वज्ह से मालूम हो जाता था कि यक़ीनन यहां से हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा है।(3)

अ़म्बर ज़मीं अ़बीर हवा मुश्क तर ग़ुबार
अदना सी येह शनाख़्त तेरी राह गुज़र की है

मोजिज़े पर मुश्तमिल इन रिवायात से चन्द बातें सीखने को मिलती हैं।

❁ जब हमारे बड़े और बुज़ुर्ग आएं तो उन के आराम वग़ैरा का एहतिमाम करना चाहिये।

❁ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात से बरकत पाने की निय्यत करना सह़ाबा व सह़ाबिय्यात का त़रीक़ा है।

❁ बरकत ह़ासिल करने के लिये तबर्रुकात के ह़ुसूल की जुस्तजू व कोशिश जाइज़ है और येह करनी भी चाहिये।

❁ बुज़ुर्गों की सीरत और आ़दातो अत़वार पर ग़ौरो फ़िक्र करना, उन्हें याद रखना, उन से सबक़ ह़ासिल करना या मुफ़ीद पहलू अख़्ज़ करना अच्छी बात है।

❁ अगर हमें अल्लाह वालों की शफ़्क़तों से ह़िस्सा मिले तो हमें वोह शफ़्क़त याद रखनी चाहिये, उसे अपने लिये सआ़दत समझना चाहिये नीज़ अच्छी निय्यत से दूसरों के सामने बयान करने में भी ह़रज नहीं।

(1)مسلم، ص978، حدیث:6056، 6057 (2)مسلم، ص978، حدیث:6052
(3)دارمی، 1/45، حدیث:66۔

क्लास रूम

माहे कुरआन

प्यारे बच्चो ! चन्द रोज़ में हमारे पास एक बहुत ही मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान तशरीफ़ लाने वाले हैं तो हम ने अभी से उन के इस्तिक़्बाल की तय्यारियां शुरूअ़ कर देनी हैं, मज़ीद आप को इस ह़वाले से हमारे इस्लामिय्यात के उस्तादे मोह़तरम सर बिलाल हिदायात (Guide lines) देंगे, प्रिन्सिपल साह़िब ने येह कहते हुए माईक अपने दाईं त़रफ़ खड़े सर बिलाल को पकड़ा दिया। दर अस्ल आज महीने का आख़िरी जुमुआ़ था और सारे बच्चे दुआ़इय्या एसेम्बली में ही खड़े थे। क़ौमी तराना पढ़ चुके तो प्रिन्सिपल साह़िब ने येह ख़ुश ख़बरी सुना कर सर्दी से ठठुरते बच्चों में ख़ुशी और तवानाई दोनों भर दिये थे।

सर बिलाल ने बिस्मिल्लाह और दुरूद पढ़ कर अपनी बात शुरूअ़ की : प्यारे बच्चो ! हमारे पास एक इन्तिहाई मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान तशरीफ़ लाने वाला है हम उस का सब से अनोखा इस्तिक़्बाल करने जा रहे हैं, वोह इस्तिक़्बाल कैसा होगा और हमें इस के लिये क्या करना होगा आइये ! मैं आप को समझाता हूं : आज से चौदह सौ साल पहले हमारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में भी वोह मेहमान तशरीफ़ लाने वाला था चुनान्चे उस के आने से पहले ही हमारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने प्यारे सह़ाबा को उस के ऐसे अ़ज़ीमुश्शान इस्तिक़्बाल का हुक्म दिया था जैसा इस्तिक़्बाल किसी ने किसी का न किया होगा, हमारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ़ज़मत और बरकत वाला महीना तशरीफ़ ला रहा है, जिस में एक रात ऐसी भी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है, उस महीने के रोज़े अल्लाह पाक ने फ़र्ज़ किये और उस की रात में क़ियाम नफ़्ल है, जो उस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे किसी और महीने में फ़र्ज़ अदा किया और उस में जिस ने फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये।

सर : इस का क्या मत़लब है ? नफ़्ल और फ़र्ज़ वाली बात पर मुआ़विया ने हाथ खड़ा कर के पूछा।

सर बिलाल : यानी इस महीने में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और एक फ़र्ज़ अदा करने का सवाब सत्तर फ़र्ज़ अदा करने के सवाब के बराबर मिलता है। फिर हमारे नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : येह महीना सब्र का है और सब्र का सवाब जन्नत है और येह महीना ग़मख़्वारी और भलाई का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ाया जाता है। जो इस में रोज़ादार को इफ़्त़ार कराए उस के गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है और उस की गर्दन आग यानी जहन्नम से आज़ाद कर दी जाएगी और इफ़्त़ार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा।

(देखिये फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 27)

सर इस का मत़लब येह हुवा कि हमें रोज़ा रखना ज़रूरी नहीं है किसी की इफ़्त़ार दावत कर के भी हम रोज़े से बच सकते हैं। नहुम क्लास के सुफ़्यान रज़ा ने पूछा।

सभी असातिज़ा मुस्कुराने लगे, सर बिलाल बोले : बच्चो ! रोज़े का सवाब अलग चीज़ है और रोज़ा अलग चीज़, रोज़ा हम पर फ़र्ज़ है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ रखने से ही अदा होगा। मेरे ख़याल में बच्चो अब तक तो आप को पता चल ही चुका होगा कि कौन सा मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान हमारे पास तशरीफ़ ला रहा है ? सर बिलाल ने सुफ़्यान के सुवाल का जवाब देने के

बाद अपनी बात दोबारा शुरूअ् करते हुए पूछा तो सभी बच्चों ने सर हिलाते हुए ऊंची आवाज़ से "जी" के साथ जवाब दिया।

सर बिलाल : जी जी बच्चो ! वोह मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान माहे रमज़ान ही है जिस के इस्तिक़्बाल के लिये आज से चौदह सौ साल पहले हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबा को तय्यार भी किया था लेकिन वोह इस्तिक़्बाल था, इबादात के लिये तय्यार होना और, बच्चो ! रमज़ान जैसा मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान जो हमारे पास पूरे साल के बाद वोह भी सिर्फ़ उन्तीस या तीस दिन के लिये आता है उस का तो ऐसा ही इस्तिक़्बाल बनता है कि हम उस माह में सारे रोज़े रखने, तरावीह़ पढ़ने, ज़ियादा से ज़ियादा तिलावते क़ुरआने पाक करने, ग़रीबों और ज़रूरत मन्दों की मदद करने, दोस्तों और रिश्तेदारों में इफ़्तार की दावत के ज़रीए़ ख़ुशियां बांटने का पक्का इरादा बनाएं, आप को पता है रमज़ानुल मुबारक को माहे क़ुरआन भी कहा जाता है क्यूंकि उसी में अल्लाह पाक ने क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया था, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

तुझ पे सदक़े जाऊं रमज़ां ! तू अ़ज़ीमुश्शान है
तुझ में नाज़िल ह़क़ तआ़ला ने किया क़ुरआन है

(वसाइले बख़्शिश, स. 705)

तो सब से अहम मक़्सद (Goal) जो हम ने इस रमज़ान में बनाना है वोह येह कि कम अज़ कम एक बार तो मुकम्मल क़ुरआने मजीद लाज़िमी पढ़ना है लेकिन एह़तियात़ के साथ ज़ियादा पढ़ने के चक्कर में ग़लत़ नहीं पढ़ना कहीं ऐसा न हो कि बजाए सवाब के गुनाह कमा बैठें लिहाज़ा जिन्हें क़ुरआन अच्छे से पढ़ना आता है वोह तो मुकम्मल पढ़ने का इरादा बनाएं और जिन्हें सह़ीह़ नहीं आता वोह येह मक़्सद बना लें कि इस रमज़ान में लाज़िमी किसी अच्छे क़ारी साह़िब से क़ुरआने मजीद पढ़ना सीखूंगा यूं रमज़ान का अनोखा इस्तिक़्बाल भी होगा और वोह हम से ख़ुश हो कर भी जाएगा।

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع،3/285،حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुह़म्मद	सिराज	सूरज	रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुह़म्मद	अ़ज़ीम	बुज़ुर्गी और अ़ज़्मत वाला	रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुह़म्मद	ज़क्वान	ज़हीन	सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का बा बरकत नाम

बच्चियों के 3 नाम

ह़फ़्सा	ख़ूबसूरत	उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का बा बरकत नाम
उम्मे कुल्सूम	पुर गोश्त चेहरे वाली की मां	रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी शहज़ादी का बा बरकत नाम
सलमा	नजात पाने वाली	सह़ाबिय्या رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

मां बाप के नाम

बच्चों में तख़्लीक़ी सलाहिय्यत पैदा करने के त़रीक़े

औलाद इन्सान का बेहतरीन सरमाया है। येह उस की उम्मीदों और ख़्वाहिशों का सब से बड़ा मर्कज़ भी है। हम में से कौन है जो अपनी औलाद के बुरे मुस्तक़्बिल का तसव्वुर भी कर सके। लेकिन औलाद का अच्छा मुस्तक़्बिल सिर्फ़ ख़्वाहिशों और तमन्नाओं के सहारे वुजूद पज़ीर नहीं हो सकता। इस के लिये एक वाज़ेह़ लाइह़ा अ़मल की ज़रूरत है। उन नन्हे बच्चों को बा सलाहिय्यत बनाने और तख़्लीक़ी ज़ेहन फ़राहम करने के लिये हम आप से कुछ Tips शेयर करेंगे जो आप के लिये तरबिय्यते औलाद और उन्हें Creative mind बनाने में मददगार साबित होंगे।

बच्चों को मटेरियल फ़राहम करें
Provide Materials to children

अपने बच्चों को ऐसा मटेरियल फ़राहम करें। जैसे ब्लॉक्स, इसी त़रह़ ऐसे खिलौने जिन्हें तोड़ जोड़ कर बच्चे कोई तख़्लीक़ी काम कर सकें। उन्हें नक़्शे (Maps) ला कर दें। मुख़्तलिफ़ ईमेजिज़ को जोड़ने के लिये टुकड़ों में मटेरियल ला कर दें जिन्हें वोह जोड़ कर एक मुकम्मल पिक्चर बना सकें ऐसे ही दीगर काम बच्चों की तख़्लीक़ी सलाहिय्यत को परवान चढ़ा सकते हैं।

तख़य्युलाती खेल की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करें
Encourage Imaginative Play

बच्चों के लिये तख़य्युलाती खेल में मश्ग़ूल होने के मवाक़ेअ़ पैदा करें। जैसे मुक़द्दस मक़ामात, अहम तारीख़ी मक़ामात, अहम तारीख़ी चीज़ों के मॉडल बनाने के ह़वाले से खेल ही खेल में जैसे बेटियों की दिलचस्पी कपड़ों की सिलाई बरतनों में, जब कि बेटों की तीर बनाना, बिल्डिंग बनाना, जहाज़ बनाना वग़ैरा। तो उन्हें ऐसे खेल खेलने के मवाक़ेअ़ फ़राहम करें।

मुख़्तलिफ़ सोच की ह़िमायत करें
Support Divergent Thinking

बच्चों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करें कि वोह मसाइल के मुतअ़द्दद ह़ल पेश करें और मुख़्तलिफ़ नुक़्त़ए नज़र को तलाश करें। सिर्फ़ "**दुरुस्त**" जवाब तलाश करने पर तवज्जोह मरकूज़ करने से गुरेज़ करें। बल्कि उन्हें सोचने के

खुले मवाक़ेअ़ फ़राहम करें। वरना वोह तख़्लीक़ी सोच से महरूमी वाली सोच में पड़ जाएंगे।

उन्हें आर्ट से रू शनास करवाएं
Expose Them to the Arts

बच्चों को अ़जाइब घरों, आर्ट गेलरियों और लेब्ज़ वग़ैरा में ले जाएं। इस से उन के नुक़्तए नज़र में वुस्अ़त आएगी।

खेल के लिये वक़्त फ़राहम करें
Allocate Time for Play

बच्चों को खेल के लिये वक़्त दें जहां वोह अपनी दिलचस्पियां ज़ाहिर कर सकें इस से उन्हें आज़ादी और तख़्लीक़ी सलाहिय्यतों को फ़रोग़ देने में मदद मिलती है। जहां वोह अपना पोशीदा पोटेंशल भरपूर अन्दाज़ में मनवा सकते हैं।

खुले सुवालात पूछें
Ask Open-Ended Questions

हां या ना में सुवाल पूछने के बजाए, खुले सुवालात पूछें जो तन्क़ीदी सोच और तख़्लीक़ी सलाहिय्यतों की हौसला अफ़्ज़ाई करते हैं। मिसाल के तौर पर, "आप के ख़याल में क्या होगा अगर...?" या "आप इस मस्अले को कैसे हल करेंगे ?" इस से बच्चे में हमा जिहत सोचने की सलाहिय्यत पैदा होगी।

तजरिबा करने की हौसला अफ़्ज़ाई करें
Encourage Experimentation

बच्चों को ऐसे मवाक़ेअ़ फ़राहम करें जहां वोह रिस्क लेना और रिस्क को हेन्डल करना सीख सकें। उन के अन्दर ख़ौफ़ डर ख़त्म हो। नई चीज़ों को आज़्माने में आसानी महसूस करें। उन्हें ना कामी के ख़ौफ़ के बिग़ैर मुख़्तलिफ़ नज़रिय्यात और त़रीक़ों के साथ तजरिबा करने की तरग़ीब दें।

कहानियां पढ़ें और सुनाएं
Read and Tell Stories

एक साथ किताबें पढ़ें और बच्चों को अपनी कहानियां ख़ुद बनाने की तरग़ीब दें। इस से उन की तख़य्युल और कहानी सुनाने की महारत को फ़रोग़ देने में मदद मिलती है।

तख़्लीक़ी इज़्हार के मवाक़ेअ़ फ़राहम करें
Provide Opportunities for Creative Expression

बच्चों को तिलावत, नात, तक़रीर, तह़रीर जैसे मवाक़ेअ़ फ़राहम करें। जहां वोह पूरी एनर्जी के साथ अपने फ़न और अपनी क़ाबिलिय्यत का इज़्हार कर सकें। हर बात पर रोक टोक और हर मरतबा जीत जाने का वहम उन के दिमाग़ में मत पालें। बल्कि उन्हें कुछ कहने और करने के मवाक़ेअ़ फ़राहम करें।

तख़्लीक़ी सलाहिय्यतों का जश्न मनाएं
Celebrate Creativity Skills

बच्चों की तख़्लीक़ी कोशिशों और कामयाबियों को पहचानें और उन के साथ मिल कर ख़ुशी का इज़्हार करें। इस से उन के एतिमाद को बढ़ाने में मदद मिलती है और वोह अपनी तख़्लीक़ी दिलचस्पियों की तलाश जारी रखते हैं।

याद रखें कि हर बच्चा मुन्फ़रिद होता है, इस लिये तख़्लीक़ी सलाहिय्यतों को फलने फूलने के लिये मुख़्तलिफ़ क़िस्म के तजरिबात और मवाक़ेअ़ फ़राहम करना ज़रूरी है। उम्मीद है कि येह मज़्मून आप के लिये एक अच्छी मालूमात का ज़रीआ़ साबित हुवा होगा।

बेटियों की तरबिय्यत

बेटियों के लिये तालीमी इदारे का इन्तिख़ाब

तालीमी इदारा (Educational institution) एक ऐसी जगह है जहां मुख़्तलिफ़ उ़म्र के लोग तालीम ह़ासिल करते हैं । तालीमी इदारों का मक़्सद इन्सानों के किरदार को बेहतर बनाना, उन को अख़्लाक़ी इक़्दार का पाबन्द बनाना और शर्मो ह़या के रास्ते पर चलाना है । तालीमी इदारे जो इन्सान को इ़ल्म सिखाते हैं, उन में दीनी तालीम सिखाने वाले इदारों का मक़ाम इस एतिबार से बुलन्द है कि वोह ऐसे इ़ल्म की तरसील में अपना किरदार अदा करते हैं जब कि दुन्यावी उ़लूम को समझना इस एतिबार से लाज़िम व मुफ़ीद है कि उन के ज़रीए इन्सान दुन्यावी उमूर को अह़सन त़रीक़े से सर अन्जाम दे पाता है । दीनी इदारों का काम जहां इ़ल्म के फ़रोग़ में अपना किरदार अदा करना है वहीं इ़ल्म के तक़ाज़ों को पूरा करना और त़ालिबे इ़ल्मों की तरबिय्यत करना भी उन इदारों की बुन्यादी ज़िम्मेदारी है । अगर एक दीनी इदारे में नाज़िरा कुरआन तो पढ़ाया जाए मगर त़लबा को अ़मल, ख़ुलूस और रियाकारी से बच बचा कर ज़िन्दगी गुज़ारने का रास्ता न दिखलाया जाए तो समझ लीजिये ऐसा इदारा ह़क़ीक़त में अपनी ज़िम्मेदारी को अदा नहीं कर रहा है । इसी त़रह़ वोह तालीमी इदारे जो इन्सान को दुन्यावी एतिबार से इ़ल्म देते हैं और जहां मुआ़शरती और उ़मरानी उ़लूम के साथ साथ साइन्सी उ़लूम के ह़वाले से त़लबा तक इ़ल्म की तरसील की जाती है उन इदारों पर भी येह ज़िम्मेदारी आ़इद होती है कि वोह कुरआनो सुन्नत की उन बुन्यादी तालीमात से अपने त़ालिबे इ़ल्मों को ज़रूर आगाह करें जो एक मुसलमान के लिये ज़रूरी व लाज़िमी हैं । अगर कोई इन्सान दीनी व दुन्यावी तालीम से आरास्ता व पैरास्ता तो हो लेकिन वोह इ़ल्म के तक़ाज़ों को पूरा करने के बजाए ग़लत़ रास्ते पे चल निकले और ग़ुरूर, तकब्बुर, रियाकारी और ख़ुद पसन्दी का शिकार हो जाए तो ऐसे तालीमी इदारे को किसी भी त़ौर पर मिसाली तालीमी इदारा क़रार नहीं दिया जा सकता । मिसाली तालीमी इदारे की ज़िम्मेदारी जहां इन्सान को अच्छे अख़्लाक़ से आरास्ता व पैरास्ता करना है वहीं शर्मो ह़या की दावत देना और इस ह़वाले से उस की राहनुमाई करना भी उस की ज़िम्मेदारी है । जब हम शर्मो ह़या के ह़वाले से किताब व सुन्नत की तालीमात का मुत़ालआ़ करते हैं तो येह बात समझ में आती है कि अल्लाह पाक को ह़या का वस्फ़ बहुत ज़ियादा पसन्द है । येह समझना कुछ मुश्किल नहीं कि ह़या की किस क़दर अहमिय्यत है लेकिन बद नसीबी से हमारे मुआ़शरे में इस वक़्त तालीमी इदारों में तालीम तो किसी ह़द तक दी जा रही है मगर तरबिय्यत के मुआ़मले में बहुत ज़ियादा कोताहियों का मुज़ाहरा किया जा रहा है । इस त़रफ़ तवज्जोह देना ज़रूरी है । तालीमी इदारों में ग़ैर निसाबी सर गर्मियों के नाम पर ग़ैर अख़्लाक़ी सर गर्मियां होने लगी हैं कहीं मूसीक़ी के नाम पर, कहीं फ़ोह़्श डान्स पार्टीज़ ने त़लबा व असातिज़ा का फ़र्क़ मिटा कर रख दिया है । कहीं हर माह मूसीक़ी के नाम पर लाखों रुपिये ख़र्च किये जाते हैं और टेलेन्ट एक्स्पो के नाम पर डान्स किये जाते हैं, हम इस को तरक़्क़ी का नाम दे देते हैं, एक सुवाल यहां येह पैदा होता है कि क्या ऐसे Concert मुन्अ़क़िद करने से किसी माहिरे मईशत ने येह कह दिया कि इस से आप का मालिक तरक़्क़ी करेगा ?

एक त़ालिबे इ़ल्म के तालीमी दौर में अच्छे और बेहतरीन तालीमी इदारे का इन्तिख़ाब निहायत अहमिय्यत का ह़ामिल है । और जब बात बेटी की तालीमी इदारे के इन्तिख़ाब की हो तो वालिदैन को और ज़ियादा ह़स्सास होना पड़ता है क्यूंकि एक बेटी आने वाली नस्लों की बेहतरीन तरबिय्यत भी ऐसे ही करेगी जैसी ख़ुद ह़ासिल करेगी । बचपन एक सादा तख़्ती की मानिन्द होता है । उस पर जो कुछ लिख दिया जाए वोह नक़्श हो जाता है । अगर उ़म्र के इब्तिदाई ह़िस्से में बेटी की तरबिय्यत का एहतिमाम किया जाए तो मुस्तक़्बिल में वोह नस्लें संवार सकती है । याद रहे ! हर मुसलमान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत

पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है । इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लालो ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है । नीज़ मसाइले क़ल्ब (बात़िनी मसाइल) और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा, बात़िनी गुनाह और उन का इ़लाज सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है । मोहलिकात यानी हलाकत में डालने वाली चीज़ों के बारे में ज़रूरी मालूमात ह़ासिल करना भी फ़र्ज़ है ताकि उन गुनाहों से बचा जा सके । (तफ़्सील के लिये देखिये फ़तावा रज़विय्या, 23 / 623,624) बद क़िस्मती से मुसलमानों की एक बहुत बड़ी तादाद फ़र्ज़ उ़लूम से ना आश्ना है । जदीद और अ़स्री तालीम के इदारों में दाख़िल हो कर बच्चे और बच्चियां अपनी इस्लामी शनाख़्त खोते जा रहे हैं । क्यूंकि येह आ़म मुशाहदा है कि जदीद और अ़स्री तालीम के इदारों में यूनिफ़ॉर्म के नाम पर ग़ैर मुस्लिमों जैसा लिबास पहनना ज़रूरी समझा जाता है गोया इस यूनिफ़ॉर्म के बिग़ैर जदीद और अ़स्री तालीम का ह़ुसूल मुम्किन ही नहीं । इसी त़रह़ इस्लामी रिवायात व तालीमात के बर अ़क्स اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ के बजाए हेलो, हाय, Good Morning, good afternoon, वग़ैरा कहना तालीम याफ़्ता होने की अ़लामत समझा जाता है । जदीद और अ़स्री उ़लूमो फ़ुनून के मारूफ़ इदारों में वर्दी (Uniform) और तहज़ीब के नाम पर जो बे ह़याई व बे प र्दगी और उ़र्यानी व फ़ह़्ह़ाशी नज़र आती है इस में जदीद और अ़स्री उ़लूमो फ़ुनून का कोई क़ुसूर नहीं बल्कि येह तो एक ह़माक़त है कि मुसलमान ग़ैरों की नक़्ल करने में इस क़दर आगे बढ़ चुके हैं कि सुन्नतों को भुला कर न सिर्फ़ अग़्यार के फ़ेशन अपनाने में फ़ख़्र मह़सूस करते हैं बल्कि ग़ैर मुस्लिमों जैसे लिबास में मल्बूस होना भी उन के नज़्दीक ऐ़न सआ़दत बन चुका है ह़ालांकि जदीद और अ़स्री उ़लूमो फ़ुनून तो सुन्नतों भरा इस्लामी लिबास पहन कर भी ह़ासिल किये जा सकते हैं, जैसा कि हमारे मुसलमान दानिश्वरों और साइन्स दानों ने इस्लामी तहज़ीब व तमद्दुन के दाइरे में रह कर मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून में ऐसे कारहाए नुमायां सर अन्जाम दिये जो आज भी जदीद और अ़स्री उ़लूमो फ़ुनून की बुन्याद समझे जाते हैं । फ़ी ज़माना दुन्यवी तालीम न तो मायूब है और न ही बुरी बल्कि इस के बिग़ैर मुआ़शरा यक़ीनन बहुत सी मुश्किलात का शिकार हो जाएगा, इख़्तिलाफ़ त़रीक़ए कार पर होता है कि इस्लामी त़रीक़ए कार छोड़ कर ग़ैरों के त़रीक़े अपना कर उन को लाज़िमी जुज़ क़रार दिया जाए और इस से जो फ़ितना पैदा होता है वोह मुआ़शरे में फिर तालीम आ़म नहीं करता बल्कि बे ह़याई आ़म करता है । इस्लामी क़वानीन नाफ़िज़ कर के भी अ़स्री उ़लूम सीखे सिखाए जा सकते हैं इस के लिये ग़ैरों की नक़्क़ाली करना लाज़िम नहीं । इसी लिये बेटी की तालीमो तरबिय्यत के लिये तालीमी इदारे का इन्तिख़ाब करते वक़्त वालिदैन को इन तमाम उमूर पर ग़ौर करना चाहिये कि उस तालीमी इदारे में तरक़्क़ी और जिद्दत के नाम पर कहीं फ़ह़्ह़ाशी व उ़र्यानी तो आ़म नहीं हो रही ? तालीमी इदारे की रीपोटेशन के नाम पर बे ह़याई को तो फ़रोग़ नहीं दिया जा रहा ? यूनीफ़ॉर्म के नाम पर बे पर्दगी को तो प्रमोट नहीं किया जा रहा ? येह हमारी ज़िम्मेदारी बनती है ।

अफ़्सोस ! लोग फ़ी ज़माना दीनी मुआ़मलात में बहुत ज़ियादा सुस्ती का शिकार हैं । इस सुस्ती को चुस्ती से बदलने के लिये दावते इस्लामी ख़ूब सरगर्मे अ़मल है । ज़रूरत इस अम्र की थी कि कोई ऐसा तालीमी इदारा हो जो दीनी व दुन्यावी तालीम का ह़सीन इम्तिज़ाज फ़राहम करे जिस में पढ़ने वाला न सिर्फ़ बा वक़ार मुसलमान बने बल्कि पेशावराना तालीम ह़ासिल कर के ख़ुद कफ़ील हो कर मुआ़शरे में नुमायां मक़ाम ह़ासिल कर सके । अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ाने नज़र से एक निहायत अहम शोबे का क़ियाम अ़मल में आया जिस का नाम दारुल मदीना है । दारुल मदीना इस्लामिक स्कूल सिस्टम का क़ियाम नो निहालाने उम्मत को बुन्यादी दीनी तालीम के साथ बेहतरीन अ़स्री तालीम से रू शनास करने के लिये अ़मल में लाया गया है । येह अपनी नौइ़य्यत का वाह़िद स्कूल है जिस में Pre-Nursery से बच्चा उ़लमा की सोह़बत में रहेगा । दारुल मदीना के क़ियाम का बुन्यादी मक़्सद उम्मते मुस्त़फ़ा की नौ ख़ेज़ नस्लों को सुन्नतों के सांचे में ढालते हुए दीनी व दुन्यवी तालीम से आरास्ता करना है ।

दारुल मदीना का निसाब ❁ जदीद तालीम और शरई तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का तस्दीक़ शुदा तालीमी निसाब ❁ बुन्यादी फ़र्ज़ उ़लूम का मुकम्मल कोर्स ❁ मज़हबी व अख़्लाक़ी तरबिय्यत ❁ अ़रबी, उर्दू और अंग्रेज़ी ज़बान में महारत के कोर्सिज़ ❁ तीन साला दर्से निज़ामी ❁ ह़िफ़्ज़े क़ुरआन ❁ इस्लामी फ़ाइनेंन्स ❁ मुआ़शरती उ़लूम ❁ कम्प्यूटर स्टडीज़ ❁ इन्फ़ोर्मेशन सिक्यूरिटी ❁ तारीख़ ❁ जनरल साइन्स ❁ त़बइ़य्यात ❁ ह़यातियात ❁ केमेस्टरी ❁ जिस्मानी नश्वो नुमा ❁ माह़ौलियाती तालीम ❁ ह़िसाब ❁ आर्टस ❁ होम इकोनोमिक्स । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिश है कि दारुल मदीना के असातिज़ा बा अ़मल, मदनी उ़लमा हों । اَلْحَمْدُ لِلّٰه दारुल मदीना में बा सलाह़िय्यत मदनी उ़लमा के साथ साथ मुस्तनद तदरीसी अ़मला मदनी उ़लमा के ज़ेरे साया काम कर रहा है ।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 मुर्दा बीवी के हाथ को बोसा देना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या शौहर अपनी मुर्दा बीवी के हाथ को बोसा दे सकता है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरइय्या के मुताबिक़ बीवी की वफ़ात से निकाह़ फ़ौरन ख़त्म हो जाता है और शौहर उस के लिये अजनबी हो जाता है जिस की वज्ह से शौहर का बिला ह़ाइल उसे छूना जाइज़ नहीं होता, लिहाज़ा शौहर अपनी मुर्दा बीवी के हाथ वग़ैरा को बिला ह़ाइल बोसा नहीं दे सकता, ना जाइज़ो मम्नूअ़ फ़ेल है, अलबत्ता अपनी मुर्दा बीवी का चेहरा देखना, उसे कन्धा देना, क़ब्र में उतारना वग़ैरा तमाम उमूर जाइज़ हैं, येह जो अ़वाम में मश्हूर है कि शौहर अपनी बीवी के जनाज़े को न कन्धा दे सकता है, न क़ब्र में उतार सकता है, न उस का चेहरा देख सकता है येह सब बातें मह़ज़ ग़लत़ हैं इन की शरीअ़ते मुत़ह्हरा में कोई ह़क़ीक़त नहीं है।

याद रहे कि मज़्कूरा हुक्म शौहर के एतिबार से है, जहां तक बीवी का तअ़ल्लुक़ है तो उस के बारे में हुक्म येह है कि शौहर की वफ़ात के बाद बीवी उसे बिला ह़ाइल छू सकती है, उसे ग़ुस्ल भी दे सकती है, क्यूंकि शौहर की वफ़ात से निकाह़ फ़ौरन ख़त्म नहीं होता, बल्कि जब तक बीवी इ़द्दत में हो मिन वज्हिन निकाह़ बाक़ी रहता है, अलबत्ता अगर शौहर ने मरने से पहले त़लाक़े बाइन दे दी थी, तो अगर्चे औ़रत इ़द्दत में हो ग़ुस्ल नहीं दे सकती और न ही छू सकती है कि त़लाक़े बाइन से निकाह़ फ़ौरन ख़त्म हो जाता है।

وَاللہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 ह़ामिला औ़रत के पिस्तान से निकलने वाले पानी का हुक्म ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि एक ह़ामिला औ़रत के ह़म्ल का आख़िरी महीना है, उस औ़रत के पिस्तान से कभी कभार बिग़ैर किसी बीमारी और तक्लीफ़ के सफ़ेद पानी आता है तो क्या येह पानी नापाक होगा ? कपड़ों पर लग जाए तो क्या हुक्म है और क्या इस सूरत में वुज़ू भी टूट जाएगा ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

पिस्तान से निकलने वाला वोह पानी वुज़ू तोड़ता है जो बीमारी या ज़ख़्म की वज्ह से निकले और बह कर ऐसी जगह पहुंच जाए जिस को वुज़ू या ग़ुस्ल में धोना फ़र्ज़ है, जब कि पूछी गई सूरत में पिस्तान से निकलने वाला सफ़ेद पानी किसी बीमारी या ज़ख़्म की वज्ह से नहीं है, लिहाज़ा उस के निकलने से वुज़ू नहीं टूटेगा और न ही येह पानी नापाक कहलाएगा।

وَاللہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म के चन्द अहम वाक़िआ़त

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़िआ़	मज़ीद मालूमात के लिये पढ़िये
पहली शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 204 हि.	यौमे विसाल शाफ़ेइयों के इमाम हज़रते मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि. और **"फ़ैज़ाने इमाम शाफ़ेई"**
पहली शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1382 हि.	यौमे विसाल मुहद्दिसे आज़म हज़रते मुहम्मद सरदार अहमद चिश्ती رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि.
2 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 150 हि.	यौमे उ़र्स हज़रते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 ता 1443 हि. और **"अश्कों की बरसात"**
3 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 447 हि.	यौमे विसाल हज़रते अबुल फ़र्ह मुहम्मद यूसुफ़ तरतूसी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि.
5 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 4 हि.	यौमे विलादत नवासए रसूल हज़रते इमामे हुसैन رضی اللہ عنہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल ह़राम 1439 और **"इमामे हुसैन की करामात"**
16 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1358 हि.	यौमे विसाल हज़रते पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह नक़्शबन्दी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि.
18 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1428 हि.	यौमे विसाल शरफ़े मिल्लत हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल हकीम शरफ़ क़ादिरी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1439 हि.
21 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 673 हि.	यौमे विसाल हज़रते उ़स्मान मरवन्दी अल मारूफ़ लाल शहबाज़ क़लन्दर رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि. और **"फ़ैज़ाने उ़स्मान मरवन्दी"**
26 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1071 हि.	यौमे विसाल हज़रते मीर सय्यिद मुहम्मद कालपवी तिरमिज़ी क़ादिरी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि.
29 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1423 हि.	यौमे विसाल मर्हूम निगराने शूरा ह़ाजी मुहम्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी رحمۃ اللہ علیہ	**अ़त्तार का प्यारा** (मअ़ 80 हिकायात)
शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 9 हि.	विसाले मुबारका रसूले करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم की प्यारी शहज़ादी हज़रते उम्मे कुल्सूम رضی اللہ عنہا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि.
शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 45 हि.	विसाले मुबारका उम्मुल मोमिनीन हज़रते बीबी हफ़्सा رضی اللہ عنہا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि. और **"फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन"**

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ خاتمِ النّبیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म की मुनासबत से क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुबो रसाइल

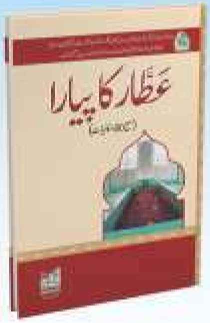

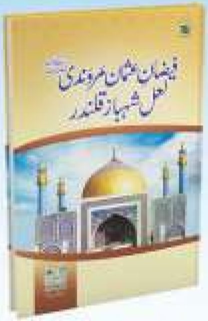

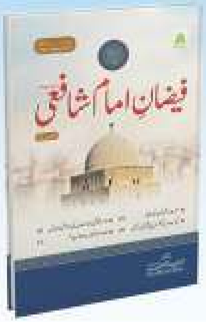

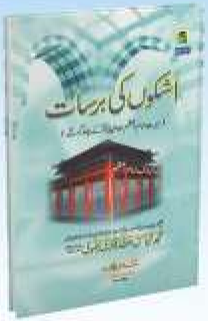

اللّٰہ

کمال کا نکتہ

گناہ کے بعد پھر گناہ کرنا یہ پہلے گناہ کی سزا ہے
اور نیکی کے بعد پھر نیکی کی توفیق یہ
پہلی نیکی کا اجر ہوتا ہے۔
(صید الخاطر مترجم ص ۱۰۴)

صلّوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

कमाल का नुक्ता

गुनाह के बाद फिर गुनाह करना येह पहले गुनाह की सज़ा है और नेकी के बाद फिर नेकी की तौफ़ीक़ येह पहली नेकी का अज्र होता है. (صید الخاطر (مترجم)، ص 104)

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे हासिल करने के लिये इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)
PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.
PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.